सरस्वती सिरीज़

परलोकवाद

दश आना

सरस्वती-सिरीज़ नं० ५५

परलोकवाद

T. Paralok Vad

वी० डी० ऋषि

A. V. D. Rishi

प्रकाशक

इंडियन प्रेस लिमिटेड

प्रयाग

सरस्वती-सिरीज़

स्थायी परामर्शदाता—डा० भगवानदास, पण्डित अमरनाथ झा, भाई परमानंद, डा० प्राणनाथ विद्यालङ्कार, श्री सत्यदेव विद्यालङ्कार, पं० द्वारिकाप्रसाद मिश्र, संत निहालसिंह, पं० लक्ष्मणनारायण गर्दे, बाबू संपूर्णानन्द, श्री बाबूराव विष्णुपराड़कर, पण्डित केदारनाथ भट्ट, ब्यौहार राजेन्द्रसिंह, श्री पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, श्री जैनेन्द्र कुमार, बाबू वृन्दावनलाल वर्मा, सेठ गोविन्ददास, पण्डित क्षेत्रेश चटर्जी, डा० ईश्वरीप्रसाद, डा० रमाशंकर त्रिपाठी, डा० परमात्माशरण, डा० बेनीप्रसाद, डा० रामप्रसाद त्रिपाठी, पण्डित रामनारायण मिश्र, श्री संतराम, पण्डित रामचन्द्र शर्मा, श्री महेशप्रसाद मौलवी फ़ाज़िल, श्री रायकृष्णदास, बाबू गोपालराम गहमरी, श्री उपेन्द्रनाथ "अश्क", डा० ताराचंद, श्री चन्द्रगुप्त विद्यालङ्कार, डा० गोरखप्रसाद, डा० सत्यप्रकाश, श्री अनुकूलचन्द्र मुकर्जी, रायसाहब पण्डित श्रीनारायण चतुर्वेदी, रायबहादुर बाबू श्यामसुन्दरदास, पण्डित सुमित्रानन्दन पंत, पं० सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', पं० नन्ददुलारे वाजपेयी, पं० हजारीप्रसाद द्विवेदी, पण्डित मोहनलाल महतो, श्रीमती महादेवी वर्मा, पण्डित अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', डा० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल, डा० धीरेन्द्र वर्मा, बाबू रामचन्द्र टंडन, पण्डित केशवप्रसाद मिश्र, बाबू कालिदास कपूर, इत्यादि, इत्यादि।

विचार-धारा

परलोकवाद

प्रेतलोक के सम्बन्ध में सनसनीपूर्ण सच्ची और अनुभूत बातें।

वी० डी० ऋषि

Printed and Published by K. Mittra at the Indian Press Ltd. Allahabad.

पहला परिच्छेद

परलोक-विद्या का वैज्ञानिक रूप

परलोक-विद्या भारत में नई नहीं है, किन्तु इसका वर्त्तमान रूप ऐसा अस्पष्ट है, कि शिक्षित समुदाय इसे विज्ञान मानने को तैयार नहीं है। इसलिए सबसे पहले हम इसके वैज्ञानिक रूप की चर्चा करेंगे। विज्ञान से हमारा अभिप्राय ऐसे ज्ञान से है, जो प्रयोगों से सिद्ध हो सके। प्रश्न होता है कि क्या परलोक-विज्ञान को हम प्रयोगों से सिद्ध कर सकते हैं? उत्तर में हम कहेंगे—हाँ। परलोक-विज्ञान उस विज्ञान को कहते हैं, जिसके द्वारा हम परलोक का अस्तित्व स्थापित कर परलोकगत आत्माओं से बातचीत कर सकें। इस सम्बन्ध में अभी आधुनिक वैज्ञानिकों में मतभेद है। कुछ वैज्ञानिक परलोक-विज्ञान को विज्ञान की कोटि में स्वीकार नहीं करते। वे जब इसके चमत्कार देखते हैं तो कहते हैं, कि ये गूढ़ विद्या (Occult Science) के कुछ चमत्कार (Phenomena) हैं, जिन्हें हम विज्ञान नहीं मान सकते। किन्तु यूरोप में कुछ ऐसे भी उच्च कोटि के वैज्ञानिक हुए हैं, जिन्होंने इस विद्या की खोज में अपना बहुमूल्य समय लगाकर इसे वैज्ञानिक रूप दिया है। प्रत्येक देश के कुछ चुने हुए वैज्ञानिकों ने इस तत्त्व की खोज की है और अपने सुदीर्घ प्रयास और अनुभवों से उन्होंने यह विघोषित किया है, कि परलोक-विज्ञान कोई काल्पनिक विज्ञान या धोखे-धड़ी की विद्या नहीं है, किन्तु यह एक सत्य विज्ञान है जो प्रयोगों से अनुभूत हुआ है और हो सकता है। इस सम्बन्ध में हम यूरोप के तथा भारत के अनेक विद्वानों के मत

का यथास्थान उल्लेख कर यह बतायेंगे कि इस विद्या ने यूरोप के देशों में कितनी प्रगति की है।

यूरोप के परलोक-विद्या विशारद—सर्वप्रथम हम उन विद्वानों का उल्लेख करेंगे, जिन्होंने इस अज्ञात क्षेत्र में बड़े धैर्यपूर्वक अविरत रूप से खोजकर इसे वैज्ञानिक रूप दिया है। ऐसे विद्वान् यूरोप के प्रायः सभी देशों में तथा अमेरिका में भी हुए हैं। इँगलेण्ड को ही लीजिए, यहाँ अलफ़्रेड रसेल वालेस, सर विलियम क्रुक्स, स्टेनटन मोसेज (एम० ए०, आक्सफ़ोर्ड), डाक्टर हडसन, मायर, गर्ने, सिडविक, सर ओलीवर लाज तथा कितने ही हैं। फ्रान्स में डाक्टर पाल गिब्रीर, एलन कार्डेक, प्रोफ़ेसर चार्ल्स रिचेट, कर्नल डी रोचेस, विक्टोरियन सारडाऊ, थियोफाइल, गोरियर, विक्टर ह्यूगो, कोमिले फ्लेमेरियन इत्यादि। इटली में प्रोफ़ेसर शिया, लम्ब्रोजो, डाक्टर बार्थ और डीफिया सो। जर्मनी की लेपज़िग युनिवर्सिटी के प्रोफ़ेसर वेबर और फ़चनर, बरलिन के डाक्टर साइरेक्स आदि। अमेरिका में सुप्रीम कोर्ट के चीफ़ जस्टिस एडमण्ड, मेटस आदि। रूस में कौंसिलर आफ़ स्टेट मोशियो असकाफ विशेष उल्लेखनीय है। स्पेन के बारसीलोना नगर में परलोक-विद्या का बहुतासा साहित्य प्रकाशित हुआ है। इसी प्रकार स्विस, नार्वे, स्वेडेन, बेलजियम में भी कुछ न कुछ विद्वान् हुए हैं, जिन्होंने इस तत्त्व की खोज की है। इन सब विद्वानों ने पृथक्-पृथक् रूप से प्रयोग कर यह घोषित किया है, कि परलोक का अस्तित्व है और परलोकगत आत्माओं से बातचीत हो सकती है। उन्होंने अपने ये सब अनुभव या तो पुस्तकों में प्रकाशित किये हैं अथवा लेखों द्वारा प्रकट किये हैं।

भारत में इस विद्या का प्रचार सर्वप्रथम 'अमृतबाज़ार पत्रिका' के सम्पादक स्वर्गीय बाबू शिशिरकुमार घोष ने किया था। आप हिन्दू स्प्रिच्युअल मेगज़ीन भी निकालते थे। इसके बाद इस ओर किसी ने ध्यान नहीं दिया। उसके बाद फिर हमें अपनी पत्नी स्वर्गीया 'सुभद्रा' के वियोग से इस विद्या के जानने की इच्छा हुई और गत १९२३ से हम

इसका निरन्तर रूप से प्रचार और प्रयोग कर रहे हैं। हमारे इस कार्य्य में पण्डित केदारनाथ शर्मा, इन्दौर के श्री जी० वी० साठे, वकील, नासिक के श्री क्षीरसागर इञ्जीनियर, श्री० के० एस० डोरा स्वामी, स्वर्गीय सी० वाई० चिन्तामणि, 'आज' के सम्पादक श्री बाबूराव पराड़कर, कटनी की रानी साहिबा श्रीमती गायत्रीदेवी, श्रीमती रामेश्वरी सिन्हा, श्री इन्द्रनारायण जी मेहरोत्रा, पण्डित द्वारकाप्रसाद जी चतुर्वेदी, मद्रास के राव बहादुर नृसिंहम् पन्तलू (भूतपूर्व कलेक्टर), बङ्गलौर के श्री हनुमन्तराव (रिटायर्ड डिपुटी कमिश्नर), कराची के श्री एम० पी० मथुरानी, एल० सी० ई०, श्री गुरुदास सजमानी, लाहोर के श्री लक्ष्मीचन्द वाशिष्ठ मजिस्ट्रेट, पटना के श्री रामचन्द्र पण्डित मैनेजिङ्ग डायरेक्टर विहार बैङ्क, श्री डी० पी० शर्मा आई० सी० एस०, कलकत्ते के श्री जे० ए० राय इत्यादि सज्जनों ने हमें सहयोग प्रदान किया है।

इन विद्वानों ने परलोक विज्ञान में स्वयं अनुभव किये हैं और इस सम्बन्ध में अपने अनुभव लेखों, व्यक्तिगत पत्रों तथा पुस्तकों में प्रकाशित किये हैं। इन लोगों के और प्रयोगों से परलोक का अस्तित्व तो प्रकट हो जाता है, किन्तु परलोक के सम्बन्ध में जनसाधारण में बहुत अधिक ग़लत-समझी है। इसलिए जब तक परलोक-विज्ञान का मूल तत्त्व प्रकट नहीं किया जायेगा तब तक इसका वास्तविक रूप समझ में नहीं आ सकेगा। परलोक के ये तत्त्व किसी धर्मग्रन्थ, अन्धविश्वास, दन्त-कथा तथा हृदय की प्रेरणा से स्वीकार नहीं किये गये हैं। यद्यपि परलोक का आधार प्रायः धर्मों के ग्रन्थों में कुछ न कुछ अवश्य मिलता है, किन्तु आधुनिक परलोक-विज्ञान अनुभव और प्रयोगों के आधार पर स्थापित हुआ है। जिन विद्वानों ने इन तत्त्वों की खोज की है, वे स्वयं पहले परलोक-विद्या पर विश्वास नहीं करते थे। वे आत्मा को भी नहीं मानते थे और यह समझते थे, कि मरने के बाद प्राणी का कोई भी भाग स्थित नहीं रहता। प्राचीन काल में हमारे देश में जिस प्रकार चार्वाक जैसे जड़वादी अपने मत का प्रतिपादन करते थे और कहते थे :—

यावत् जीवेत् सुखं जीवेत् ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत् ॥
भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः ॥

उसी प्रकार आधुनिक जड़वादी वैज्ञानिक भी नास्तिक थे। उनके मन की कल्पना पाश्चात्य परलोक-विज्ञान के आचार्य सर आर्थर कोनन डायल के कथन से हो सकेगी। उन्होंने अपनी पुस्तक New Renclation में लिखा है—"किसी समय मैं इस परलोक-विज्ञान को सबसे अधिक मूर्खता-पूर्ण समझता था। मुझे आश्चर्य होता था, कि कोई भी समझदार आदमी इस बात पर कैसे विश्वास कर लेता है कि मृत व्यक्ति से भी बातचीत हो सकती है।" सर कोनन डायल डाक्टरी के एम० डी० तथा क़ानून के एल-एल० डी० थे। साथ ही बड़े सिद्ध-हस्त लेखक थे। परलोक-विद्या के तत्त्व से विरोध होने पर भी वे चुप होकर नहीं बैठे। उनकी आत्मा इस तत्त्व की खोज में निरन्तर रूप से लगी रही। यही कारण है कि वे परलोक-तत्त्व की असलियत तक पहुँच गये और उनके विचारों में परिवर्तन न हुआ। इसके बाद वे अपनी उसी पुस्तक में लिखते हैं—"परलोक-विद्या के तत्त्व पर मैंने जितना अधिक विचार किया है, उतना अन्य किसी विषय पर नहीं। इतने अनुशीलन के बाद मैं कह सकता हूँ कि परलोक-विज्ञान अब वाद-विवाद का विषय नहीं, किन्तु अब यह इतना अधिक मूल्यवान् प्रमाणित हो गया है कि इसके सामने भौतिक वैज्ञानिक खोजों का मूल्य बहुत कम रह जाता है।" सर कोनन डाइल इस विज्ञान में इतने अधिक अनुरक्त हुए कि उन्होंने अपना शेष जीवन इसी परलोक-विज्ञान की खोज में व्यतीत किया।

इसी भाँति इँगलेंड के एक दूसरे विद्वान् आलफ़्रेड वालेस हैं। आप भी पहले जड़वादी थे। डार्विन के विकासवाद के अनुयायी थे। इसके बाद वे कहते हैं—"मैंने जब परलोक-तत्त्व का अनुसन्धान करना आरम्भ किया तब मैं बिलकुल जड़वादी था, किन्तु अन्त में मुझे प्रत्यक्ष

प्रमाणों के सामने अपना मस्तक झुका देना पड़ा और अब मैं परलोक-तत्त्व को मानने लगा हूँ।"

आपकी भाँति विलायत के प्रसिद्ध वैज्ञानिक सर ओलीवर लाज ने भी परलोक-तत्त्व की खोज बड़े धैर्य-पूर्वक की और इस सम्बन्ध की कोई बीस पुस्तकें लिखीं। आपकी सबसे अधिक प्रसिद्ध पुस्तक 'रेमंड' है। इसमें आपने अपने पुत्र 'रेमण्ड' के उन सन्देशों को लिखा है जो आपने उससे परलोक से प्राप्त किये हैं। रेमण्ड नामक आपका पुत्र गत महायुद्ध में मारा गया। उसी से आपने बातचीत करने के प्रयोग किये और अन्त में आप इस विद्या में सफल हुए। परलोक-तत्त्व के विषय में आपने लिखा है कि "मैं बड़े बलपूर्वक कह सकता हूँ कि मृत्यु के बाद मनुष्य का जीवन सूक्ष्म शरीर में रहता है और हम उससे बातचीत कर सकते हैं।" सर ओलिवर लाज जिस भाँति विज्ञान के आचार्य माने जाते थे, उसी भाँति वे परलोक-विद्या के भी आचार्य माने जाते हैं।

एक दूसरे विद्वान् सर विलियम बेरेट लिखते हैं—"मैं गत ५० वर्षों तक परलोक-विद्या की खोज में लगा रहा और अब मैं इस विद्या का पूर्ण विश्वासी बन गया हूँ। मेरा यह पूर्ण निश्चय है, कि परलोक एक दूसरा संसार है और उसमें रहनेवाली आत्माओं से हम साधनानुसार बातचीत कर सकते हैं।"

हमें यह बड़े दुःख से लिखना पड़ता है, कि परलोक-विद्या के तत्त्व को सिद्ध करने के लिए हमें विदेशी विद्वानों के मत का उल्लेख करना पड़ रहा है। यह इसी लिए कि हमारे देश के वैज्ञानिकों का इस ओर बिल्कुल ध्यान नहीं है। वे इसे उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं। हमने समय-समय पर अपने देश के वैज्ञानिकों से अनुरोध भी किया है। किन्तु अभी तक किसी प्रसिद्ध वैज्ञानिक ने कोई उल्लेखनीय कार्य्य नहीं किया। सन् १९२५ में जब हम पहले पहल अन्तर्राष्ट्रीय परलोक-विद्या-परिषद् में सम्मिलित होने के लिए विलायत जा रहे थे तो दैवयोग से

उसी जहाज़ पर भारत के प्रसिद्ध वैज्ञानिक श्री सी० वी० रमण भी थे। हमने उनसे परलोक-विद्या सम्बन्धी बातचीत की। उन्होंने हमारी बातों को बड़े ध्यानपूर्वक सुना और प्रयोग देखने की इच्छा प्रकट की। हमने जहाज़ में ही उन्हें कुछ प्रयोग करके दिखाये। उन्हें देखकर वे बड़े चकित हुए। हमें आशा थी, कि वे इस प्रयोग के बाद परलोक-विद्या के और भी प्रयोग करेंगे, किन्तु हमें बड़े दुःख से कहना पड़ता है कि हमें उनसे सर्वथा निराश होना पड़ा। एक बार सन् १९३३ में देहरादून में हमारी उनसे फिर भेंट हो गई। हमने उनसे बड़ी उत्कण्ठा से पूछा—"आपने परलोक-विद्या के सम्बन्ध में क्या कोई अनुभव किये हैं?" उन्होंने कहा—"मुझे इस विद्या में कोई अनुराग नहीं है।" यह है हमारे देश के वैज्ञानिकों का भाव।

एक ओर देश के वैज्ञानिकों का यह भाव है, दूसरी ओर धार्मिक विद्वानों को लीजिए। वे भी इसका विरोध करते हैं। यद्यपि परलोक-तत्त्व धर्म के अङ्गों को पुष्ट करता है, फिर भी वे इसका तिरस्कार ही करते हैं। काशी में एक बार हम मृत व्यक्तियों को आह्वान करने के प्रयोग कर रहे थे। प्रयोग में एक संस्कृतज्ञ विद्वान् भी थे। उनकी बुलाई हुई जब एक आत्मा आई तो पण्डित जी कहने लगे—"यह कैसे सम्भव है! मेरे चाचा की मृत्यु काशी में हुई है और काशीखण्ड के माहात्म्य के अनुसार उनका मोक्ष हो जाना चाहिए। वे अब कैसे आ सकते हैं!" इसी भाँति एक बार हम काशी की सनातनधर्म-सभा में भाषण करना चाहते थे, किन्तु वहाँ के अधिकारियों ने यह कहकर हमारा भाषण नहीं होने दिया कि—"यह भूत-विद्या है—हम इस पर विश्वास नहीं करते।" यह धार्मिक विद्वानों की भावना है। अब राजनीतिक नेताओं की भी बात सुन लीजिए। वे भी इसका बिना समझे विरोध करना अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझते हैं। स्वयं गांधीजी ने अपने पत्र यङ्ग इण्डिया में एक बार लिखा था—"मेरे पास कुछ ऐसे पत्र आये हैं, जिनमें मुझसे परलोक-विद्या की सत्यता के सम्बन्ध में पूछा

जाता है। मुझे इस विद्या का कुछ ज्ञान नहीं है, किन्तु यह वाञ्छनीय नहीं है।"

इन सब उपेक्षाओं और विरोधों के होते हुए भी हमें कुछ ऐसे व्यक्ति मिले हैं, जिन्होंने परलोक-विद्या के प्रयोग देखकर इस पर विश्वास किया और इसके निरन्तर प्रयोग करते रहते हैं। कुछ लोगों ने तो अपने अनुभव भी पुस्तकाकार में प्रकट किये हैं। ऐसे व्यक्तियों में से कुछ के नाम ये हैं, कटनी की रानी साहिबा श्रीमती गायत्री देवी ने 'सत्येन्द्र-सन्देश' नामक एक बड़ा ग्रन्थ हिन्दी भाषा में लिखा है। इस पुस्तक में आपके भाई 'सत्येन्द्र' द्वारा लिखे हुए सन्देश हैं। आपके भाई सत्येन्द्र की मृत्यु अल्पावस्था में ही हो गई थी। इससे आप अपनी माता तथा बहनों सहित बहुत दुःखी थीं। बाद हमारे तथा अन्य परलोक-विद्या-विशारदों के सहयोग से उन्हें अपने स्वर्गस्थ भाई से सन्देश प्राप्त हुए। इन्हें आपने बड़े सुन्दर रूप से लिखा है। इसके बाद हमारी लिखी हिन्दी पुस्तक 'सुभद्रा' है। हमारी इस पुस्तक का अनुवाद अँगरेज़ी भाषा में भी हो गया है। मराठी भाषा में इन्दौर के श्री जी० बी० साठे ने 'रमा' नामक पुस्तक लिखी है, उसमें उन्होंने अपने अनुभव लिखे हैं। बँगला में श्रीमृणालकान्त घोष ने 'परलोकेर कथा' नामक ग्रन्थ लिखा है। इसका हिन्दी अनुवाद हो गया है। रावबहादुर नृसिंहम् पन्तलु ने दो पुस्तकें तेलगू भाषा में लिखी हैं। कोयमबटूर के डोरास्वामी आयर ने—Spiritual Healing और Life of Ram-Ram लिखा है। डोरास्वामी राम-राम नामक डाक्टर की आत्मा के सहयोग से चिकित्साकार्य्य भी करते हैं। आपने कोयमबटूर में इसका एक चिकित्सालय खोल रक्खा है। बम्बई ट्रामवे कम्पनी के सेक्रेटरी श्री पी० डी० महालक्ष्मीवाला ने अँगरेज़ी में Adventure in spiritualism नामक एक पुस्तक लिखी है। इन लेखकों ने अपनी-अपनी पुस्तकों में अपने व्यक्तिगत अनुभव लिखकर यह बताया है कि परलोक-विज्ञान में उन्होंने क्या-क्या अनुभव किये। दुर्भाग्यवश इस विद्या के प्रति अभी लोगों का बहुत कम

अनुराग है, इसलिए इन पुस्तकों का तथा इस विज्ञान का अधिक प्रचार नहीं हुआ। किन्तु इससे इतना अवश्य सिद्ध हो गया कि परलोक-तत्त्व अनुभव-गम्य है। प्रयोगों से वह जाना जा सकता है।

अभी तक इस सम्बन्ध में जो कुछ खोज हुई है, वह अधिकांश में यूरोपीय वैज्ञानिकों की खोज के आधार पर की गई है। हमारे देश के इने-गिने लोगों ने व्यक्तिगत रूप से अनुभव किये हैं, किन्तु इसके वैज्ञानिक प्रयोग कर इस विद्या को आगे बढ़ाने का यत्न नहीं किया गया। दुर्भाग्य से देश के वैज्ञानिकों का इस ओर ध्यान नहीं है। साधारण लोगों की उत्कण्ठा केवल अपने आत्मीय जन से बात करने तक की रहती है। जब वे उससे बात कर लेते हैं, तब उनका इस विद्या में कोई अनुराग नहीं रहता। हमें प्रति दिन नये लोगों के साथ ही प्रयोग करने होते हैं।

हम चाहते हैं कि यदि हमारे देश के वैज्ञानिक इस विद्या के प्रयोग कर इसके गूढ़ तत्त्वों की खोज करें तो वे न केवल परलोक-विज्ञान की उन्नति कर सकेंगे, किन्तु अन्य देशों को भी इस विषय में पथ प्रदर्शित कर सकेंगे। सच पूछा जाय तो यह विद्या भारत की ही है। इसके विषय में जितना हमें जानने का अभिमान था, उतना अन्य किसी देश को नहीं; फिर भी आज हम इस विद्या से पराङ्मुख होकर बैठे हैं और इसके सम्बन्ध में कुछ भी नहीं करते।

हम उन धर्मज्ञ पण्डित-वर्ग से भी सानुरोध प्रार्थना करते हैं कि इस विद्या के प्रयोग कर जनता को अपने अनुभव बतायें। आप इस बात से भयभीत न हों कि आपके प्रयोगों से धर्म्म-शास्त्र की मर्यादा नष्ट होगी, अपितु वह दृढ़ होगी। हमारे पूर्वजों ने इस विद्या की जो उन्नति की थी, उसका व्यावहारिक सम्बन्ध हमसे छूट गया है। इसलिए इस बात की आवश्यकता है कि हम इसे व्यावहारिक रूप दें। केवल अन्ध श्रद्धा से हम इस विद्या की उन्नति नहीं कर सकेंगे।

——

दूसरा परिच्छेद

परलोक-विद्या के सिद्धान्त

परलोक-विद्या-विशारदों ने इस तत्त्व की खोज की है, कि मनुष्य के दो शरीर होते हैं। एक स्थूल शरीर और दूसरा सूक्ष्म शरीर। ये दोनों शरीर एक दूसरे से सम्बद्ध होते हैं। जब मनुष्य की मृत्यु हो जाती है तो इन दोनों का पारस्परिक सम्बन्ध टूट जाता है और स्थूल शरीर मृत शरीर हो जाता है, किन्तु सूक्ष्म शरीर का अस्तित्व बना रहता है। उसके रहने के स्थान को परलोक कहते हैं। सूक्ष्म शरीर की संज्ञा इसलिए दी गई है कि यह दृष्टिगोचर नहीं होता। इस सूक्ष्म शरीर में भी मनुष्य के गुण-दोष उसके साथ रहते हैं। उसका जीवित अवस्था का ज्ञान, स्मरण-शक्ति, व्यक्तित्व तथा अन्य गुण इस सूक्ष्म शरीर में रहते हैं। इनका नाश स्थूल शरीर के नाश के साथ नहीं होता। सूक्ष्म शरीर में भी जीव की विचार-धारा बनी रहती है। साथ ही सूक्ष्म शरीर साकार और सावयव है। इस सम्बन्ध में जे० आर्थर फिनले ने अपनी पुस्तक On the edge of Eturic में लिखा है :—

"इस संसार में हमारा शरीर दो शरीरों का बना हुआ है। एक स्थूल शरीर, जिसे हम देख सकते, छू सकते हैं और दूसरा सूक्ष्म शरीर है, जिसे हम इन्द्रियों से अनुभव नहीं कर सकते। ये दोनों शरीर एक दूसरे से घुले-मिले रहते हैं, किन्तु सूक्ष्म शरीर चिरस्थायी है। सूक्ष्म शरीर के मस्तिष्क में स्मृति, व्यक्तित्व तथा हमारे आचरण के अन्य गुण विद्यमान रहते हैं। ये गुण सूक्ष्म शरीर के ही हैं। विचारालय (Mind) कभी जर्जर नहीं होता। केवल स्थूल शरीर के मस्तिष्क में वृद्धावस्था के कारण दोष आ जाते हैं। एक बार जिस ज्ञान को हम प्राप्त कर लेते हैं

उसका नाश नहीं होता। किन्तु इस संसार में अपने विचारों को व्यक्त करने की शक्ति जीर्णावस्था के कारण नष्ट हो जाती है। परन्तु इसका कारण यह नहीं है कि हमारा ज्ञान नष्ट हो जाता है, अपितु हमारे स्थूल शरीर का मस्तिष्क जीर्णावस्था के कारण निकम्मा हो जाता है। जब मनुष्य इस स्थूल शरीर को छोड़कर सूक्ष्म शरीर में आ जाता है, तब उसकी स्थूल शरीर की बाधाएँ नष्ट हो जाती हैं और उसकी ज्ञान-शक्तियाँ अबाधित रूप से काम करने लगती हैं। मृत्यु के कारण जो परिवर्तन होता है, उससे न तो हमारा रूप-रङ्ग नष्ट होता, न विचार नष्ट होते और न हमारे कर्म नष्ट होते हैं।"

उपर्युक्त अवतरण किसी अन्धविश्वासी भारतीय का नहीं है, किन्तु एक ऐसे देशवासी का है, जो परलोक या आत्मा-परमात्मा किसी पर विश्वास नहीं करते थे। अब यूरोपवासियों को भी यह तत्त्व मान्य होने लगा है, कि स्थूल शरीर के अतिरिक्त कोई दूसरा शरीर भी है और उसके साथ मनुष्य के आचार-विचार, मनोभाव तथा कर्म बने रहते हैं।

इस सम्बन्ध में हम एक दूसरे फ्रांसीसी लेखक एलन कार्डे का भी मत व्यक्त कर देना ठीक समझते हैं। आप लिखते हैं—"मनुष्य-शरीर का एक सूक्ष्म आवरण भी है जो साधारण अवस्था में दृष्टिगोचर नहीं होता, फिर भी उसमें स्थूल शरीर के कुछ गुण विद्यमान रहते हैं। इसलिए आत्मा को रेखागणित का बिन्दु नहीं समझ लेना चाहिए। किन्तु इसका वास्तविक अस्तित्व है, जो न तो दृष्टिगोचर होता है और न स्पर्श से प्रतीत होता है।"

आत्मा और सूक्ष्म शरीर

आत्मा और सूक्ष्म शरीर का भी प्रभेद है। सूक्ष्म शरीर में आत्मा के साथ मनुष्य का साकार सावयव देह ज्ञान और कर्म रहते हैं, किन्तु आत्मा जिसका स्वरूप शास्त्रों ने निराकार, निर्विकार और अविनाशी बताया है, वह सूक्ष्म शरीर से भी अधिक सूक्ष्म है; वहाँ तक अभी पर-

लोक-विद्या-विशारदों की पहुँच नहीं हुई। उनका ऐसा कोई दावा भी नहीं है। हिन्दू-शास्त्रों में भी यह बात स्वीकार की गई है, कि जीव के साथ ५ कोष होते हैं; अर्थात् अन्नमय कोष, प्राणमय कोष, ज्ञानमय कोष, विज्ञानमय कोष और आनन्दमय कोष। इनमें से अन्नमय और प्राणमय कोष का नाश स्थूल शरीर के साथ हो जाता है, बाक़ी तीन कोष सूक्ष्म शरीरधारी जीव के साथ रहते हैं। इसी से जीव को दुःख-सुख की अनुभूति होती है। जब ज्ञान और विज्ञानमय कोष भी नष्ट हो जाते हैं, तब केवल आनन्दमय कोष रह जाता है और जीव आनन्दमय हो जाता है। किन्तु इस तत्त्व तक अभी परलोक-विद्या के विशारद नहीं पहुँचे। इसलिए परलोक-विद्या केवल सूक्ष्म शरीर की अवस्था तक ही विचार करती है।

सामान्य लोग इस सूक्ष्म शरीर का अस्तित्व नहीं समझते। वे केवल निराकार, निर्विकार आत्मा की कल्पना कर लेते हैं और प्रमाणस्वरूप भगवद्गीता का निम्नलिखित श्लोक देते हैं—

न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे॥

आत्मा न उत्पन्न होता है, न मरता है, एक बार होकर फिर होनेवाला भी नहीं है। यह नित्य है, शाश्वत है, शरीर का नाश होने पर उसका नाश नहीं होता।

भगवान् श्रीकृष्ण ने भी आत्मा के स्वरूप की कोई कल्पना या रूपरेखा नहीं बताई, केवल नकारात्मक ही उसकी व्याख्या की है। भगवद्गीता में आप कहते हैं—

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः॥
अच्छेद्योऽयमदाह्योयमक्लेद्योऽशोष्य एव च।
नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः॥
अव्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयमविकार्योऽयमुच्यते।
तस्मादेवं विदित्वैनं नानुशोचितुमर्हसि॥

किन्तु परलोक-विद्या-विशारदों ने यह स्थिर किया है, कि मरने के बाद भी मनुष्य का सूक्ष्म शरीर वैसा ही रहता है, जैसा मरने के समय उसका स्थूल शरीर रहता है। जैसा कि हमने ऊपर के अवतरणों से बताया है कि न केवल उसका सूक्ष्म शरीर ही रहता है, अपितु उसका ज्ञान, विचार, गुण, व्यक्तित्व, भावना भी ज्यों की त्यों बनी रहती है और अधिक परिष्कृत रूप में रहती है। केवल अवर्णनीय आत्मा को मान लेने से परलोक का यथार्थ ज्ञान नहीं हो सकता।

सूक्ष्म शरीर को हिन्दू शास्त्रों ने भी स्पष्ट रूप से स्वीकार किया है। आद्य शङ्कराचार्य ने सूक्ष्म शरीर की व्याख्या करते हुए लिखा है कि उस शरीर में वह सुख-दुःख जानने का साधन रहता है, उसमें १७ कलाएँ, मन और बुद्धि इत्यादि सम्मिलित रहती हैं।

परलोक में रहनेवाले ऐसे सूक्ष्म शरीरधारी जीवों से हम माध्यम द्वारा बातचीत कर सकते हैं। यह परलोक विद्या का दूसरा सिद्धान्त है।

माध्यम (Medium)

परलोक-विद्या के जानकार लोगों ने माध्यम की परिभाषा इस प्रकार की है—"जिस व्यक्ति के द्वारा इस लोक और परलोक का सम्बन्ध स्थापित हो सके, उसे माध्यम कहते हैं।"

माध्यम के सम्बन्ध में मिस्टर एम० ए० वालिस अपनी पुस्तक A Guide to Medium Snip में लिखते हैं—"माध्यम हम ऐसे व्यक्ति को कह सकते हैं, जो आत्माओं के प्रभाव को ग्रहण कर सके या जिसमें वह अध्यात्मशक्ति (Psychic power) हो जिसके द्वारा परलोकगत आत्मा अपनी उपस्थिति और शक्ति का प्रदर्शन कर सके। आत्माएँ शक्ति तैयार नहीं कर सकतीं, किन्तु जहाँ शक्ति होती है, वहाँ वे शक्ति का उपयोग कर अपना प्रदर्शन करती हैं।"

एक दूसरे ग्रन्थकार एलन कार्डेक ने माध्यम की परिभाषा करते हुए लिखा है—"कोई भी व्यक्ति जो आत्मा की प्रेरणा से प्रभावित होता है,

वह माध्यम है। यह शक्ति जन्मगत होती है और प्रायः सब मनुष्यों में थोड़ी बहुत मात्रा में होती है। ऐसे विरले ही आदमी होंगे, जिनमें थोड़ी बहुत मात्रा में यह शक्ति न हो। इसलिए हमें यह मान लेना चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति माध्यम है, फिर भी माध्यम का काम वे ही कर सकेंगे, जिनमें यह शक्ति पर्याप्त मात्रा में है और प्रयोग करने पर उसके द्वारा सन्तोषजनक परिणाम प्राप्त हों।''

माध्यम परलोकगत आत्माओं से सम्बन्ध स्थापित करने के लिए नितान्त आवश्यक है। जिस भाँति विना दूरबीन के ज्योतिष के ग्रहों की गति नहीं देखी जा सकती, वैसे ही विना माध्यम के साधारण मनुष्य को परलोक का अनुभव नहीं हो सकता। इस ज्ञान की प्राप्ति के लिए या तो वह स्वयं माध्यम बने अथवा किसी माध्यम का सहयोग प्राप्त करे। हमें भी अपनी पत्नी श्रीमती पार्वतीबाई ऋषि का सहयोग प्राप्त है। यूरोप के वैज्ञानिकों ने भी इसी प्रकार इस विद्या की खोज की है। वे वर्षों तक माध्यम के द्वारा मृत व्यक्तियों के सन्देश प्राप्त करके इस तत्त्व पर पहुँचे हैं। इसलिए परलोक-विद्या से अनुराग रखनेवालों को अपने साथ कोई माध्यम अवश्य रखना चाहिए। आगे हम माध्यम के विषय में एक अलग परिच्छेद लिखेंगे।

आत्मा और पुनर्जन्म

परलोक-विद्या-विशारदों ने यह मत स्थिर किया है, कि आत्मा सूक्ष्म शरीर के साथ कुछ समय तक परलोक में रहती है और बाद में पुनर्जन्म ग्रहण करती है। पुनर्जन्म के सम्बन्ध में युरोपीय परलोक-विशारदों में परस्पर मतभेद है। उनमें जो बहुसंख्यक दल है वह पुनर्जन्म को मानता है, किन्तु एक अल्पसंख्यक दल भी है जो इसे स्वीकार नहीं करता। आत्माएँ परलोक में कितने समय तक रहती हैं, इसकी कोई मर्यादा नहीं है। अनेक आत्माएँ सैकड़ों वर्ष से परलोक में विद्यमान हैं। हमारे देश के अधिकांश लोगों की यह धारणा हो गई है, कि मरने

के बाद आत्मा तुरन्त जन्म ग्रहण कर लेती है। अपने इस मत को पुष्ट करने के लिए वे भगवद्‌गीता का एक अवतरण भी दिया करते हैं—

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही॥

अर्थात् जिस प्रकार मनुष्य पुराने वस्त्र छोड़कर नये वस्त्र धारण करता है, वैसे ही मनुष्य एक शरीर को छोड़कर दूसरा शरीर धारण करता है। किन्तु यह समझना भूल है। क्योंकि भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि "यदि तू युद्ध में मारा गया तो स्वर्ग में जायेगा।" यदि स्वर्ग न होता तो भगवान् कहते—"यदि तू युद्ध में मारा जायेगा तो तुरन्त पुनर्जन्म ग्रहण करेगा।" किन्तु उन्होंने ऐसा नहीं कहा। इसी प्रकार अर्जुन ने जब पूछा, कि योगभ्रष्ट मनुष्य की क्या गति होती है तो भगवान् कहते हैं—

प्राप्य पुण्यकृतांल्लोकानुषित्वा शाश्वतीः समाः।
शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते॥

(४२वाँ श्लोक, छठा अध्याय)

वह मनुष्य बहुत समय तक पुण्यलोक में निवास कर उत्तम कुल में जन्म लेता है। इसी प्रकार भगवान् गीता में एक स्थान पर कहते हैं—

अज्ञश्चाश्रद्दधानश्च संशयात्मा विनश्यति।
नायं लोकोऽस्ति न परो न सुखं संशयात्मनः॥

(२० श्लोक, ४र्थ अध्याय)

अर्थात् जिसके मनमें संशय रहता है उसको न इस लोक में सुख है और न परलोक में। और भी भगवान् कहते हैं—

ते तं भुक्त्वा स्वर्गलोकं विशालं क्षीणे पुण्ये मृत्युलोकं विशन्ति।
एवं त्रयीधर्ममनुप्रपन्ना गतागतं कामकामा लभन्ते॥

(२२वाँ श्लोक)

पुण्यवान् लोग स्वर्ग में जाते हैं और उनका पुण्य समाप्त होने पर वे फिर मृत्युलोक में आते हैं।—इन सब अवतरणों से सिद्ध हो जायगा कि पुनर्जन्म के पहले मनुष्य परलोक में रहता है।

पुनर्जन्म कब होता है ?

परलोकगत आत्माओं से जो सन्देश प्राप्त हुए हैं, उनसे प्रकट होता है, कि साधारणतया परलोकगत आत्माएँ पुनर्जन्म ग्रहण करना नहीं चाहतीं। फिर भी उन्हें तीन कारणों से जन्म ग्रहण करना ही होता है। ये तीन कारण निम्नलिखित हैं—

(१) अपने कर्मों के अनुसार।
(२) अपने सम्बन्धियों से अत्यन्त प्रेम के कारण।
(३) कोई महत् कार्य करने के लिए।

जब तक पुनर्जन्म नहीं होता तब तक परलोकगत आत्माओं से बातचीत हो सकती है। जब उसका जन्म हो जाता है तब इसका समाचार कोई दूसरी आत्मा देती है।

कर्मों का फल

परलोकगत आत्माओं के संदेशों से यह भी स्थापित होता है कि मनुष्य मृत्युलोक में जैसे कर्म करता है उन्हीं के अनुसार उसे फल भोगना पड़ता है। खृष्टी धर्म के माननेवाले इस तत्त्व को नहीं मानते थे, किन्तु परलोकगत आत्माओं के संदेशों से उन्हें यह मत अब मान्य हो गया है। फ्रांसीसी परलोकविद्याविशारद एलन कार्डेक ने इस सम्बन्ध में बड़ी खोज की है। आपने इस सम्बन्ध में कितनी ही आत्माओं से सन्देश प्राप्त किये हैं और यह जाना है कि परलोक में तीन प्रकार की आत्माएँ रहती हैं :—(१) सुखी आत्मा, (२) मध्यम कोटि की (जो न सुखी है और न दुखी) और (३) दुखी आत्माएँ।

इन मृतात्माओं के जीवन-काल के कर्मों की जब खोज की गई तो मालूम हुआ कि जो दुखी आत्माएँ हैं वे अपने जीवन-काल में दुष्कर्मी थीं। ऐसे ही दुष्कर्मी लोगों की आत्मा को बुलाकर जब पूछा गया तो मालूम हुआ कि वे परलोक में दुखी हैं। ऐसी आत्माओं के सन्देश एलन कार्डेक की Heaven and Hell में दिये गये हैं। उसमें से हम एक रूसी राजकुमार का सन्देश उद्धृत करते हैं—

प्रश्न—क्या आप अपनी स्थिति विस्तार सहित बतायेंगे?

उत्तर—"मेरे लिए आप भगवान् से प्रार्थना करें। सुखी वे लोग हैं, जिन्होंने नम्र हृदय से सुख दुःख सहन किये हैं। जिन्हें आप भाग्यशाली समझते हैं, उनकी परलोक में कैसी दुर्गति होती है, उसकी आप कल्पना नहीं कर सकते। जो लोग धन एकत्र करते हैं, वे अपने सिर पर जलते हुए अङ्गारे एकत्र करते हैं। मुझे यदि कभी मृतलोक में आने की आज्ञा मिलेगी तो मैं उन लोगों के सामने हृदय से पश्चात्ताप करूँगा जिन्हें मैंने अपने जीवन-काल में सताया है। यह अहङ्कार! याद रक्खो यही सब दुःखों का मूल है। मैंने अपनी सत्ता का दुरुपयोग किया। मैं अपने अधीनस्थ लोगों पर अत्याचार करता था; उनके साथ निर्दयता का व्यवहार करता था; मैंने धन, सम्मान और पद प्राप्त किये। आज उन्हीं का मुझे ऐसा दण्ड भोगना पड़ रहा है जो मैं सहन नहीं कर सकता।"

इस अवतरण से एक दुखी आत्मा के दुःख की कल्पना हो सकती है। आगे के परिच्छेदों में हम इस सम्बन्ध में और भी प्रकाश डालेंगे।

ईश्वर का अस्तित्व

परलोकगत आत्माओं के सन्देश से यह भी तत्त्व मालूम हुआ है कि ईश्वर ही सब सृष्टि का आदिकारण है। इससे यह सिद्ध होता है कि परलोक-विद्या निरीश्वरता को नहीं मानती है। आजकल कितने ही धर्म ऐसे हैं जो ईश्वर के अस्तित्व को ही स्वीकार नहीं करते। उदाहरण के लिए बौद्ध धर्म को लीजिए। वह ईश्वर का अस्तित्व ही नहीं मानता।

परलोक-विद्या की यह विशेषता है कि इसमें सब धर्मों का समावेश होते हुए भी यह ईश्वर को ही सब सृष्टि का कारण मानती है। इसलिए चाहे जिस धर्म का माननेवाला व्यक्ति हो, उसे यह तत्त्व स्वीकार करना ही होगा।

उपर्युक्त ५ सिद्धान्त अन्तर्राष्ट्रीय परलोक-विद्या-परिषद् में सर्वानुमति से स्वीकार किये गये हैं। अन्तर्राष्ट्रीय परलोक-विद्या-परिषद् प्रति तीसरे वर्ष होती है। इस परिषद् में २० से २५ देशों के प्रतिनिधि भाग लेते रहे हैं। इसके अधिवेशन अब तक पेरिस, लन्दन, बारसीलोना, प्रेग और ग्लासगो आदि में हुए हैं। बारसीलोना में सन् १६३४ में जो अन्तर्राष्ट्रीय परिषद् हुई थी, उसमें हमें और श्रीमती मणि को भी सम्मिलित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उसने सर्वानुमति से निम्नलिखित ५ सिद्धान्त स्थिर किये हैं :—

(१) ईश्वर बुद्धि और समस्त सृष्टि का आदिकारण है।

(२) आत्मा सूक्ष्म शरीर धारण कर परलोक में रहती है।

(३) आत्मा अमर है और वह पूर्णता को क्रमशः प्राप्त होती है, पुनर्जन्म से या परलोक में भी।

(४) माध्यम के द्वारा मृत व्यक्तियों से जीवित व्यक्ति अपना सम्बन्ध स्थापित कर सकते हैं।

(५) मनुष्य अपने कर्मों के अनुसार परलोक में फल भोगता रहता है।

अन्तर्राष्ट्रीय परलोक-विद्या-परिषद् में इन तत्त्वों पर पूरा-पूरा विवेचन किया जाता है। प्रत्येक देश के प्रतिनिधि अपना-अपना अनुभव बताते हैं। इस सम्बन्ध के निबन्ध भी पढ़े जाते हैं। बहुत वाद-विवाद के बाद ये सिद्धान्त स्थिर किये गये हैं।

———

तीसरा परिच्छेद

परलोक-विद्या की आवश्यकता

गत परिच्छेदों में हमने परलोक-विद्या का वैज्ञानिक रूप और उसके तत्त्वों का उल्लेख किया है। अब स्वभावतः यह प्रश्न उत्पन्न होता है, कि परलोक-विद्या की हमें आवश्यकता क्या है ? अधिकांश लोग इसी प्रकार का प्रश्न करते हैं। कुछ लोग तो यहाँ तक कहते हैं कि गड़े मुर्दे उखाड़ने से क्या लाभ है ? कुछ यह भी कहते हैं कि हमें इस लोक में रहना है, हम परलोक की बात जानकर क्या करेंगे ? कुछ इसके प्रति और भी अनादर प्रकट करते हुए कहते हैं कि हमें इस लोक के आदमियों से तो बात करने का अवकाश नहीं—परलोकगत आत्माओं से बातचीत कर हम अपने सिर क्यों बला लें। इन सब प्रश्नों से एक ही बात सिद्ध होती है कि लोग परलोकगत आत्माओं से बातचीत करने का महत्त्व नहीं समझते। हम यह देखते हैं कि साधारण मनुष्य ही नहीं, किन्तु बड़े-बड़े नेता भी इसकी उपेक्षा करने में अपना गौरव समझते हैं। पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने अपनी आत्मकथा में इसी प्रकार के विचार प्रकट किये हैं। जब बड़े-बड़े नेताओं और विद्वानों की यह स्थिति है तो साधारण जनता यदि इसकी उपेक्षा करे तो कोई आश्चर्य नहीं है। इस सम्बन्ध में डाक्टर लिण्डसे जानसन ने अपनी पुस्तक "The Great problem" में कहा है—"साधारण कोटि के लोग अपने दैनिक कार्यक्रम में ५ मिनट भी परलोक के सम्बन्ध में विचार नहीं करते।" हमारे हिन्दू-धर्म-शास्त्रों में इस प्रकार की उपेक्षा नहीं की गई थी। उन्होंने दैनिक कर्म-विधि में भी तर्पण आदि रख दिये हैं, जिससे हम अपने परलोकगत आत्माओं का स्मरण कर सकें।

साधारणतया यह देखा जाता है कि जब किसी व्यक्ति का कोई अति निकट सम्बन्धी परलोकगत हो जाता है तब उसका ध्यान परलोक की ओर आकृष्ट होता है। उनकी मनस्थिति की कल्पना उन्हीं लोगों को हो सकती है, जो स्वयं भुक्तभोगी हों। हमारे पास ऐसे अनेक व्यक्ति आये हैं और हज़ारों आदमियों के ऐसे पत्र आये हैं, जिनमें उन्होंने अत्यन्त करुण भाव से यह प्रकट किया है कि अब हमें जीवित रहने की कोई इच्छा नहीं है। ऐसे समय में वे अधीर होकर यहाँ तक कहने लगते हैं, ईश्वर या परमात्मा कोई नहीं है। यदि है तो वह बड़ा अन्यायी है। दयालु तो बिलकुल नहीं हो सकता। उनकी सान्त्वना के लिए कई प्रकार का उपदेश दिया जाता है। कुछ लोग उन्हें यह समझाते हैं कि अब वह तो चला गया—वापिस आ नहीं सकेगा, उसके लिए दुःख करना व्यर्थ है। कोई-कोई यह भी समझाते हैं कि यह आत्मा अमर है, न मालूम कितनी बार वह संसार में बेटा बनकर आती है, भाई बनकर आती है, बाप बनकर आती है। अब वह चली गई; उसके लिए शोक करना व्यर्थ है। कुछ यह कहकर भी सांत्वना देते हैं कि उसका पुनर्जन्म हो गया होगा। कुछ कहते हैं कि वह धर्मात्मा पुरुष था; वह मुक्त हो गया। कुछ उन्हें यह भी समझाते हैं कि यह संसार तो एक सराय या धर्मशाला है। जिस भाँति नदी में कुछ तिनके इकट्ठे हो जाते हैं और फिर अलग-अलग हो जाते हैं, उसी प्रकार मनुष्य भी अपने कर्मों के अनुसार आता-जाता है। दुःख करने से क्या लाभ है?

मालूम नहीं कि ऐसे उपदेशों से उस दुखी व्यक्ति को कितना सन्तोष होता है। किन्तु परलोक विद्या ऐसे दुखी व्यक्ति को सांत्वना देने में बड़ी सहायता करती है। यह सांत्वना वह केवल शब्दों से नहीं देती, वरन् प्रत्यक्ष प्रमाणों से देती है। इसके प्रयोगों से दुखी व्यक्ति को यह अनुभव हो जाता है कि जो व्यक्ति परलोक गया है उसका अस्तित्व उसी भाँति बना हुआ है जिस भाँति कोई वस्तु पर्दे के पीछे छिपी हो। उसे यह भी अनुभव हो जाता है कि परलोक जाने के बाद उसका व्यक्तित्व, स्मृति, प्रेम, गुण और स्वभाव

पूर्ववत् बना हुआ है। इतना ही नहीं, वरन् हम उससे सन्देश भी प्राप्त कर सकते हैं। यदि स्थिति अनुकूल हो तो परलोकगत आत्माओं की आवाज़ भी सुन सकते हैं, उनके दर्शन भी कर सकते हैं, उनके फोटो चित्र भी लिये जा सकते हैं। इससे उनके सूक्ष्म शरीर से परलोक में रहने का प्रत्यक्ष प्रमाण मिल सकता है। प्रयोगों से यह भी मालूम हुआ है कि परलोकगत आत्माएँ अपने सम्बन्धियों से बात-चीत करने को बड़ी उत्सुक रहती हैं। वे स्वप्न में आकर बात-चीत करने का यत्न करती हैं, अपना आगमन बताने का भी यत्न करती हैं, किन्तु साधन बिना वे अपने को प्रकट नहीं कर सकतीं। सन्देश देने में यदि उन्हें सफलता मिली तो आत्माओं को बड़ा सन्तोष होता है। हमारी और उनकी स्थिति ठीक वैसी ही है जैसी अन्धे और गूँगे की हो। हम उन्हें देख नहीं सकते और वे हमसे साधन बिना बोल नहीं सकते। साधन मिलने पर वे अपने भाव प्रकट कर आनन्दित होते हैं और दुखी लोगों को उनके सन्देशों से बड़ा समाधान होता है। इस समाधान से कितना आनन्द होता है, इसकी कल्पना केवल वही व्यक्ति कर सकेंगे जिन्हें इस प्रकार का आघात पहुँचा हो और वे फिर अपने परलोकगत प्यारे सम्बन्धी से बातचीत कर सके हों। इससे यह सिद्ध होता है कि ऐसे दुखी लोगों के लिए यह विद्या कितनी उपयोगी है।

हमें व्यक्तिगत रूप से इस स्थिति का अनुभव है। इसलिए हम यह जानते हैं कि जब कोई अपना बहुत निकट का प्रियजन परलोकगत हो जाता है तो हृदय को उससे कितना अधिक आघात पहुँचता है। हमारी पूर्व पत्नी स्वर्गीय सुभद्रा का जब परलोकवास हुआ तो उससे हमारे हृदय को कैसा आघात पहुँचा, यह यहाँ संक्षेप में बता देना आवश्यक है। बात यों थी कि हमारी पत्नी सुभद्रा को पेट का रोग था। उसका बहुत इलाज किया गया, किन्तु कोई लाभ न हो सका। अन्त में हमने निश्चय किया कि आपरेशन कराया जाय। हमने अपनी ओर से इस सम्बन्ध में जो कुछ सावधानी हो सकती थी, वह सब की। यहाँ तक

कि आपरेशन करनेवाले डाक्टर को दुगनी फ़ीस देने का वचन भी दे दिया था जिससे इस काम में कोई ग़लती न रहे। किन्तु हमारे किसी भी उपाय से वह न बच सकी और आपरेशन के तीन दिन बाद ही वह इस लोक को छोड़कर परलोक चली गई। इससे हमारे हृदय को असह्य आघात पहुँचा। हमें भी लोगों ने उसी भाँति उपदेश किये, जिस भाँति अन्य लोगों को किया करते हैं और जिनका हमने ऊपर संकेत किया है। किन्तु उससे हमें सन्तोष नहीं हुआ और हम सोचने लगे कि यदि किसी उपाय से हम अपनी परलोकगत सुभद्रा से बातचीत कर सकें तो कैसा अच्छा हो। हमने इसके लिए प्रयत्न करना आरम्भ किया। पहले हमने स्वर्गीय मिसेज़ एनी बेसेण्ट को लिखा, किन्तु उन्होंने हमें कोई आशाजनक उत्तर नहीं दिया। इसके बाद हमने विलायत के मिस्टर बुश को एक पत्र लिखा। उन्होंने हमें स्व० पत्नी सुभद्रा की बहुत सी बातें लिख भेजीं। इसके बाद हमने लीडबीटर तथा अन्य परलोक-विद्यावादियों से पत्र-व्यवहार किया और इस उक्ति के अनुसार कि 'जिन खोजा तिन पाइयाँ गहरे पानी पैठ' हम अपनी परलोकगत सुभद्रा से बातचीत करने में सफल हुए। तब से हम नित्य सुभद्रा से बात करते हैं। इतने वर्षों के बाद भी हमारा अनुराग उससे बातचीत करने के लिए पूर्ववत् बना हुआ है। इसी से हमें परलोक के सम्बन्ध का इतना अधिक ज्ञान हो सका है।

अपनी आत्म-कथा के अतिरिक्त हम दो-एक पत्र ऐसे भी प्रकाशित कर देना चाहते हैं, जो उन कृतज्ञ लोगों ने हमारे पास भेजे हैं, जिन्हें हमारे द्वारा अपनी अभीष्ट परलोकगत आत्मा से बातचीत करने का अवसर मिला है। इनमें एक पत्र तो अभी १८वीं नवम्बर का ही है। यह पत्र सूरत के रिटायर्ड हेडमास्टर श्री लिनूभाई ए० सैयद बी० ए० का अँगरेज़ी में लिखा हुआ है। आप पत्र में लिखते हैं—

"प्रिय ऋषिजी,

मैं हैरान हूँ, कि आपकी कृपा के लिए किन शब्दों में आपका धन्यवाद करूँ। जब से आपका मेरा सम्पर्क हुआ है—शायद गत मार्च मास में

हुआ था—तभी से मैं आपकी कृपा का लाभ ले रहा हूँ। मैं आपको यह बात पहले भी लिख चुका हूँ कि हृदय की कृतज्ञता शब्दों से प्रकट नहीं हो सकती। आपको मालूम है कि मुझ पर गत जनवरी मास में एक बड़ी विपत्ति पड़ी थी (अर्थात् प्रियजन का स्वर्गवास हो गया था)। मैं इस विपत्ति से इतना अधिक दुखी हुआ कि मेरी यह इच्छा होने लगी, कि अब जीवित रहने में कोई आनन्द नहीं रहा। अपना भी जीवन समाप्त हो जाय तो अच्छा है। कुछ दिनों के बाद मेरे एक मित्र दैव-योग से मेरे पास आये। उन्होंने मुझे आपसे मिलने को कहा। मैंने अहमदाबाद से अविलम्ब आपको एक पत्र लिखा। आपने अत्यन्त कृपापूर्वक इस पत्र का मुझे तुरन्त उत्तर दिया। मैं भी तुरन्त ही भारतीय परलोक-विद्या मण्डल का सदस्य बन गया। इसके थोड़े दिन बाद ही आपने मेरी परलोकगत व्यक्ति से वे प्रश्न पूछे जो मैंने आपको पत्र में लिख भेजे थे। उन प्रश्नों का आपने जो उत्तर भेजा, उसे पढ़कर मुझे मालूम हुआ कि यह शब्दावलि, भाषा और भाव मेरी ही परलोकगत व्यक्ति की हैं। किन्तु फिर भी मेरा सन्तोष नहीं हुआ और मैंने आपको फिर लिखा कि इस सम्बन्ध में कुछ और अधिक स्पष्टीकरण कीजिए। आपने मेरे इस पत्र का भी बड़ा सहानुभूतिपूर्ण उत्तर दिया। आपके इन उत्तरों से मेरे व्यथित हृदय को एक सीमा तक सांत्वना हुई। आपने मुझे एक पत्र में लिखा था कि मृतात्मा को बुलाकर बातचीत करने के प्रयोग के समय यदि आप भी उपस्थित रहें तो पूरा-पूरा समाधान हो जायगा। तभी से मैं आपसे मिलने के लिए आतुर हो रहा था। किन्तु आप दक्षिण भारत का दौरा करने चले गये और मुझे विवश होकर अपना मन मारकर प्रतीक्षा करनी पड़ी। अपने प्रवास-काल में भी आपने मेरी परलोकगत व्यक्ति को बुलाकर उससे संदेश प्राप्त किये, जिनसे मुझे बहुत सन्तोष होता रहा।

"जब आप बम्बई आये तो दैवयोग से मैं भी बम्बई आ गया। मैंने आपको अपने आगमन की सूचना दी। आपने कृपा कर मुझे फोन द्वारा

सूचित किया कि अमुक समय में आकर मिलो। मैं ठीक समय पर आपके बताये हुए पते पर गया। आप जिस मकान में रहते हैं, वह इतना विशाल है, कि मेरे जैसे आदमी को उसमें आपके कमरे का पता लगाना बड़ा कठिन मालूम हुआ। मैंने इस मकान में जानेवाले एक आदमी से पूछा—"ऋषिजी कहाँ रहते हैं?" उसने बड़ी कृपा कर मुझे आपके मकान पर लाकर खड़ा कर दिया। यह देखकर तो मेरे आश्चर्य्य का कोई ठिकाना ही न रहा कि मकान बतानेवाले अन्य कोई सज्जन नहीं, स्वयं आप ही थे। शायद भगवान् ने हम लोगों के पारस्परिक आध्यात्मिक प्रेम के कारण ही यह संयोग उपस्थित किया हो। इसके बाद आपसे ख़ूब बातें हुई और विशेष प्रयोग के लिए दिन और समय निश्चित किया गया। इसके बाद मैं नियत दिन और नियत समय पर उपस्थित हुआ। आपने मेरे लिए विशेष प्रयोग किया। प्रयोग का विस्तृत विवरण देने की आवश्यकता नहीं है, केवल इतना ही लिखना पर्याप्त होगा कि यह प्रयोग सम्पूर्ण रूप से सफल हुआ और मुझे पूर्ण सन्तोष हो गया। अब मेरे हृदय में परलोक-विद्या का पूर्ण रूप से विश्वास हो गया। मुझे विश्वास हो गया कि मेरी प्रियजन की आत्मा परलोक में है। मैंने अपने ६० वर्ष के सुदीर्घ काल में जो कुछ परलोक के सम्बन्ध में अध्ययन किया था, उससे मुझे यह तो ज्ञान था, कि परलोक में आत्माएँ रहती हैं, किन्तु विश्वास तभी हुआ जब मुझे इसके निश्चित प्रमाण प्राप्त हो गये। अब मेरी एक ही हार्दिक प्रार्थना आपसे है कि आप जिस भाँति मुझ पर अब तक कृपा करते रहे हैं, उसी भाँति भविष्य में भी अपनी कृपा बनाये रहें और मुझे मनुष्य-जीवन का सुख प्राप्त करने में सहायता प्रदान करें।

"पत्र समाप्त करने के पूर्व मैं अपना यह धार्मिक कर्त्तव्य समझता हूँ कि स्वर्गीय आत्माओं को अपना हार्दिक धन्यवाद करूँ—आपकी स्वर्गस्थ पत्नी सुभद्रादेवी को भी धन्यवाद दूँ। इसके साथ ही मैं आपकी वर्तमान पत्नी श्रीमती ऋषि का भी धन्यवाद करना अपना कर्तव्य मानता हूँ।

उनकी कृपा और सहानुभूति को मैं कभी नहीं भूल सकता। मेरा नमस्कार तीनों को कह दें। अन्त में मैं आपका भी धन्यवाद करता हूँ, जिनकी महती कृपा से मैं आज तक ये पंक्तियाँ लिखने को जीवित रह सका हूँ।

आपका कृतज्ञ

साहब"

इस पत्र से पाठक यह सहज ही समझ लेंगे कि ऐसे दुःखी लोगों के लिए परलोक-विद्या कितना समाधान करनेवाली है। जब किसी का अत्यन्त निकट या प्यारा व्यक्ति परलोकगत हो जाता है तो उसे जीवन में कैसी निराशा होती है। कितने ही लोग तो इस दुःख से दुखी होकर या तो आत्महत्या कर लेते हैं अथवा घुल-घुलकर मर जाते हैं। ऐसे लोगों के दुःख-निवारण में इस विद्या से कितना लाभ हो सकता है, इसकी सहज ही कल्पना हो सकती है। अब हम एक पत्र कानपुर के श्री एस० के० श्रीवास्तव बी० एस्‌सी० का भी उद्धृत करते हैं। यह पत्र १३वीं जुलाई सन् १९४१ का है और अँगरेज़ी भाषा में लिखा गया है। पत्र इस प्रकार है—

"प्रिय बन्धु,

आपने मेरी ओर से मेरी खोई हुई आत्मा से बातचीत कर मुझ पर जो दया और सहायता की है, उसके लिए मैं अत्यन्त अनुगृहीत हूँ। इस बार के सन्देश बहुत ही सान्त्वना देनेवाले हैं और मेरे मस्तिष्क में उठनेवाले तूफ़ान को शान्त करनेवाले हैं।

हिन्दू धर्म-शास्त्रों के अनुसार आप वास्तव में 'ऋषि' हैं—आप उन दुःखी लोगों के दुःख को दूर करते हैं जो अपने किसी प्रियजन के वियोग से दुखी हैं और जो लोग इस दुःख को अभी नहीं जानते, उन्हें भी आप परलोक का सन्देश देकर मृत्यु के भय से मुक्त करते हैं। आधुनिक विद्या के अभिमान में मदमत्त हुए शिक्षित लोगों के लिए तो आप दिव्य द्रष्टा हैं। यद्यपि थियोसोफ़िकल सोसाइटीवाले विशाल परलोक की बड़ी-बड़ी डींगें मारते हैं, किन्तु परलोकगत आत्माओं से बातचीत करना

वांछनीय नहीं समझते—यह बात वैज्ञानिक रूप से समझ में नहीं आती। आपने इस दिशा में घोर परिश्रम किया है और थियोसोफ़िकल सम्प्रदाय के लोग बीच में ही लटक रहे हैं।"

अब हम मद्रास के राव बहादुर एम० नृसिंहम् के 'नागेन्द्र सायी' के अप्रकाशित अँगरेज़ी ग्रन्थ का एक पैरा उद्धृत करने का लोभ संवरण नहीं कर सकते। यह पुस्तक श्रीनृसिंहम् ने अभी हाल में ही लिखी है और छपने के लिए प्रेस में गई है। इसमें आपने अपने प्रिय पुत्र के सन्देश संगृहीत किये हैं। पुस्तक का श्रीगणेश आप इन शब्दों से करते हैं:—

"गत ४थी जनवरी सन् १९३८ में मेरे द्वितीय पुत्र नागेन्द्र सायी की मृत्यु हो गई। तब से मेरा परलोक-विद्या का अनुराग और अधिक बढ़ गया। वस्तुत: मैं इस विद्या का अध्ययन गत २० वर्षों से कर रहा था। अपने परलोक-विद्या के अनुभव और ज्ञान से ही मैं इस असह्य आघात को सहन कर रहा था, किन्तु मेरे शाब्दिक उपदेशों से मेरे परिवार के लोगों को सन्तोष न हो सका। इसलिए मैंने यह उचित समझा, कि इन लोगों के सामने आत्माओं से बातचीत करने के प्रयोग करूँ और परिवार के लोगों को यह बता दूँ, कि नागेन्द्र अभी परलोक में है। हम उसे नहीं देख सकते, किन्तु वह हमें देख सकता है। इसलिए मैं बम्बई गया और श्रीऋषिजी से मिला। उनके तथा उनकी वर्त्तमान पत्नी श्रीमती ऋषि के सहयोग से मुझे अपने पुत्र नागेन्द्र का पहला सन्देश प्राप्त हुआ। श्रीऋषिजी ने हमें यह भी बता दिया कि हम अपने गृह के लोगों का ही एक मण्डल बनाकर सन्देश प्राप्त कर सकते हैं। उसी विधि से हमने ये सन्देश प्राप्त किये हैं। हमारे ये सन्देश ३॥ वर्षों के हैं।"

इन अवतरणों से पाठकों को मालूम हो जायगा कि परलोक-विद्या उन दु:खी लोगों के लिए कितनी उपयोगी है, जो अपने प्रिय जनों के परलोक-वास से दुखी हैं। यह दु:ख सभी को होता है; क्योंकि जो

जन्म लेता है, उसकी मृत्यु अवश्य ही होती है और मृत्यु से उसके परिवार को कितना दुःख होता है, इसकी कल्पना ऊपर के पत्रों से कुछ-कुछ हो सकती है।

जड़वाद पर कुठाराघात

परलोक-विद्या की उपयोगिता केवल दुःखी लोगों को सांत्वना देने तक ही सीमित नहीं है, वरन् इसका सबसे बड़ा लाभ जड़वाद को नष्ट करने का है। आधुनिक वैज्ञानिक शिक्षा से लोग नास्तिक हो गये थे। वे कहते थे कि मनुष्य केवल परमाणुओं का एक पुतला है। मृत्यु के बाद उसका कुछ भी शेष नहीं रह जाता, इसलिए वे धर्मशास्त्र आदि को केवल कपोल-कल्पित या ढोंग मात्र समझते थे। उनका यह सिद्धान्त हो गया था कि इसी संसार में हमें जो कुछ करना है, वह कर लें; परलोक आदि कुछ नहीं है। इसलिए Read, drink, and be merry अर्थात् 'खाओ-पीओ, मौज करो' का सिद्धान्त वे सब मानने लगे थे। उन्हें समझाने के लिए कोई साधन नहीं था, जिससे उन्हें यह हृदयङ्गम कराया जा सके, कि इस लोक के सुकर्मों से आपको अच्छी गति मिलेगी। दुष्कर्मों से आपको दुखी होना पड़ेगा। धर्मशास्त्र को वे लोग पहले ही तिलाञ्जलि दे चुके थे। किन्तु ईश्वर-कृपा से परलोक-विद्या के प्रयोगों से हम यह सिद्ध कर सके हैं कि आप यदि सुखी रहना चाहते हैं, अपनी आध्यात्मिक उन्नति करना चाहते हैं तो ऐसे कर्म कीजिए जिनसे आपकी आत्मा ऊँची उठ सके, सुखी हो सके। यदि आप दुष्कर्म में रत रहेंगे तो आपको इसका दुःख अवश्य भोगना पड़ेगा और उसके प्रमाण उन लोगों के सन्देश हैं जिन लोगों ने जीवन भर वैभव और सत्ता के मद में अत्याचार किये हैं और आज वे दुखी होकर विनीत भाव से अपनी करनी पर पश्चात्ताप कर रहे हैं। इसलिए परलोक-विद्या जड़वाद पर कुठाराघात करने का एक अमोघ शस्त्र है।

धार्मिक उपयोगिता

सान्त्वना देने तथा जड़वाद का नाश करने के अतिरिक्त परलोक-विद्या का धार्मिक दृष्टि से भी अत्यधिक महत्त्व है। हमारे धार्मिक तत्त्व इस समय ऐसी अवस्था में हो गये हैं कि हमारे बड़े-बड़े विद्वान् भी उन पर अश्रद्धा करने लगे हैं। सर्वप्रथम हमारी आधुनिक शिक्षा ही हमें धर्म से विमुख करती है। दूसरे हमारे धार्मिक स्वरूप को प्रत्यक्ष प्रमाणों से स्पष्ट करने का साधन न रहने से धर्म पर से लोगों का विश्वास उठता जाता है। वे लोग या तो धर्म को केवल आडम्बर मानते हैं या उसे स्वार्थ-सिद्धि का एक साधन समझते हैं। यह बात केवल पाश्चात्य-शिक्षा-प्राप्त लोगों तक ही सीमित नहीं है, वरन् संस्कृत के विद्वान् भी धर्म के प्रति अश्रद्धा करने लगे हैं। प्रमाण-स्वरूप हम एक शास्त्रीजी का पत्र प्रकाशित करते हैं। यह पत्र हमें अँगरेज़ी भाषा में प्राप्त हुआ है। शास्त्रीजी लिखते हैं—"अपने पत्र लिखने का उद्देश्य प्रकट करने के पूर्व मैं सर्वप्रथम आपको अपना परिचय देना चाहता हूँ कि मैं सत्य का अन्वेषक हूँ। इस सत्य-अन्वेषण के लिए मैंने आधी-आधी रात तक पाश्चात्य और पौर्वात्य तत्त्वज्ञानों का वर्षों अध्ययन किया है; किन्तु जैसे-जैसे मैं अधिकाधिक अध्ययन करता रहा, वैसे-वैसे मेरी शङ्का बढ़ती गई और मैं ईश्वर, जीव या परलोक किसी को नहीं मानता। ईश्वर, जीव और परलोक मैं सदा से विकृत मस्तिष्क की कल्पना मानता रहा हूँ। इन विषयों पर मैंने बड़े-बड़े विद्वान् आस्तिक पण्डितों से विचार-विनिमय किया किन्तु कोई भी विद्वान् मेरे सन्देह का निवारण नहीं कर सका। ये लोग अपनी प्राचीन परिपाटी के अनुसार मेरा समाधान करने का यत्न करते हैं और जब मैं इनके ज्ञान पर अपनी युक्तियों से प्रहार करता हूँ तो ये चुप हो जाते थे। आप मुझे यह कहने के लिए क्षमा करेंगे कि मैं किसी भी युक्ति से सन्तुष्ट होनेवाला नहीं हूँ। केवल प्रत्यक्ष प्रमाण से ही मेरा सन्तोष हो सकेगा। एक बार मैं अपने एक मित्र से परस्पर वाद-विवाद

कर रहा था। उनसे भी मैंने यही कहा कि मेरा सन्तोष केवल युक्ति से नहीं हो सकता, जब तक प्रत्यक्ष प्रमाण न हो तब तक मैं इसे नहीं मान सकूँगा। मेरे मित्र ने कहा कि प्रत्यक्ष प्रमाण आपको भारत में केवल एक ही आदमी दे सकते हैं और वे हैं मिस्टर ऋषि। वही आपका सन्देह मिटा सकते हैं। मैंने आपका नाम सुना है और यह भी सुना है कि आप परलोकगत आत्माओं से वार्त्तालाप करते हैं। मैं इस परलोक-विद्या को केवल ढकोसला मात्र समझता हूँ। किन्तु आप जैसे महा-पुरुष जब इस विद्या के पीछे लगे हुए हैं तो मुझे कुछ विश्वास होता है, किन्तु मेरा विश्वास तभी दृढ़ हो सकेगा जब आप अकाट्य प्रमाणों से मुझे यह सिद्ध कर दें। आपकी यह परलोक-विद्या सत्य है कि नहीं, इसकी मैं परीक्षा करना चाहता हूँ।"

हमने यह एक पत्र उद्धृत किया है, किन्तु यह मनोभाव आजकल प्रायः सभी शिक्षित वर्ग में पाया जाता है। यही कारण है कि हमारे धार्मिक विश्वास ढीले पड़ते जाते हैं। श्राद्ध-तर्पण आदि को अब केवल ठगी या फ़िज़ूलख़र्ची बताया जाता है। लोग कहते हैं कि ब्राह्मणों का पेट क्या लेटरबक्स है जो उनके खिलाने से पितरों को पहुँच जायगा। इन सब शङ्काओं का निवारण केवल शाब्दिक युक्तियों से नहीं हो सकता। जैसा कि ऊपर के पत्र से स्पष्ट है, कि केवल युक्तियों से समाधान नहीं हो सकता, इसके लिए प्रत्यक्ष प्रमाणों की आवश्यकता है। ये प्रत्यक्ष प्रमाण हमें परलोक-विद्या से प्राप्त हो रहे हैं। इसी से हम यह समझ सकेंगे कि हमारे ऋषियों ने जो धार्मिक विधि नियत की थी, वह हमारे लिए कितनी उपयोगी है। वर्त्तमान युग वैज्ञानिक युग है, इसमें प्रत्येक तत्त्व को प्रत्यक्ष प्रमाणों से सिद्ध करना चाहिए।

भारत के प्रसिद्ध वैज्ञानिक और आविष्कारक डाक्टर एस० ए० भिसे न्यूयार्क से हमें लिखते हैं—"४५ वर्ष पूर्व जब मैंने परलोक-विद्या के तत्त्व का अनुसन्धान करना आरम्भ किया तो कालेज के ग्रेजुएट मेरी हँसी कर कहते थे कि आप ऐसे ढोंगों पर कैसे विश्वास करते हैं। किन्तु

अब समय बदल गया है और आप जैसे शिक्षित भारतीय परलोक-विद्या में अनुराग ले रहे हैं और अपने अनुसन्धानों से जनता को लाभ पहुँचा रहे हैं। यह बड़े सुख और सन्तोष की बात है।

"मैं ऐसे कार्यों को अत्यन्त मूल्यवान् समझता हूँ, क्योंकि मेरा विश्वास है कि भविष्य में मानव-जाति का धर्म केवल अंध-श्रद्धा और अंध-विश्वास पर नहीं रहेगा, किन्तु वैज्ञानिक सत्य पर इसका आधार रहेगा और यह काम परलोक-विद्या से भली भाँति हो सकेगा।"

हम भी डाक्टर भिसे के इस कथन से सर्वथा सहमत हैं। हमारे धार्मिक विश्वासें के लिए प्रत्यक्ष प्रमाणों का आधार बड़ा सहायक होगा। परलोक-विद्या के प्रचार से वे लोग धर्म पर विश्वास करने लगेंगे जो अभी धर्म को केवल ढकोसला समझते हैं और जो लोग धर्म पर आस्था रखते हैं, उनका विश्वास इसके प्रयोगों से अधिकाधिक दृढ़ होगा।

धार्मिक एकता

इससे भी अधिक परलोक-विद्या से एक बड़ा लाभ यह हो सकेगा कि इस समय जो विभिन्न सम्प्रदायों में मतभेद और कटुता है, वह मिट जायगी। हम प्रत्यक्ष प्रमाणों से उन्हें यह सिद्ध कर सकेंगे कि आप जिस अंध विश्वास को मान रहे हैं, वह वास्तव में ठीक है या नहीं, इसे पहले अनुभव कर लीजिए। इस सम्बन्ध में हम एक उदाहरण देते हैं। पटने के प्रसिद्ध कांग्रेस कार्यकर्त्ता स्वर्गीय मज़हरुल हक़ से हमारी एक बार पटने में भेंट हुई थी। उनके पुत्र का परलोकवास हो गया था। इसलिए वे परलोक-विद्या में अनुराग रखते थे। एक बार प्रयोग के समय उन्होंने अपने परलोकगत पुत्र से पूछा,—"पुनर्जन्म के सम्बन्ध में तुम्हारा क्या कहना है!" लड़के ने उत्तर दिया कि "पिताजी, जीवित अवस्था में मैं पुनर्जन्म पर विश्वास नहीं करता था, किन्तु यहाँ तो मैं प्रत्यक्ष देखता हूँ कि हमारे लोक की कितनी ही आत्माएँ आपके लोक में आती हैं। इसलिए अब मैं पुनर्जन्म पर विश्वास करने लगा हूँ।" जब इस प्रकार

के प्रमाण लोगों को स्वतः मिलेंगे तो उन्हें ये सब तत्त्व सहज ही हृदयङ्गम हो सकेंगे। किसी भी मुसल्मान को कितनी भी युक्ति से यह समझाया जाय कि पुनर्जन्म होता है, तो वह इसे कदापि स्वीकार नहीं करेगा; किन्तु जब उसी के हाथ से उसके किसी परलोकगत आत्मा का ऐसा संदेश प्राप्त हो जायगा तो उसे विवश होकर यह सत्य स्वीकार करना होगा। इसलिए परलोक-विद्या विभिन्न धर्मों की एकता स्थापित करने में बड़ी सहायक है। प्रसिद्ध परलोक-विद्या-विशारद स्वर्गीय सर कोनन डाइल ने हमें एक पत्र में लिखा था—"परलोक-विद्या न केवल युरोप और भारत को ही एकता के सूत्र में पिरोयेगी, वरन् यह हिन्दू-मुसलमानों को भी एकता के सूत्र में बाँध सकेगी।"

कितने ही देशों में इसे सार्वभौमिक धर्म माना जाता है और इसलिए वे इसके प्रचार में लगे हुए हैं। केवल इँगलेण्ड में ही परलोक-विद्या की ५०० से भी अधिक संस्थाएँ काम कर रही हैं। इस दृष्टि से भारत में इस ज्ञान की कितनी अधिक आवश्यकता है, इसका सहज ही अनुमान हो सकता है।

व्यावहारिक उपयोगिता

परलोक-विद्या की आध्यात्मिक उपयोगिता ऊपर बताई जा चुकी है। अब हम उसकी व्यावहारिक उपयोगिता पर भी कुछ प्रकाश डालना चाहते हैं। कुछ लोग यह कहेंगे कि हमें आध्यात्मिक उन्नति की इच्छा नहीं है, यदि इससे हमारा व्यावहारिक रूप से लाभ हो सकता हो तो आप बताइए। कुछ लोग परलोक-विद्या के प्रयोग केवल इसलिए करते हैं, कि उन्हें गड़ा हुआ धन मिल जाय, या सट्टे में तेज़ी मन्दी मालूम हो जाय, लाटरी का नम्बर मालूम हो जाय आदि। हम यहाँ यह बात स्पष्ट रूप से बता देना चाहते हैं कि परलोकगत आत्माओं से ऐसे प्रश्न कदापि नहीं करने चाहिएँ। सर्वप्रथम वे ऐसे प्रश्नों का उत्तर ही नहीं देतीं। यदि उत्तर मिला भी तो ऊटपटांग मिलेगा। परलोकगत आत्माओं से

धन-सम्बन्धी प्रश्न नहीं करना चाहिए। इससे उन्हें आघात पहुँचता है और वे समझती हैं कि हमारा आह्वान केवल धन-प्राप्ति के निमित्त किया गया है, इसलिए वे आह्वान करनेवाले के प्रति नाराज़ हो जाती हैं। इसी भाँति भविष्य की बात भी आत्माओं से नहीं पूछना चाहिए। वे भविष्य नहीं बता सकतीं। यदि कोई आत्मा भविष्य बताये तो उस पर विश्वास नहीं करना चाहिए। प्रसिद्ध परलोक-विद्या-विशारद एलन कार्डेक अपनी 'The Medium Book' में लिखते हैं—"प्रश्न होता है, क्या आत्माएँ भविष्य बता सकती हैं? इसका उत्तर यह है कि यदि मनुष्य भविष्य को देख सके तो वह अपने वर्त्तमान की उपेक्षा करने लगेगा। फिर भी आप लोग भविष्य के सम्बन्ध में ही उत्तर प्राप्त करने का यत्न किया करते हैं। किन्तु ऐसे प्रश्न करना ठीक नहीं है। आत्माएँ भविष्य नहीं बता सकतीं। यदि आप भविष्य के सम्बन्ध में अवश्य ही उत्तर प्राप्त करना चाहते हैं तो आपको उत्तर मिल जायेगा। ऐसे उत्तर धोखा देनेवाली आत्माएँ आपको दे देंगी। किन्तु प्रश्न होता है कि कभी-कभी आत्माएँ स्वतः भविष्य की बातें बता जाती हैं और वे सत्य भी होती हैं—ऐसा क्यों होता है? इसका उत्तर यह है कि कुछ ऐसी घटनाएँ हो सकती हैं, जिन्हें आत्माएँ देख सकती हैं और वे उन्हें बता देने में लाभ समझती हैं, किन्तु भविष्य के कथन पर विश्वास नहीं करना चाहिए। भविष्य की बातें प्रायः धोखा देनेवाली आत्माएँ कहती हैं—इसमें उन्हें आनन्द आता है। प्रश्न—किस प्रकार की भविष्यवाणियों को व्यापक रूप से न मानना चाहिए? व्यक्तिगत सम्बन्ध की समस्त भविष्यवाणियों पर कभी विश्वास नहीं करना चाहिए। यदि जनसाधारण के हित की कोई भविष्यवाणी हो तो उसे मान लेना चाहिए। प्रश्न—आत्माएँ स्वतः ऐसी भविष्यवाणी क्यों करती हैं जो सत्य नहीं होती? उत्तर—इसका मुख्य उद्देश्य उनका मनोरञ्जन है। वे देखती हैं, कि आप उनके उत्तर से कैसे सन्तुष्ट या चकित होते हैं। कभी-कभी वे झूठी भविष्य वाणियाँ करके आपकी बुद्धि की भी परीक्षा करती हैं। प्रश्न—

आत्माएँ किसी होनेवाली घटना की भविष्यवाणी तो कर देती हैं, किन्तु उनकी तिथि नहीं बतातीं। इसका कारण क्या है? वे बता नहीं सकतीं या बताना नहीं चाहतीं? उत्तर—इसके दोनों कारण हो सकते हैं। आत्माओं को कभी-कभी कोई घटना होनेवाली जान पड़ती है और वे उससे आपको सावधान कर देना चाहती हैं। किन्तु वे तिथि इसलिए नहीं बतातीं कि उन्हें ऐसी तिथि बताने की आज्ञा नहीं होती और कभी ऐसा भी होता है कि उन्हें स्वयं ऐसी तिथि मालूम नहीं होती। होने-वाली घटना का उन्हें आभास तो हो जाता है, किन्तु वे उसका ठीक समय नहीं जान सकतीं—उसे तो सर्वशक्तिमान् ईश्वर ही जान सकता है।

उपर्युक्त अवतरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि आत्माएँ भविष्य-वाणी नहीं कर सकतीं, उनसे भविष्य सम्बन्धी बातें नहीं पूछना चाहिए। किन्तु कुछ ऐसे भी उदाहरण हैं जिनसे यह प्रकट होता है कि आत्माएँ भविष्य की बातें बताती हैं। समय भी निर्धारित कर देती और वे सत्य प्रमाणित हुई हैं। इस सम्बन्ध में हम Annals of Psychical Science से एक अवतरण देते हैं। क्रामवेल एफ० वार्ले ने Diali-ctical Society on Spiriturlism के सामने अपने अनुभव बताते हुए कहा—"मेरी स्त्री की छाती में कोई रोग हो गया। उससे वह इतनी अधिक अशक्त हो गई कि दिन भर में १०-२० श्वास ले सकती थी। डाक्टरों ने कह दिया था कि यह तीन मास से अधिक जीवित नहीं रह सकेगी। एक दिन उसने अचेतन अवस्था में मुझसे कहा—"यदि आप उसके लिए सावधान न रहेंगे तो वह चल बसेगी।" मैंने पूछा—'वह कौन?' मेरी स्त्री ने उसी अचेतन अवस्था में कहा—'वह; अर्थात् आपकी पत्नी।' मैंने पूछा—'तो आप कौन हैं?' उत्तर मिला—'हम कई आत्माएँ हैं—एक नहीं हैं। यदि आप हमारे कहने के अनुसार करें तो हम इसे अच्छा कर सकते हैं। इसकी छाती में तीन फोड़े निकलेंगे। एक आज के १०वें दिन, ५ बजकर ३६ मिनट पर फूट जायगा। उस समय आपके पास अमुक-अमुक औषधियाँ रहनी चाहिएँ।

आपके साथ कोई दूसरा आदमी न रहना चाहिए। यदि वह किसी अन्य व्यक्ति को देखेगी तो उसे बड़ा आघात पहुँचेगा। आप हमारी यह बात भी उसे न बतावें, अन्यथा वह इसके आघात से मर जायगी।' १०वें दिन मैं अपने घर ज़रा जल्दी चला गया। मैंने अपनी घड़ी को ग्रीनविच टाइम से ठीक मिला लिया और ठीक ५ बजकर ३६ मिनट पर वह एकाएक ज़ोर से चिल्लाई। पूर्व भविष्य-वाणी के अनुसार उसका फोड़ा फूट गया। इत्यादि।"

इस अवतरण में हम दोनों बातें देखते हैं। यह कि आत्माएँ भविष्य-वाणी भी कर सकती और मनुष्य का हित भी कर सकती हैं। भविष्य की कितनी ही बातें वे अनुमान से भी कह देती हैं और वे सत्य निकलती हैं। आत्माएँ परलोक से अपने कुटुम्बियों का अनेक रूप से हित करती हैं। कुछ ऐसी दयालु आत्माएँ भी हैं जो सर्वसाधारण का भी हित करती हैं। एक उदाहरण हम अपने परलोक-विद्या-मण्डल के सदस्य और श्री वेङ्कटेश्वर-समाचारपत्र के सहकारी सम्पादक श्री विश्वेश्वरदयाल गुप्त का देते हैं। ये हमारे यहाँ प्रयोग देखने आते थे। हमने एक-दो बार इन्हें प्रयोग में भी सम्मिलित किया, किन्तु इनकी बुलाई हुई कोई आत्मा नहीं आई। चौथी बार इनकी कोई आत्मा आई। नाम पूछने पर उन्होंने अपने पिता का नाम लिखा। इसके बाद उनकी माता के आगमन की सूचना दी गई। माँ कुछ सन्देश देना चाहती, किन्तु हमने उस दिन अधिक लिखने से मना किया। इस पर वे अपने घर पर अकेले ही लिखते रहे। एक रात में उन्होंने कोई ४४ फुल्सकेप के पृष्ठ लिखे। हमें भी आश्चर्य हुआ। हमने उन्हें सलाह दी कि इतनी तेज़ी से और इतना मत लिखो, फिर भी वे लिखते रहे। उनकी माता ने उन्हें विवाह कर वंश चलाने का सन्देश दिया। हमें इस सन्देश पर ज़रा भी शङ्का नहीं हुई क्योंकि प्रायः आत्माएँ ऐसे सन्देश देती रहती हैं। उस समय श्री विश्वे-श्वरदयाल इस सन्देश को मानने को तैयार नहीं थे, किन्तु बाद में उनका विवाह हुआ और अब वे सपरिवार हैं। उनके बाल-बच्चे भी हो गये हैं।

इस घटना से यह सिद्ध होता है कि आत्माएँ अपने परिवार का कितना हित चाहती हैं और उसमें सहायता करती हैं। परलोकगत आत्माएँ मनुष्य को अपने दैनिक जीवन में परामर्श दे सकती हैं। जिस भाँति बड़े-बूढ़े लोगों की सलाह ली जाती है, उसी भाँति आत्माओं से भी सलाह ले सकते हैं और वे हमें ऐसी उत्तम सलाह देंगी जो हमारे लिए अत्यन्त उपयोगी है। इसके अतिरिक्त आत्माएँ अन्य रूप से भी सहायता करती हैं। विलायत में आइरीन नाम की एक महिला की हत्या हुई, किन्तु उसके हत्यारों का पता नहीं लगा। अन्त में परलोक-विद्यावादियों ने आइरीन की आत्मा को बुलाकर उससे हत्यारों का पता पूछा। आत्मा ने उन्हें सब हत्यारों का पूरा पता बताया और हत्या का विवरण भी दिया है। इसके आधार पर वहाँ की पुलिस ने हत्यारों का पता लगा लिया। अँगरेज़ी में इस नाम की एक पुस्तक प्रकाशित हुई है जिसमें इस घटना का सविस्तर वर्णन है। जर्मनी में तो पुलिस हत्यारों का पता लगाने के लिए इस विद्या से काम लेती है। सन् १६०६ के Annals of Psychical Science से हम एक घटना का उल्लेख करते हैं। जर्मन की राजधानी बरलिन में अन्ना रोथे का मुक़दमा चल रहा था। उसके सम्बन्ध में लन्दन के 'डेली मेल' को निम्नलिखित तार २५वीं दिसम्बर को प्राप्त हुआ—"परलोकवादी जासूस—हाल में पुलिस ने अपराधों के जो अङ्क प्रकाशित किये हैं, उनसे प्रकट होता है कि बरलिन में ऐसे अपराध बहुतायत से होते हैं, जिनका पता नहीं लग पाता। अब जर्मनी की पुलिस परलोक-विद्या की सहायता से भी अपराधों का पता लगाती है। इसके लिए जर्मन सम्राट् के परमप्रिय पात्र केप्टन एगबर्ट नियुक्त हुए हैं। कहते हैं कि सम्राट् की कृपा उन पर इसी लिए अधिक है कि वे परलोक-विद्या के माननेवाले हैं।" इससे इस विद्या की उपयोगिता इस दिशा में भी प्रकट होती है।

कोयमबटूर में एक चिकित्सालय खोला गया है जिसमें आत्माओं के आदेश से रोगियों की चिकित्सा की जाती है। डोरा स्वामी ने Life of

Ram Ram नामक एक पुस्तक लिखी है। एक आर० नामक डाक्टर की आत्मा ने राम-राम का परिचय-सूचक सन्देश निम्नलिखित रूप से दिया है—

"राम-राम एक बड़े ऋषि और चिकित्सक हैं। ये आपके लोक में कई शताब्दी पहले हुए थे, जब आपके यहाँ धार्मिक राजा हुआ करते थे और उनके दरबार में बड़े-बड़े पण्डित रहते थे। राम-राम पाटलिपुत्र के महाराज अशोक के चिकित्सक थे। इन्होंने एक बार अशोक को एक बड़े सङ्कट से बचाया था। तब से राजा ने राम-राम को अपना व्यक्तिगत चिकित्सक बना लिया था। अब उनकी इच्छा इस लोक के लोगों की चिकित्सा करने की है। वे एक चिकित्सालय खोलना चाहते हैं। उनका कहना है कि यह समय इसके लिए उपयुक्त है।" इसके बाद वहाँ एक चिकित्सालय खोला गया है जिसमें अनेक रोगियों का इलाज हुआ है। ऐसे रोगियों के इलाज की रिपोर्ट हमारे पास समय-समय पर आती रहती है। हाल की रिपोर्ट से हम दो-एक रोगियों का वर्णन प्रकट करते हैं। कालीकट के सब-कोर्ट के क्लर्क के० गोपालन नायर ४ थी अगस्त सन १६४० को लिखते हैं—

"मैं गत २५ वर्ष से दमे के रोग से पीड़ित था...सब प्रकार की औषधियाँ करके निराश हो गया था।" राम-राम ने उन्हें एक जप बताया और कुछ औषधि बताई। इसके बाद २२वीं अगस्त को उनका दूसरा पत्र आया जिसमें लिखा है—"मेरा स्वास्थ्य बड़ी द्रुत गति से सँभल रहा है और मुझे आशा है कि राम-राम की कृपा से मुझे पूर्ण आरोग्य प्राप्त हो जायगा।" इसके बाद ४ अक्तोबर को एक पत्र आया जिसमें लिखा है—"मेरा स्वास्थ्य अब बहुत कुछ सँभल गया है और मेरे इष्ट-मित्र मेरी इस स्वास्थ्य-वृद्धि को देखकर आश्चर्य चकित हैं। आज-कल लोग इसी की चर्चा करते हैं।" एक दूसरा रोगी मीनाक्षी नामक एक १२ वर्ष की लड़की है। सेकेण्ड ट्रेनिङ्ग स्कूल में पढ़ती है। वह अचेत हो जाती थी। उसकी चिकित्सा भी राम-राम ने की और अब उसे दौरा नहीं होता। इस प्रकार के कितने ही रोगियों की रिपोर्ट है।

अज्ञात प्रदेश का ज्ञान

ये सब बातें बताने पर भी बहुत से लोग ऐसे हैं जो परलोक के विषय में कुछ भी ज्ञान प्राप्त नहीं करना चाहते। हमें जब किसी अज्ञात देश की यात्रा करनी होती है तो हम उसके सम्बन्ध में पहले से ही जितना ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं, उतना कर लेते हैं। किन्तु जिस देश में सब लोगों को देर-सवेर में अवश्य ही जाना है, उसके विषय में हम कुछ भी ज्ञान प्राप्त न करें और उसके प्रति उपेक्षा दिखाते रहें, क्या यह उचित है? जो लोग परलोक-विद्या का पहले से ही ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं, उन्हें परलोक में कोई भ्रम नहीं होता। किन्तु जो लोग इसके विषय में अज्ञानी रहते हैं, उनकी वही गति होती है जो एक अजान व्यक्ति की बड़े नगर में। हमने एक बार एक देवसमाजी की आत्मा को बुलाया। उसने अपने सन्देश में यही बात कही कि मुझे यहाँ ज़रा भी आश्चर्य-चकित नहीं होना पड़ा। मैं इस अवस्था को पहले से ही जानता था। किन्तु जो नहीं जानते, उन्हें इस सम्बन्ध में कैसी विचित्र अवस्था का अनुभव होता है, यह एलन कार्डेक की पुस्तक 'Heaven and Hell' के निम्नलिखित अवतरण से प्रकट होगा। आप लिखते हैं—"जब मनुष्य इस मृत्युलोक को छोड़कर सूक्ष्म शरीर में आता है तो उसकी मानसिक स्थिति चक्कर में पड़ जाती है। जब आत्मा शरीर को छोड़ती है तो थोड़े समय के लिए उसकी ज्ञान-शक्ति अचेतन हो जाती है। ऐसी बहुत थोड़ी आत्माएँ होंगी जो शरीरत्याग करते समय भी ज्ञान में रहती हों। इसलिए मरने के समय अचेतन अवस्था एक साधारण बात है। किन्तु यह अचेतन अवस्था विभिन्न प्राणियों में विभिन्न समय तक रहती है। किसी किसी की यह अवस्था केवल कुछ घण्टे तक ही रहती है और कुछ ऐसी भी आत्माएँ हैं, जिनकी यह अवस्था महीनों क्या वर्षों रहती है। जब यह अवस्था दूर हो जाती है तो मनुष्य अपने सूक्ष्म शरीर में यह अनुभव करता है कि मानों वह गहरी नींद के बाद उठा है। उस समय उसके विचार और ज्ञान धुँधली अवस्था में रहते हैं। उसे

वस्तुएँ भी धुँधली दिखाई देती हैं। किन्तु धीरे-धीरे उसे साफ़ दिखाई देने लगती हैं। उसमें पूर्वस्मृति उदित होती है। किन्तु यह जागृति भी विभिन्न रूप की होती है। कुछ लोग जब ज्ञान में आते हैं तब उन्हें हर्ष होता है, किन्तु कुछ लोग भय और चिन्ता से उसी भाँति दुखी होते हैं जिस भाँति कोई मनुष्य बुरा स्वप्न देखकर दुखी होता है।" इससे पाठक यह सहज ही अनुमान कर सकेंगे कि जो लोग इस ज्ञान से रहित हैं उनकी परलोक में क्या गति होती है।

स्मारक और आत्मा

हम इस सम्बन्ध में एक बात और लिखना चाहते हैं। अनेक लोग अपने प्रियजनों की स्मृति में मन्दिर, मसजिद बनवाते हैं, स्मारक आदि बनवाते हैं। किन्तु वे यह जानने का यत्न नहीं करते कि उस मृत व्यक्ति की क्या इच्छा है। क्या उसकी आत्मा को उस स्मारक या मन्दिर से सन्तोष होता है? हम अपने अनुभव का एक उदाहरण लिखते हैं। हम एक पारसी सज्जन के यहाँ परलोक-विद्या के प्रयोग करने गये थे। उक्त पारसी का लड़का परलोकगत हो गया था। उसके पिता ने उसके चित्र पर से एक सुन्दर तैल-चित्र बनवाया था। जब उस लड़के की आत्मा का आह्वान किया गया तो उससे पूछा गया कि तुम्हारा यह चित्र बनवाया है—क्या तुम्हें इससे सन्तोष है? लड़के ने उत्तर दिया—"इसमें केवल रङ्ग है। इससे मुझे कैसे सन्तोष होगा?" इसी भाँति सर ओलीवर लाज ने अपने पुत्र रेमण्ड की आत्मा से पूछा—"हम तुम्हारी क़ब्र पर एक सङ्गमर्मर का पत्थर लगाना चाहते हैं जिससे तुम्हारी स्मृति बनी रहे। क्या इससे तुम्हें सन्तोष होगा?" रेमण्ड की आत्मा ने उत्तर दिया—"पिताजी, आप भले ही ऐसा पत्थर मेरी क़ब्र पर लगवा दें, किन्तु मैं अब उस क़ब्र में नहीं हूँ। मैं तो आपके पास खड़ा हूँ। मुझे जितना आपसे बात करके सन्तोष

होता है, उतना ऐसे पत्थर से नहीं होगा।" इसलिए आत्माओं की इच्छा जानने के लिए परलोक-विद्या के प्रयोग करना आवश्यक है।

आह्वान से क्या बाधा पड़ती है ?

कुछ लोग यह समझते हैं कि यदि हम अपने परलोकगत व्यक्ति की आत्मा को बुलायेंगे तो इससे उन्हें कष्ट होगा या उनकी प्रगति में बाधा पड़ेगी। किन्तु यह विचार भ्रम मूलक है। आत्माओं के संदेशों से यह स्पष्ट हो गया है कि उन्हें आह्वान करने से कोई कष्ट नहीं होता, किन्तु इसके विपरीत वे अत्यन्त हर्षित होती हैं और हमारे कार्यों में सहायता करती हैं। साथ ही जो आत्माएँ नहीं आना चाहतीं वे बुलाने से भी नहीं आतीं और आ भी गईं तो यही संदेश देंगी कि हमें मत बुलाया करो। हमने यह भी देखा है कि हम जब किसी आत्मा को बुलाते हैं तो उसके साथ और भी कितनी ही आत्माएँ आ जाती हैं। यदि अवसर मिला और साधन हुए तो वे बात भी करती हैं। इससे स्पष्ट होता है कि उनकी अपनी इच्छा बात करने की रहती है। इस-लिए यह समझना भूल होगी कि आत्माओं को आह्वान करने से उन्हें कष्ट होता है, या बाधा पड़ती या उनकी प्रगति में किसी प्रकार का विक्षेप होता है। इसके विपरीत उन्हें यहाँ से भी अपनी उन्नति में कुछ सहायता मिलती है, जिसे हम परलोक की झाँकी के परिच्छेद में आगे बतायेंगे।

हमने इस परिच्छेद को इसी लिए अधिक विस्तार के साथ लिखा है जिससे जनसाधारण को यह ज्ञान हो जाय कि परलोक विद्या से हमें कितने लाभ हो सकते हैं। ऐसे उपयोगी ज्ञान के विषय में हमारे देशवासी उदासीन हैं, इससे हमें बड़ा खेद होता है। जहाँ जीवन के विभिन्न विभागों के लिए अनेक प्रकार के विज्ञान और कला-कौशल की उन्नति की जा रही है, वहाँ इस विज्ञान के प्रति ऐसा दुर्भाव या दुर्लक्ष्य होना अवश्य ही दुर्भाग्य और अत्यन्त दुःख की बात है। इसकी उपयोगिता विभिन्न दृष्टियों से हमने स्थापित कर दी है। अनेक दिशाओं

में इसका व्यवहार हो सकता है। हम अपने देशवासियों से सानुरोध यह अपील करेंगे कि इस विद्या की ओर लक्ष्य देकर इसकी भी उसी भाँति उन्नति की जाय, जिस भाँति अन्य विज्ञान की की जा रही है। यह विद्या किसी से कम उपयोगी नहीं है। इसकी उपयोगिता के विषय में हम और भी अधिक लिख सकते हैं, किन्तु विस्तार-भय से हमें इतने से ही सन्तोष करना पड़ता है। आशा है, देशवासी हमारे इस निवेदन पर अवश्य ध्यान देंगे।

चौथा परिच्छेद

माध्यम (Medium)

परलोक-विद्या की आवश्यकता बता देने के बाद अब हम परलोकगत आत्माओं से सम्बन्ध स्थापित करने के उपायों पर विचार करेंगे। परलोकगत आत्माओं से सम्बन्ध स्थापित करने के लिए तीन बातों की अत्यन्त आवश्यकता है—(१) प्रयोग करनेवाले लोगों की मनःस्थिति आत्मा से बात करने के लिए शुद्ध हो। उसमें किसी प्रकार का पक्षपात या अविश्वास न होना चाहिए। (२) माध्यम हो; इसके बिना प्रयोग कभी सफल नहीं हो सकता। जैसा कि हम पहले लिख चुके हैं कि ग्रहों की गति देखने के लिए जिस भाँति हमें दूरबीन की आवश्यकता है, उसी भाँति परलोकगत आत्माओं से बातचीत करने के लिए हमें माध्यम (Medium) की आवश्यकता है। (३) जिस आत्मा का आह्वान करना है, उसकी सहायता होनी चाहिए।

प्रयोग करनेवाले की मनःस्थिति यदि इसके अनुकूल नहीं है तो ऐसे प्रयोग या तो सम्पूर्ण रूप से असफल होते हैं अथवा उनमें पूर्ण सफलता नहीं मिलती। शुद्ध मनःस्थिति से हमारा यह अभिप्राय नहीं है कि कोई अन्ध-विश्वास कर ले, किन्तु Open mind या खुले हृदय से प्रयोग में सम्मिलित होना चाहिए। यदि पहले से ही यह कल्पना कर रक्खी है कि यह सब ढोंग या ठगी है तो प्रयोग सफल न होगा। जिस भाँति पानी में अपनी परछाईं देखने के लिए शान्त पानी चाहिए उसी भाँति आत्माओं से बात करने के लिए भी शान्त और शुद्ध मन चाहिए। जिस भाँति हिलते हुए पानी में अपना प्रतिबिम्ब नहीं दिखता, उसी भाँति अविश्वासी लोगों को भी परलोक-विद्या में अधिक सफलता नहीं मिल

सकती। यह पूछा जा सकता है कि जब यह विज्ञान है तो उसे प्रयोग कर सिद्ध क्यों न किया जाय, मनःस्थिति का इसमें क्या प्रश्न है? बात यों है कि परलोक-विज्ञान कोई भौतिक या यान्त्रिक विज्ञान नहीं है। यह आध्यात्मिक विज्ञान है। जब तक आप हृदय से, सच्चे मन से, शुद्ध भाव से आत्मा का आह्वान नहीं करेंगे, तब तक आपके बुलाये आत्मा नहीं आयेगी। शङ्कित हृदय से आत्मा का आह्वान हो ही नहीं सकता—इसमें अपनी आत्मा का सम्पर्क परलोकगत आत्मा से करना है। जब तक इसमें शुद्धता और वास्तविकता नहीं होगी, तब तक प्रयोग सफल नहीं हो सकेंगे। इसलिए बिना किसी शङ्का के शुद्ध हृदय से आत्मा का आह्वान करना चाहिए। प्रयोग करते समय आत्माओं के लिए कुछ सुगन्धित पुष्प या धूपबत्ती आदि भी हों तो इससे उन्हें बल मिलता है और प्रयोग में अधिक सफलता मिलती है। इसके विपरीत मनःस्थिति में यदि आत्मा आ भी जाय तो उसे अपना अस्तित्व प्रकट करने में या अपना सन्देश देने में बड़ी कठिनाई होती है। उसके लिए जिस वातावरण की आवश्यकता है, वह नहीं हो पाता। हमें ऐसे भी अनुभव हुए हैं कि लोगों ने हमारी परीक्षा करने के लिए कह दिया कि हम अपनी मौसी को आह्वान करना चाहते हैं। जब प्रयोग होने लगा तब हमसे कहा गया कि हमारी कोई मौसी है ही नहीं। इस प्रकार के लोग स्वतः अपने को धोखा देते हैं। इससे परलोक-विद्या झूठी नहीं हो सकती। किन्तु उनकी मनःस्थिति का पता लगता है।

माध्यम की पहचान

दूसरे परिच्छेद में हमने माध्यम की परिभाषा करते हुए लिखा है कि माध्यम वह व्यक्ति है, जिसके द्वारा परलोकगत आत्मा का अस्तित्व प्रकट हो सके या वह व्यक्ति जो परलोकगत आत्माओं के भावों को ग्रहण कर सके। माध्यम की शक्ति जानने के लिए अभी तक आधुनिक विज्ञान में ऐसा कोई साधन नहीं मिल सका जिससे यह मालूम हो सके कि अमुक व्यक्ति

में यह शक्ति है या नहीं और यदि है तो कितनी मात्रा में ? यों तो प्राय: सब लोगों में थोड़ी-बहुत मात्रा में यह शक्ति विद्यमान है, किन्तु जब तक वह इतनी मात्रा में न हो कि उससे आत्मा का अस्तित्व या उसका भाव प्रकट किया जा सके तब तक उसका उपयोग नहीं हो सकता। माध्यम की शक्ति स्त्री और पुरुष दोनों में होता है। इसके लिए आयु, स्वभाव या वृत्ति Status का कोई प्रश्न नहीं है। कभी-कभी माध्यम हमें ऐसे वर्ग में भी मिल जाते हैं जिनका सामाजिक स्थान बहुत ऊँचा नहीं है। कहने का तात्पर्य यह है कि माध्यम को पहचान लेने का कोई साधन नहीं है। संयोग से अथवा प्रयोग से ही उनकी माध्यम-शक्ति का पता लग सकता है। यूरोप में संयोग से कितने ही ऐसे माध्यम मिल गये हैं, जिनके लिए आज सारा संसार अभिमान कर सकता है। ऐसे ही माध्यमों के कारण आज यूरोप के बड़े-बड़े वैज्ञानिक इस परलोक-विद्या पर विश्वास करने लगे हैं। ऐसे माध्यमों में से कुछ का परिचय हम अपने पाठकों को भी करा देना चाहते हैं।

श्रीमती यूसेपिया पलाडिनो

श्रीमती यूसेपिया पलाडिनो यूरोप की सबसे प्रसिद्ध माध्यम हो गई है। आपकी माध्यम-शक्ति ने बड़े-बड़े नास्तिकों और अविश्वासी लोगों को परलोक-विद्या का विश्वासी बना दिया है। आप नेपल्स के एक परिवार में भोजन परोसने का काम करती थीं। किसी को यह अनुमान भी नहीं था कि इस साधारण स्त्री में इतनी बड़ी शक्ति छिपी हुई है। दैवयोग से उस परिवार के यहाँ कुछ परलोक-विद्या-विशारद आकर ठहरे और उन्होंने अपने प्रयोग करने आरम्भ किये। एक बार यह निश्चय हुआ कि परिवार की इस नौकरनी मिसेज़ पिलाडिनो को भी प्रयोग में सम्मिलित कर लिया जाय। इस निश्चय के अनुसार उसे प्रयोग में सम्मिलित किया गया। उस दिन के प्रयोग इतने अधिक सफल हुए कि परलोक-विद्या-विशारद स्वयं चकित रह गये। अन्त में उन्हें मालुम

हुआ कि प्रयोगों की यह सफलता श्रीमती यूसेपिया के कारण हुई है। इसके बाद तो यूसेपिया को माध्यम बनाकर बड़े-बड़े प्रयोग किये गये और यूरोप में उसकी धूम मच गई। उसके प्रयोगों की सफलता पर कितनी ही पुस्तकें लिखी गईं। इटली के प्रोफ़ेसर एनरिको मोरसेली पहले इस विद्या पर अविश्वास करते थे। उन्होंने कुछ प्रयोग यूसेपिया के साथ किये और Annals of Psychical Science में लिखा है—"मैं वर्षों से माध्यम के प्रश्न पर विचार और प्रयोग कर रहा था। आज मेरे ये प्रयोग पूरे हुए और अब मैं निःसंकोच भाव से और पूर्ण विश्वास से यह बात प्रकट करता हूँ कि यूसेपिया की माध्यम-शक्ति सबसे अधिक मात्रा में वास्तविक है, सत्य है। यह हो सकता है कि कुछ प्रयोगों में उसकी कुछ बातें मिथ्या हो जायँ, किन्तु एक निष्पक्ष व्यक्ति और अध्यात्म-विद्या के विद्यार्थी की प्रयोग-कसौटी पर जो बातें सत्य प्रमाणित हो गई हैं, उन्हें अवश्य ही स्वीकार कर लेना चाहिए।" इसी भाँति इटली के एक दूसरे प्रोफ़ेसर लोम्ब्राजो ने इसी माध्यम के प्रयोगों की परीक्षा की। सन् १८९१ ई० के मार्च मास में नेपल्स नगर में निम्नलिखित प्रोफ़ेसरों के साथ यूसेपिया के प्रयोग हुए;—प्रो० टेमबुरिनी, प्रो विर्ञ्ची और प्रोफ़ेसर विजिओली तथा डाक्टर एसेञ्जी, डा० पेएटा, डा० लेमनसे ली, डा० गिगली और चिलोफी। प्रयोग के समय सब प्रकार की सावधानी कर ली गई थी, जिससे कोई धोखे की बात न रहे। प्रोफ़ेसर लोम्ब्राजो ने स्वयं प्रयोग का स्थान आदि नियत किया था तथा समय और दिन भी उन्होंने ही नियत किया था। उन्होंने अपनी ओर से सन्देह रहने के लिए कोई बात नहीं छोड़ी थी, किन्तु फिर भी प्रयोग इतना अधिक सफल हुआ कि प्रोफ़ेसर लोम्ब्रोजो ने एक पत्र के रिपोर्टर के पास निम्नलिखित पत्र भेजा—

"अभी तक मैं परलोकगत आत्माओं की घटनाओं का जिस दृढ़तापूर्वक विरोध करता था, उसके लिए मैं अत्यन्त लज्जित और अत्यन्त दुखी हूँ। मैं सत्य बातों को माननेवाला हूँ और परलोक-विद्या में सत्य है।

इसके सिद्धान्तों से भले ही मेरा मतभेद हो, किन्तु मैं मानता हूँ कि इसमें सत्य है।"

इस पत्र के प्रकाशित होते ही वैज्ञानिक-संसार में धूम मच गई। न केवल इटली के दैनिक, साप्ताहिक और मासिक पत्रों में इसकी चर्चा होने लगी, वरन् यूरोप के अन्य देशों के पत्रों में भी इसकी चर्चा होनी आरम्भ हो गई। साइकिकल विद्या के एक बड़े विद्वान् एलेकज़ेण्डर अक्समकाफ ने जब यह पत्र पढ़ा तो उन्होंने चिया नामक एक विद्वान् को लिखा— "लोम्ब्रोजो ने जो आत्मग्लानि प्रकट की है, उसमें भी उनकी महत्ता प्रकट होती है।"

इसके बाद तो यूसेपिया को बड़ा मान मिलने लगा और परलोक-विद्या के बड़े-बड़े प्रयोगों में वह जाने लगी। उसकी फ़ीस भी धीरे-धीरे बढ़ने लगी। एक साधारण नौकरानी से बढ़कर अब वह एक प्रसिद्ध माध्यम हो गई थी। एक बार उसे रूस के एक धनी व्यापारी ने १००० रूबल, ५ बार की बैठक (Seance) के लिए, देना स्वीकार किया था। वहाँ भी उसके प्रयोग बड़े सफल हुए। यूसेपिया ने इसके बाद यूरोप अमेरिका में ख़ूब भ्रमण किया और वहाँ के लोगों को अपने प्रयोगों से ख़ूब चकित किया।

मि० ममलर

इसी प्रकार अमेरिका के एक फोटोग्राफर मि० ममलर को यह मालूम नहीं था कि उनमें कोई माध्यमपन की शक्ति है। वे एक बार एक व्यक्ति का फोटो ले रहे थे कि फोटो में एक दूसरी आकृति आ गई। ये उस आकृति को देखकर बड़े चकित हुए और अपने ग्राहक से क्षमा-याचना करते हुए बोले—"महाशय, आपका यह फोटो तो बिगड़ गया। अब मुझे आपका एक दूसरा फोटो लेना होगा।" ग्राहक ने इनकी क्षमा-याचना के उत्तर में कहा—"ज़रा देखूँ तो सही, इसमें क्या बिगड़ गया है।" फोटो देखने पर ग्राहक ने पहचान लिया कि यह आकृति उसके

एक परलोकगत सम्बन्धी की है। तब से ममलर को यह मालूम हुआ कि उनमें माध्यम-शक्ति है। उन्होंने आत्माओं के फोटो-चित्र लेने में बड़ा यश प्राप्त किया।

ये दोनों उदाहरण हमने यह सिद्ध करने को दिये हैं कि माध्यम-शक्ति का अनुमान स्वयं माध्यम को भी नहीं होता। यह एक गुप्त शक्ति है, जो अनेक लोगों में छिपी रहती है। जब इसके प्रयोग किये जायँ तभी इस शक्ति का पता लगता है और उसका उपयोग हो सकता है।

माध्यमों के भेद

साधारणतया माध्यम दो प्रकार के होते हैं—(१) भौतिक माध्यम (Physical Mediums) और मानसिक (Mental Mediums)। जिन माध्यमों के द्वारा आत्माओं के प्रत्यक्ष दर्शन हो सकें (Materialization of Spirit), आत्माओं के फोटो लिये जा सकें, आत्माओं की आवाज़ सुन सकें (Direct Voice), वस्तु एक स्थान से दूसरे स्थान में बिना भौतिक साधन के आ-जा सके (Teleinesis), उन्हें भौतिक माध्यम (Physical Medium) कहते हैं। जिस माध्यम के द्वारा स्वयलेखन (Automatic Writing) हो, माध्यम को आत्माओं की आवाज़ सुनाई दे (Clairaudiance), माध्यम को आत्माएँ दृष्टि-गोचर हों (Clair Voyance), माध्यम अचेत होकर आत्माओं की बात कर सके (Trunce) उसे मानसिक (Mental Medium) कहेंगे।

हमने अपनी यूरोप-यात्रा में इन सबको अपने नेत्रों से देखा और कानों से सुना है। आत्माओं के प्रत्यक्ष दर्शन के प्रयोग हमने ग्लासगो, लन्दन और हेग में देखे हैं। हमारे साथ हमारे मित्र श्री साजमानी एडवोकेट (कराची) अन्तर्राष्ट्रीय परलोक-विद्या-परिषद् में सम्मिलित होने विलायत गये थे। लन्दन में उनकी पत्नी का साक्षात्कार हुआ और ग्लासगो में उनकी स्वर्गीया माता का साक्षात्कार हुआ। ग्लासगो के

प्रयोग में मिसेज़ डङ्कन थीं और लन्दन के प्रयोगों में कितनी ही माध्यम थे। इनमें मिसेज़ लिली का नाम विशेष उल्लेखनीय है। हेग में भी हमने आत्माओं को साक्षात् देखा। यहाँ मिसेज़ सिङ्गलटन माध्यम थीं। लन्दन में हमने आत्माओं की आवाज़ (Direct Voice) अपने कानों से सुनी। प्रयोगों के समय एक बार मिस्टर फ़्रेङ्क डेकर भी थे और दूसरी बार मिस्टर राबर्टसन थे। इन माध्यमों के प्रयोग के समय एक वस्तु को इधर से उधर जाते हुए (Tele Kenisis) भी देखा। इसके अतिरिक्त आत्माओं के फोटो लेने के प्रयोग लन्दन में स्टेड ब्यूरो (Stead Bureau) में देखे। मिस स्टेड विलायत के प्रसिद्ध पत्र रिव्यू एण्ड ब्यूरो के परलोकगत सम्पादक मिस्टर डब्ल्यू० टी० स्टेड की पुत्री थीं। वही इस ब्यूरो का सञ्चालन करती थीं। आपके यहाँ कितने ही भौतिक माध्यमों का आगमन होता था। हमने मिसेज़ डीन के साथ प्रयोग किया था जिसमें हमारी स्वर्गस्थ पत्नी सुभद्रा का चित्र आया है। इनके अतिरिक्त फोटो के माध्यम (Physical Medium) मिस्टर होप, मिसेज़ बक्सटन, डाक्टर जान मेयर, मिसेज़ डोनोहो आदि भी वहाँ आते थे और नियमित रूप से प्रयोग होते रहते थे।

भौतिक माध्यमों के चमत्कारों से आधुनिक अविश्वासी लोग भी हैरान हैं और उन्हें येन-केन इस विद्या की सत्यता के सामने सिर झुकाना पड़ता है। इसका एक उदाहरण हम अपने पाठकों के सामने पेश करते हैं। मि० हेरी प्राइस अपनी पुस्तक Fifty Years of Psychical Research में लिखते हैं—"भौतिक माध्यम का प्रकरण समाप्त करने के पूर्व आत्मा के साक्षात्कार की एक घटना का उल्लेख कर देना चाहता हूँ। ऐसी घटना मैंने पहले कभी नहीं देखी थी और केवल एक ही बार देखी है।.........१५ दिसम्बर सन् १६३७ की घटना है कि एक शिक्षित महिला मुझसे मिलने आई। अपने आगमन का कारण बताते हुए उन्होने कहा कि 'लिस्नर' पत्र में आपका लेख पढ़कर मुझे इच्छा हुई है कि मैं आपसे मिलूँ। आपने रेडियो से घोषित किया है कि अमुक

घर में आप 'भूत' दिखा सकते हैं। मैं भी आपको भूत दिखाने का आमन्त्रण देने आई हूँ। उसने कहा कि हम लोग लन्दन के अमुक उपनगर में रहते हैं। प्रत्येक बुधवार को अपने घर में ही अपने परिवार के लोगों के साथ प्रयोग करते हैं। उसमें एक लड़की 'रोसेली' आती है। हम उसे ही आपको दिखाना चाहते हैं। उक्त महिला ने मुझसे यह भी कहा कि हमारे यहाँ प्रयोग में सम्मिलित होने के लिए कुछ शर्तें हैं, उनका आपको पालन करना होगा। शर्तें साधारण थीं। एक शर्त यह भी थी कि हमारा नाम प्रकट मत करना—प्रयोग का वर्णन भले ही करें, किन्तु स्थान और नाम प्रकट न करें। इससे हमारी रोसेली भयभीत हो जायगी। मैंने अपनी भी शर्तें पेश कीं जो उन्होंने स्वीकार कर लीं। इसके बाद १३वीं दिसम्बर को मैं टहलता हुआ उसके मकान पर पहुँचा। निश्चित हुआ कि १५वीं दिसम्बर को प्रयोग किया जायगा; उसमें मैं ठीक समय पर आ जाऊँगा।" इसके अनुसार मैं प्रयोग में सम्मिलित होने को समय के कुछ पूर्व ही चला गया। वहाँ उस महिला ने हमें उस लड़की रोसेली का इतिहास बताया और कहा कि इस लड़की के पिता गत महायुद्ध में मारे गये थे। वे अपने पीछे अपनी विधवा पत्नी और इस लड़की को छोड़ गये थे। सन् १९२१ में यह लड़की भी मर गई। लड़की की माता परलोकविद्या को माननेवाली है। सन् १९२५ में उसने निद्रा में सुना कि उसकी परलोकगत लड़की उसे 'माँ' कहकर पुकार रही है। यह घटना कितनी ही बार हुई। इसके बाद उसकी माता रात्रि में जागती रही और आवाज़ की प्रतीक्षा करने लगी। एक दिन लड़की की माँ ने अपना हाथ फैलाया और उस लड़की की आत्मा ने हाथ पकड़ लिया। इन घटनाओं के बाद यह निश्चय हुआ कि रोसेली की आत्मा को आने में सुविधा हो, इसके लिए प्रयोगों से बुलाया जावे। सन् १९२९ में रोसेली साक्षात् दिखाई दी। तभी से वह नित्य आती है। रोसेली जब आती तो कुछ बोलती नहीं थी। अपनी माता का हाथ पकड़ लिया करती थी। धीरे-धीरे प्रयोग के समय थोड़ा-थोड़ा प्रकाश

भी किया जाने लगा। अन्त में रोसेली बोलने भी लगी। प्रायः उसके उत्तर एकशब्दवाची होते थे—'हाँ' या 'नहीं'। इस प्रयोग में बाहर के लोगों को प्रविष्ट नहीं किया जाता था। मैं अपने साथ अपने एक मित्र को भी ले गया था। इसलिए जब प्रयोग में सम्मिलित होने का अवसर आया तब उक्त महिला ने मुझसे क्षमा माँगते हुए कहा कि हम दो अजान व्यक्तियों को प्रयोग में सम्मिलित नहीं कर सकते। उससे हमारी रोसेली डर जायगी। इस प्रयोग में बैठनेवाले एक दूसरे महाशय थे जो बैङ्क में क्लर्क थे। मैंने उक्त महिला से कह दिया था कि मैं अपनी ओर से ऐसी सब सावधानी करूँगा जिससे धोखे का कोई भय न रहे। इसलिए प्रयोग के कमरों को बन्द कर लिया गया। उनमें ताला लगाकर चाबी अपनी जेब के हवाले कर दी और इसी भाँति खिड़कियाँ भी बन्द कर दीं। धुआँ निकलने की चिमनी पर भी मैंने काग़ज़ रख दिया था। मुझे प्रयोग करनेवालों ने यहाँ तक अनुमति दे दी कि आप चाहें तो हमारे अङ्ग की भी तलाशी ले लें। इसके बाद मैंने उनके शरीर पर भी हाथ फेरकर देखा, किन्तु कोई छिपी हुई वस्तु नहीं जान पड़ी। इसके बाद बिजली की बत्तियाँ बन्द कर दी गईं। हमसे कहा गया—"सब लोग शान्त रहें।" ५ मिनट के बाद हमने उक्त महिला के मुँह से रोसेली की धीमी आवाज़ सुनी। इसके बाद यह रोसेली रोसेली की आवाज़ लगभग २० मिनट तक आती रही। प्रयोग में बैठी हुई महिलाएँ हिचकियाँ लेकर रोने लगीं। मुझसे यह बात पहले ही कह दी गई थी कि ये प्रयोग बिलकुल पवित्र भावना के हैं, किन्तु मुझे यह आशा न थी कि वहाँ उक्त महिलाएँ इस प्रकार रोने लगेंगी। कहाँ हमारे भौतिक विज्ञान के प्रयोग और कहाँ ये मानसिक भावना के प्रयोग थे। दोनो में कितना अधिक अन्तर है।

समय व्यतीत होता गया। घड़ी ने दस बजा दिये। उक्त महिला ने हिचकियाँ लेते-लेते कहा—"मेरी बच्ची!" इसके बाद वह महिला मेरी ओर झुककर बोली—"रोसेली आ गई है, कोई बोलना मत।" मैंने भी

देखा कि कोई चीज़ मेरे समीप आ गई है। मुझे अभी तक कुछ दिखाई तो नहीं देता था, किन्तु एक प्रकार की सुगन्ध आने लगी। इसके बाद मेरे घुटने पर किसी कोमल वस्तु का स्पर्श हुआ। महिला ने धीरे से कहा—'बेटी'। इसके बाद रोसेली की माता से पूछा गया कि क्या मैं इसे छू सकता हूँ। लड़की की माता ने उत्तर दिया कि छू सकते हो। मैंने लड़की के सिर पर हाथ फेरा। उसके चेहरे पर हाथ फेरते समय हाथों को कुछ उष्णता मालूम हुई। अवश्य ही इतनी उष्णता नहीं थी, जितनी कि साधारण मनुष्य के शरीर में होती है। मैंने उसे श्वास लेते हुए भी देखा। मैंने उसके सारे शरीर पर हाथ फेरा। वह ३ फ़ीट ७ इञ्च की होगी। इतने आकार की लड़की ६ वर्ष की हो सकती है। पूछने पर मालूम हुआ कि मृत्यु के समय वह छः वर्ष की ही थी। लोग यह कह सकते हैं कि यह नज़रबन्दी का खेल है। केवल धोखादेही है। किन्तु कैसी धोखादेही! ये ऊँचे घराने की महिलाएँ अपनी बच्ची को देखकर रोती हैं, क्या यह नाटक या सिनेमा में एक्टिङ्ग करती थी! ये आक्षेप कल्पनातीत हैं। इसके बाद मैंने रोसेली को फिर देखा। यदि यह आत्मा है तो आत्मा और जीवित व्यक्ति में कोई अन्तर नहीं है। मैंने अपने दाहिने हाथ से रोसेली का हाथ उठाया और उसकी नाड़ी देखी। उसके हृदय के पास अपना कान लगाकर सुना। हृदय की धड़कन की आवाज़ स्पष्ट सुनाई पड़ती थी। इसके बाद मैंने उक्त महिला से पूछा—क्या आप मुझे थोड़ा प्रकाश करने के लिए अनुमति देंगी? उन्होंने मुझे अनुमति दे दी। मैंने उसके कोमल चरण देखे। चरणों में धूल या मैलापन कुछ नहीं था। इसके बाद उसका चेहरा देखा। कितना सुन्दर था! इसके बाद हमें कहा गया कि अब यह प्रयोग समाप्त किया जाता है—क्योंकि रोसेली इसे बन्द करने को कह रही है। मैंने कहा कि मैं दो-चार प्रश्न करना चाहता हूँ। इसके लिए भी मुझे अनुमति मिल गई। मैंने अग्र-लिखित प्रश्न किये—

(१) रोसेली, तुम कहाँ रहती हो? (कोई उत्तर नहीं मिला।)

(२) वहाँ क्या करती हो? (कोई उत्तर नहीं मिला।)

(३) क्या तुम वहाँ अन्य बालकों के साथ खेलती हो? (कोई उत्तर नहीं मिला।)

(४) क्या तुम्हारे पास खेलने को खिलौने हैं? (उत्तर नहीं मिला)

(५) क्या वहाँ तुम्हारा कोई पालतू जानवर है? (उत्तर नहीं मिला)

इतने समय तक मैंने देखा कि रोसेली मेरी ओर ऐसे भाव से देख रही है कि मानों वह मेरे प्रश्नों को नहीं समझती। अन्त में मैंने पूछा – रोसेली, तुम अपनी माता से प्रेम करती हो? तुरन्त उस लड़की का मुँह खुला और बोली—'हाँ'। इस शब्द के निकलते ही उक्त महिला ने अपनी रोसेली को गले से लगा लिया। १५ मिनट के बाद रोसेली चली गई। इसके बाद प्रयोग समाप्त हुआ। रोशनी कर दी गई और देखा तो सब द्वार जैसे के तैसे बन्द थे। मैंने प्रयोग के समय कमरे में पाउडर डाल दिया था, जिससे यदि कोई आये तो उसके पद-चिह्न पाउडर पर आ जायँ। किन्तु कोई पद-चिह्न नहीं थे। दूसरे दिन मैंने इस घटना की रिपोर्ट लिखी और बताया कि क्या यह सब धोखा था या मज़ाक़ था। फिर धोखा या मज़ाक़ क्या वर्षों चलता रहेगा? रोसेली की माता रोती थी। क्या वह सब एक्टिङ्ग थी। ये ऐसे प्रश्न हैं जिन पर मैं विचार करता हूँ, किन्तु कोई उत्तर नहीं मिलता। इस प्रयोग में ईश्वर-प्रार्थना इत्यादि भी नहीं की गई थी। एक बात मैं नहीं कर सका। मुझे चाहिए था कि मैं उसके हाथ के अँगूठे की छाप भी ले लेता।"

इस एक विवरण को पढ़कर पाठक अनुमान कर सकेंगे कि आत्माओं के साक्षात्कार हो जाने पर बड़े-बड़े नास्तिकों को भी इस विद्या की सत्यता पर विश्वास करना पड़ता है। किन्तु ये सब चमत्कार तभी सम्भव हैं, जब उपयुक्त माध्यम हों। हमने यूसेपिया पेलाडिनो का वर्णन पिछले पृष्ठों में किया है। उनके सम्बन्ध में विलायत के साप्ताहिक पत्र 'Progressive Thinker' के ४थी अक्टूबर सन् १६४१ के अङ्क में

डाक्टर हेरेवर्ड केरिङ्गटन की पुस्तकों से कुछ अवतरण दिये गये हैं। डाक्टर केरिङ्गटन ने इस विद्या के अध्ययन में ४० वर्ष व्यतीत किये थे और कोई ३० पुस्तकें लिखी हैं। अपनी पुस्तक "Guide and Ideas" में वे यूसेपिया के विषय में लिखते हैं—"मैंने कुछ अवर्णनीय और असाधारण चमत्कार देखे हैं, जिनके विषय में मैं आज भी हैरान हूँ। एक बात का मुझे पूर्ण विश्वास है कि और चाहे जो कुछ हो, किन्तु वह सब धोखा नहीं था। इन चमत्कारों में सबसे अधिक महत्त्व के चमत्कार यूसेपिया पेलाडिनो की उपस्थिति में हुए हैं। ये घटनाएँ ऐसी थीं, जिन्हें मैं कभी नहीं भूल सकता। उनका मेरे चित्त पर ऐसा प्रभाव पड़ा है जो कभी नहीं मिट सकता। यूसेपिया पेलाडिनो एक किसान की अशिक्षित स्त्री थी। वह इतना ही पढ़ी थी, कि मुश्किल से अपना नाम भर लिख सकती थी। किन्तु उसमें ऐसी अद्भुत शक्तियाँ विद्यमान थीं, जिनका अध्ययन यूरोप के बड़े-बड़े वैज्ञानिकों ने २५ वर्षों तक किया। उसकी उपस्थिति में टेबिल अधर ऊपर उठ जाता था, खट खट की ज़ोरों से आवाज़ आती थी, वाद्य-यन्त्र स्वतः बजने लगते थे, दिनदहाड़े आत्माओं के शरीर या शरीर के कुछ भाग दिखने लगते थे और कुछ ही क्षण में वे अदृश्य हो जाते थे। कुछ लोग इन घटनाओं को 'असम्भव' कहते हैं। उनके इस असम्भव का उत्तर मैं प्रोफ़ेसर चार्ल्स के शब्दों में यों देता हूँ—'मैं यह नहीं कहता कि ये सब घटनाएँ सम्भव हैं, किन्तु यह कहता हूँ कि ये घटनाएँ बिलकुल सत्य हैं'।"

उपर्युक्त अवतरण से पाठकों को भौतिक माध्यमों की शक्ति का अनुमान हो सकेगा। भौतिक माध्यम की उपस्थिति में जितनी घटनाएं हो सकती हैं, उनका उल्लेख डाक्टर केरिङ्गटन ने कर दिया है। यदि हम अपने देश में इस विद्या के प्रयोग करें तो हमारे यहाँ भी ऐसे माध्यम मिल सकेंगे।

मानसिक माध्यम (Mental Medium)

अब हम मानसिक माध्यम (Mental Medium) का भी कुछ विस्तार के साथ उल्लेख करना चाहते हैं। इस प्रकार के माध्यम स्वयं-

लेखन (Automatic Writting) में अचेत होकर आत्मा के अधीन होकर संवाद करती हैं या आत्माओं की बातें सुनकर बताती हैं। ये आत्माओं को देख भी सकती हैं। हमें अपनी यूरोप-यात्रा में ऐसे अनेक माध्यमों को देखने का अवसर प्राप्त हुआ है। इन माध्यमों में स्वयंलेखनवाले माध्यम फ्रांस में अधिकता से हैं। अचेत होकर बातें करनेवाले माध्यम (Trance Medium) इँगलेण्ड में अधिक हैं।

स्वयंलेखन

स्वयंलेखन (Automatic Writting) आत्माओं के सन्देश प्राप्त करने का एक साधन है। स्वयंलेखन तीन प्रकार का होता है—(१) प्रेरणा-रहित माध्यम (Mechanical Medium) द्वारा, (२) अन्तर स्फूर्ति माध्यम द्वारा (Intuitive Medium) और (३) प्रेरित माध्यम द्वारा (Inspirational Medium)। इन माध्यमों की व्याख्या प्रसिद्ध परलोक-विद्या-विशारद एलन कार्डेक ने अपने ग्रन्थ "The Mediums' Book" में सविस्तर रूप से की है। माध्यमों के भेद और योग्यता के सम्बन्ध में उन्होंने यह बृहत् ग्रन्थ लिखकर माध्यमों का पथ-प्रदर्शन भी किया है। जो लोग माध्यम होने के योग्य हैं और अपनी शक्ति को बढ़ाना चाहते हैं उन्हें इस पुस्तक का अवश्य अध्ययन करना चाहिए। हम इसके आवश्यक अंशों का अनुवाद देते हैं। प्रेरणा-रहित (Mechanical) माध्यम की व्याख्या करते हुए आप लिखते हैं—"आत्माएँ अपने विचार माध्यम के लेखन से प्रकट कर सकती हैं। वह माध्यम के हाथ को अपना आधार बनाकर प्रत्यक्ष या अपरोक्ष रूप से लिखती है। जब आत्मा प्रत्यक्ष रूप से लिखती है तब वह माध्यम के हाथ को ऐसा धक्का देती है, जिससे अक्षर बनते जायँ और ये अक्षर या वाक्य ऐसे होते हैं, जो माध्यम की इच्छा या कल्पना में नहीं होते। ये अक्षर तब तक लिखे जाते हैं, जब तक वह अपना पूरा सन्देश नहीं दे चुकती। जब वह अपना सन्देश दे चुकती है, तब पेन्सिल चलना बन्द हो जाता है। इस प्रकार

के माध्यम की सबसे बड़ी योग्यता यह होती है कि लिखते समय उसे यह मालूम न हो कि वह क्या लिख रहा है। इसके द्वारा आत्माओं के जो सन्देश प्राप्त होंगे, वे बिल्कुल शुद्ध होंगे। उनमें माध्यम के विचार मिश्रित नहीं हो सकेंगे। इसलिए ऐसे माध्यमों को ेरणा-रहित माध्यम (Mechanical Mediums) कहेंगे।

इस प्रकार के माध्यमों के द्वारा ऐसी भाषाओं में भी संदेश प्राप्त होते हैं, जिनका उन्हें बिल्कुल ज्ञान नहीं होता। यूरोप में इस प्रकार के अनेक माध्यम हैं। इस सम्बन्ध में एक अवतरण हम हेरी प्राइस की पुस्तक 'Fifty years of Psychical Research' से देते हैं। आप मिसेज़ हेस्टर डोडेन का ज़िक्र करते हुए लिखते हैं—"अधिकांश माध्यमों की भाँति आप भी कितनी ही आत्माओं से सन्देश प्राप्त करती हैं। इनमें आयरिश, मिस्री पुजारी, हिन्दुओं की आत्माएँ भी हैं जिनसे आपने सन्देश प्राप्त किये हैं। एक बार एक मित्र के मार्फ़त मिसेज़ ग्रेस ड्रिवेल ने इनके साथ एक प्रयोग हमारे सामने किया। यह प्रयोग ८वीं मार्च सन् १९३३ ई० में मिसेज़ डोडेन के मकान पर हुआ। ग्रेस ड्रिविल एक अँगरेज़ महिला थीं। आपका विवाह एक हालेण्ड-निवासी से हुआ था। उन्होंने कहा कि आप मेरे पति के परिवार की किसी आत्मा से बात-चीत कराइए। इसके बाद डच भाषा में सन्देश प्राप्त हुए। आत्मा ने लिखा, "आपका देवर हूँ। मेरी स्त्री का नाम 'लाइज' है। (यह नाम उसका प्यार का था।) मेरी लड़की का नाम 'लिली' है।" इसके बाद उससे पूछा गया कि आप कुछ सन्देश दीजिए। उसने लिखा— "मैं आपसे स्नेह करता हूँ।" ये सब सन्देश बिल्कुल सत्य थे।

हमारे अपने प्रयोग में यह बात देखी गई है। हमारी पत्नी श्रीमती प्रभावती ऋषि ओजा बोर्ड पर पाइण्टर से विभिन्न भाषाओं में सन्देश प्राप्त करती हैं। हमारे प्रयोगों में एक महाराष्ट्र आत्मा आकर हमें बहुत सहायता करती है। इन्होंने अपना नाम ओक बताया है। ये अपना सन्देश कभी-कभी मराठी कविता में देते हैं। ओजा बोर्ड पर एक-एक

अक्षर पाइएटर से बताकर वे अपना सन्देश देते हैं। जब इन अक्षरों को जोड़कर पढ़ा जाता है, तो वह कविता बन जाती है। इसी भाँति कितने ही सन्देश ऐसे आये हैं, जिनके विषय में लिखते समय माध्यम को बिल्कुल ज्ञान नहीं था।

अन्तर स्फूर्ति माध्यम (Intuitive Medium) के द्वारा भी आत्माएँ अपने विचार प्रकट करती हैं। इस अवस्था में वे माध्यम के हाथ से नहीं लिखतीं, अपितु वे थोड़े समय के लिए माध्यम के मन पर अधिकार कर लेती हैं और उसे अपनी इच्छा से प्रभावित करती हैं। इस अवस्था में लिखते समय माध्यम को मालूम हो जाता है कि मैं क्या लिख रहा हूँ। इस प्रकार जो सन्देश प्राप्त होते हैं, उनके विषय में यह प्रश्न हो सकता है कि यह क्यों न मान लिया जाय कि ये विचार माध्यम के अपने ही हैं ? इसके उत्तर में इतना ही कहा जा सकता है, कि ये सन्देश माध्यमों की इच्छा के बिल्कुल विपरीत भी आ जाते हैं और ऐसे भी होते हैं, जिनकी कल्पना माध्यम कभी नहीं करता। इसलिए इसे माध्यम के विचार नहीं मान सकते।

(३) प्रेरित माध्यम (Inspirational Mediums) उन्हें कहेंगे, जो दूसरी आत्माओं से ऐसे सन्देश (साधारण अवस्था में या अचेतन अवस्था में) ले सकें जो उसके (माध्यम के) अपने मस्तिष्क के नहीं हैं। यह भी अन्तर स्फूर्तिवाले माध्यमों का एक भेद है। इसकी विशेषता केवल इतनी ही है कि इस प्रकार के माध्यमों को आत्माएँ बिना प्रश्न किये भी स्वतः अपने मन से सन्देश देती रहती हैं। परलोकगत आत्माएँ हम सब लोगों के साथ रहती हैं और वे हमें अपने नित्य कार्यों में प्रेरणा करती रहती हैं। जो अच्छी आत्माएँ होती हैं, वे शुभ कार्यों के लिए प्रेरणा करती हैं और जो दुष्ट आत्माएँ हैं, वे कुप्रेरणा करती हैं। हमारा यह कर्त्तव्य होना चाहिए कि हम कुप्रेरणाओं को रोकें और अपनी भलाई चाहनेवाली आत्माओं को प्रोत्साहन दें। इसकी अनुभूति तब होगी जब आप किसी विशेष कार्य्य में महत्त्व का निर्णय करना चाहते हों।

उस समय आपके हृदय में एक नई भावना या विचार उत्पन्न होगा। यदि प्रार्थना करने पर भी नये विचार उत्पन्न न हों तो थोड़े समय के लिए निर्णय स्थगित कर दें। इससे यह स्पष्ट हो जायगा कि जो विचार हमारे मस्तिष्क में स्वतः उत्पन्न होते हैं, वे दूसरों की प्रेरणा से उत्पन्न हुए हैं। यदि वे अपने ही विचार हों तो उसके लिए प्रतीक्षा की क्या आवश्यकता है? इनके अतिरिक्त एलन कार्डेक ने अनेक माध्यमों का ज़िक्र अपने इस ग्रन्थ में किया। उसमें से कुछ का वर्णन हम नीचे देते हैं।

विविध लेखन के माध्यम (Polygraphic Mediums) ऐसे माध्यमों के हाथ से जब सन्देश लिखे जाते हैं, उनके अक्षर ठीक उसी रूप के होते हैं, जैसे परलोकगत आत्मा अपने स्थूल शरीर से लिखा करती थी। किन्तु इस प्रकार के माध्यम बहुत कम होते हैं। हमारे यहाँ प्रयोग करते समय भारतीय व्यवस्थापक सभा के सदस्य श्री जमनादास मेहता के हाथ से उनकी पत्नी के वैसे ही अक्षरों में सन्देश प्राप्त हुए हैं जैसे वे अपने स्थूल देह में लिखा करती थीं। यह बात उन्होंने हमारे सामने स्वीकार की।

एक दूसरे सज्जन के नाम का भी हम उल्लेख करना चाहते हैं। आप हैं श्री एस० सी० मित्र, एम० ए०, बी० एल०, रिटायर्ड सेशन और डिस्ट्रिक्ट जज। आपने अपने एक पत्र में एक प्रयोग का उल्लेख करते हुए लिखा है—"ऐसी अनेक घटनाएँ हो रही हैं, जिनसे मैं चकित हूँ, किन्तु अभी जो घटना हुई है उससे तो मैं अवाक् रह गया हूँ। मैंने अपने भाई की आत्मा से अपने हस्ताक्षर करने को कहा। उन्होंने ठीक वैसे ही हस्ताक्षर कर दिये जैसे वे अपने जीवन-काल में किया करते थे। मैंने वे हस्ताक्षर उनके अन्य मित्रों को भी दिखाये। सबने यही कहा कि यह उन्हीं के हस्ताक्षर दिखते हैं। मैं यहाँ यह भी बता देना चाहता हूँ कि हम दोनों भाइयों के अक्षर एक दूसरे से बिलकुल भिन्न हैं।"

विविध भाषाभाषी माध्यम (Polyglot Mediums)—अर्थात् ऐसे माध्यम जो ऐसी भाषा में सन्देश लिखे या बोलें जो वे स्वयं नहीं जानते ।

निरक्षर माध्यम (Illiterate Mediums)—ऐसे माध्यम जो निरक्षर हैं किन्तु आत्मा के सन्देश लिखते या बोलते हैं । ऐसे माध्यम बहुत कम होते हैं । ऐसे निरक्षर माध्यम का एक उदाहरण जिनेवा की मेडम एटोनियेट बोउडीन हैं । जिस भाँति काँच के गोले में आत्माओं को देखकर उनसे सन्देश लिये जाते हैं, उसी भाँति ये पानी के गिलास में आत्माओं को देखा करती थीं । इनकी दो पुस्तकें हैं—La Mediumnite dansun verre d'ean (अर्थात् पानी के गिलास से माध्यमपन) इन्होंने पानी के गिलास में जो दृश्य देखे, वे इस पुस्तक में लिखे गये हैं । इनकी दूसरी पुस्तक का नाम है Entredeux Globes (दो गोलार्द्धों के बीच) । इसमें भी वह सब वृत्तान्त है जो इन्होंने पानी के गिलास में देखा है ।

अधूरे माध्यम (Novice Mediums)—ऐसे माध्यम जिनकी माध्यम शक्ति पूर्ण रूप से विकसित नहीं हुई है और जिन्हें अभी अभ्यास करने की आवश्यकता है । ऐसे माध्यम प्रायः देखे जाते हैं ।

बाञ्झर माध्यम (Unproductive Medium)—ऐसे माध्यम जिनके हाथ से केवल एक शब्दवाची ही उत्तर मिलता है ।

पूर्ण माध्यम (Fully Formed Medium)—ऐसे माध्यम जिनकी माध्यम-शक्ति पूर्ण विकसित हो गई है और जो आत्माओं के सन्देश सरलता, शीघ्रता और बिना हिचकिचाहट के प्राप्त कर सकते हों । यह बात ध्यान में रहनी चाहिए कि यह पूर्णता बिना अभ्यास के प्राप्त नहीं होती ।

संक्षिप्त माध्यम (Loconic Medium)—ऐसे माध्यम जो आत्माओं से शीघ्र प्रभावित हो जाते हैं, किन्तु उनके सन्देश संक्षिप्त और अपरिपक्व कोटि के होते हैं ।

स्पष्ट माध्यम (Explicit Mediums)—ऐसे माध्यमों से स्पष्ट सन्देश विस्तार के साथ प्राप्त हो सकते हैं। यह तभी हो सकता है जब माध्यम की अपनी भी योग्यता हो।

अनुभवी माध्यम (Exprienced Medium)—लिखने या चित्र खींचने की योग्यता शीघ्र ही आ सकती है, किन्तु व्यवहार में जो कठिनाइयाँ उत्पन्न होती हैं, उनका जब तक गम्भीरता से अध्ययन नहीं किया जाय तब तक यह योग्यता अधिक काम की नहीं होती। अनुभव से ही माध्यम को यह मालूम हो सकता है कि कौन सी आत्मा सन्देश दे रही, उसका यह सन्देश सत्य है अथवा कोई दूसरी आत्मा उसके नाम से लिखकर केवल धोखा दे रही है। जब तक इस प्रकार का अनुभवान हो जाय तब तक इस योग्यता का कोई लाभ नहीं। हमारे देश में ऐसे अनेक नवसिखुए माध्यम हैं, जो परलोकगत महान् आत्माओं के बुलाने और उनसे सन्देश प्राप्त करने का दम भरते हैं। किन्तु जब उन्हें यह बताया जाता है कि ये सन्देश उन महान् आत्माओं के नहीं हैं तो वे नाराज़ होते हैं और समझते हैं कि हम यह बात उनसे ईर्ष्यावश कहते हैं। स्वयं एलन कार्डेक ने इस सम्बन्ध में कहा है—"ऐसे अनेक माध्यम दूसरों के अध्ययन और अनुभवों की उपेक्षा करते हैं और अपने को पूर्ण समझ बैठते हैं; उन्हें किसी की सलाह अच्छी नहीं लगती और वे दुष्ट या झूठी आत्माओं के बहकावे में आ जाते हैं।"

अनुरूप माध्यम (Flexible Medium)—ऐसे माध्यम होते हैं जो विपरीत अवस्था में भी आत्माओं से सन्देश प्राप्त कर सकते हैं। ऐसे माध्यम सब आत्माओं के सन्देश प्राप्त कर सकते हैं।

एकात्मक माध्यम (Exclusive Medium)—ऐसे माध्यम केवल किसी एक ही आत्मा से सन्देश ले सकते हैं और अपनी उस आत्मा के द्वारा वे दूसरी आत्माओं से भी सन्देश ले सकते हैं।

एलन कार्डेक ऐसे माध्यमों के विषय में लिखते हैं कि किसी एक आत्मा का माध्यम होना, माध्यम का दोष है। अच्छी आत्माएँ सहानुभूति-

वश अथवा किसी उत्तम कार्य्य के लिए माध्यम के साथ रहती हैं या प्रेम करती हैं, किन्तु यदि कोई बुरी आत्मा माध्यम के साथ लग जाय तो उससे माध्यम का अहित होता है, इसलिए एक आत्मा का माध्यम होना अच्छा नहीं है।

स्वयंप्रेरित माध्यम (Mediums who receive Spontaneous Communication)—ऐसे माध्यम जिन्हें बिना बुलाये आत्माओं के सन्देश प्राप्त होते हों। ऐसे माध्यमों का उपयोग ऐसे अवसरों पर किया जाता है जहाँ आत्माएँ स्वेच्छा-पूर्वक विना बुलाये आकर सन्देश देती हों। किन्तु ऐसे माध्यम से यदि किसी विशेष आत्मा को बुलाकर सन्देश देने को कहा जाय तो वह नहीं ले सकेगा। फिर भी इस कोटि के माध्यम अन्य माध्यमों की अपेक्षा अच्छे हो सकते हैं, किन्तु उनका मस्तिष्क इतना समुन्नत होना चाहिए कि वे आत्माओं के सन्देश ग्रहण कर सकें। साधारण सन्देश या एक-दो यहाँ-वहाँ के वाक्यों से कोई लाभ नहीं।

कवि माध्यम (Verse making Mediums)—ऐसे माध्यम जो सरलता से कविता में सन्देश प्राप्त कर सकें। ऐसे माध्यमों के द्वारा कोमल और प्रेममय सन्देश अच्छे प्राप्त होते हैं। किन्तु ऐसे माध्यमों से कोई महत्त्व के सन्देश नहीं मिलते। ऐसे माध्यम बहुत अधिक पाये जाते हैं।

विश्वसनीय माध्यम (Positive Medium)—ऐसे माध्यमों के द्वारा सन्देश बिल्कुल ठीक और स्पष्ट आते हैं। इस प्रकार के माध्यम बहुत कम मिलते हैं।

साहित्यिक माध्यम (Literary Mediums)—ऐसे माध्यमों से कवि-माध्यमों की भाँति अस्पष्ट सन्देश नहीं आते और न विश्वसनीय माध्यमों की भाँति शुष्क टोटूक उत्तर मिलते हैं। किन्तु इनके द्वारा उत्तर विद्वत्तापूर्ण, शुद्ध और सरस आते हैं।

अशुद्ध माध्यम (Incorrect Medium)—ऐसे माध्यमों से कभी-कभी बुद्धिग्राह्य सन्देश तो आते हैं, किन्तु उनकी भाषा अशुद्ध होती है—शब्दों का व्यवहार यथोचित नहीं होता और एक ही प्रकार के शब्दों का वार-वार व्यवहार करते हैं। यह दोष माध्यम के अपरिपक्व ज्ञान का है। इसलिए इस प्रकार के माध्यम ऐसे कार्य्य के उपयुक्त नहीं होते।

ऐतिहासिक माध्यम (Historical Medium)—ऐसे माध्यम जिनके द्वारा ऐतिहासिक व्यक्तियों के सन्देश प्राप्त हो सकें। इसमें माध्यम को अपने ज्ञान की आवश्यकता नहीं है। कभी-कभी ऐसे ऐतिहासिक व्यक्ति निरक्षर बालकों और स्त्रियों में भी प्रकट होते हैं। फ्रान्स की जोन आफ़ आर्क इसका एक उदाहरण है।

वैज्ञानिक माध्यम (Scientific Medium)—ऐसे माध्यम विषय से बिल्कुल अनभिज्ञ होने से वैज्ञानिक सन्देश प्राप्त करते हैं।

वैद्यकीय माध्यम (Medical Mediums)—ऐसे माध्यम के द्वारा वैद्यकीय नुसख़े प्राप्त करने में अधिक सुविधा होती है।

धार्मिक माध्यम (Religious Mediums)—ऐसे माध्यम धार्मिक विषयों के सन्देश प्राप्त करते हैं और कभी-कभी अपने धर्म-विश्वास के विरुद्ध भी उनके द्वारा सन्देश आते हैं।

तत्त्वज्ञान के माध्यम (Philosophic Mediums)—इस प्रकार के माध्यमों को तत्त्वज्ञान-सम्बन्धी और नैतिक विषय के सन्देश प्राप्त होते हैं।

मोहित माध्यम (Facinated Mediums)—ऐसे माध्यमों पर दुरात्माओं का प्रभाव होता है और उन्हें यह बात मालूम नहीं हो पाती, इसलिए जिन आत्माओं से वे सन्देश लेते हैं, उनके सम्बन्ध में भ्रम रहता है।

पराधीन माध्यम (Subjugated Mediums)—ऐसे माध्यमों के नैतिक विचारों पर अथवा शरीर पर भी दुरात्माओं का प्रभाव रहता है।

अस्थिर माध्यम (Frivolous Mediums)—ऐसे माध्यम अपनी इस शक्ति पर गम्भीरता से विचार नहीं करते। वे इसे केवल मनोरञ्जन के लिए अथवा उद्देश्य-हीन कार्य्यों में व्यय करते हैं।

लापरवाह माध्यम (Careless Mediums)—ऐसे माध्यम आदेशों का पालन नहीं करते और उनकी आदतें भी नहीं सुधरतीं।

अहङ्कारी माध्यम (Presumptuous Mediums)—ऐसे माध्यम यह समझते हैं कि ऊँची आत्माओं से केवल हमीं सन्देश प्राप्त कर सकते हैं। दूसरे माध्यमों के द्वारा जो सन्देश प्राप्त होते हैं, वे कुछ नहीं हैं। कुछ ऐसे माध्यम भी होते हैं जो अपने को पूर्ण समझते हैं। आत्माएँ उन्हें जो शिक्षा देती हैं उनकी ओर वे ध्यान नहीं देते। और एक प्रकार के अहङ्कारी माध्यम होते हैं। ऐसे माध्यम केवल अपनी प्रशंसा ही सुन सकते हैं। यदि कोई उनकी आलोचना करे तो वे बहुत नाराज़ हो जाते हैं। ऐसे माध्यम यदि प्रयोगों में सम्मिलित न किये जायँ तो ठीक है।

लालची माध्यम (Mercenary Mediums)—ऐसे माध्यम जो अपनी इस शक्ति का उपयोग केवल धन-प्राप्ति के लिए करते हैं।

महत्त्वाकांक्षी माध्यम (Ambitious Mediums)—ऐसे माध्यम जो अपनी पहुँच का बिना अनुमान किये, सामाजिक अथवा अन्य विषयों में लाभ लेना चाहते हैं।

स्वार्थी माध्यम (Selfish Mediums)—जो अपनी माध्यम शक्ति केवल अपने लाभ के लिए काम में लाते हैं और आत्माओं से उन्हें जो सन्देश प्राप्त होते हैं, उन्हें वे दूसरों को नहीं बताते।

ईर्ष्यालु माध्यम (Jealous Mediums)—ऐसे माध्यम जब दूसरे उन्नत माध्यमों को देखते हैं और उनकी प्रशंसा सुनते हैं तो दुखी होते हैं।

अच्छे माध्यम (Good Medium), **गम्भीर माध्यम** (Serious Mediums)—ऐसे माध्यम अपनी शक्ति का उपयोग केवल शुभ और उपयोगी कार्यों के लिए करते हैं और व्यर्थ तथा विरोधी लोगों को चमत्कार दिखाने के लिए वे अपनी इस शक्ति का उपयोग करना पाप समझते हैं।

नम्र माध्यम (Modest Mediums)—ऐसे माध्यम अपने द्वारा प्राप्त किये हुए सन्देशों पर कोई अभिमान नहीं करते, चाहे संदेश कितने

ही महत्त्व-पूर्ण क्यों न हों। वे समझते हैं कि मैं तो केवल एक साधन मात्र हूँ। ऐसे माध्यम दूसरे लोगों की आलोचना से कभी नाराज़ नहीं होते, अपितु वे ऐसे उपदेशों की सदा आकांक्षा किया करते हैं।

सुरक्षित माध्यम (Safe Mediums)—ऐसे माध्यमों का ऊँची आत्माओं से सम्पर्क रहता है; वे उन्हें सहायता करती रहती हैं, इसलिए उनके धोखा खाने की कोई सम्भावना नहीं रहती।

इन सब माध्यमों के भेद हमने इसलिए दिखाये हैं कि सब माध्यमों पर विश्वास नहीं कर लेना चाहिए। सबसे पहले प्रयोग करनेवालों को यह मान लेना चाहिए कि हमारे प्रश्नों के उत्तर सन्तोषजनक नहीं आयेंगे। इसके बाद जैसा माध्यम होगा, वैसे उत्तर भी मिलेंगे।

कुछ लोग माध्यमों के इन भेदों को सुनकर चक्कर में पड़ जायँगे कि अन्ततः हमें यह कैसे जान पड़ेगा कि अमुक माध्यम ठीक है या नहीं। इसके लिए धैर्य-पूर्वक प्रयोग करते रहना चाहिए। उत्तरों से स्वयं प्रकट हो जायगा कि यह माध्यम कैसा है। वैज्ञानिकों को प्रयोगों से कभी निराश न होना चाहिए। उन्हें चाहे कितनी ही बार असफल होना पड़े, किन्तु फिर भी वे उसी उत्साह से प्रयोग करते हैं, जैसे पहली बार किया था। केवल एक-दो बार के प्रयोग से किसी वैज्ञानिक तत्त्व को जान लेना कठिन है।

माध्यमों के लिए भी ऐसा प्रभेद करना आवश्यक था। बहुत से लोग माध्यमपन की कठिनाइयों को अनुभव नहीं करते हैं। ऊपर जो भेद बताये गये हैं, उनमें एक ही प्रकार के माध्यम के दो-तीन भेद कर दिये गये हैं। यह भी सम्भव है कि एक माध्यम में उपर्युक्त कई प्रकार के माध्यम के गुण हों। किन्तु जो गुण अच्छे माध्यम के उसमें प्रधान रूप से विद्यमान हों, केवल उन्हें ही विकसित करना चाहिए। यदि अन्य गुण को विकसित करने का यत्न किया जायगा तो समय व्यर्थ नष्ट होगा और जो शक्ति है, उसके भी नष्ट होने का भय है।

अचेत माध्यम (Trance Medium)—अचेत होकर जो माध्यम आत्माओं के सन्देश प्राप्त करते हैं उन्हें अचेत माध्यम (Trance

Mediums) कहते हैं। उनके दो भेद हैं—(१) गहरी अचेतन अवस्था (Deep Trance) और (२) अर्द्ध अचेतन अवस्था (Semi Trance)

अचेतन अवस्था के भी दो भेद हैं—(१) हिपनाटिज़्म या मोहनी विद्या से और (२) परलोकगत आत्मा से। मोहनी विद्या से अचेत होनेवाले माध्यम किसी व्यक्ति की विशेष इच्छा-शक्ति से अचेत होते हैं और जो परलोकगत आत्मा की इच्छा से होते हैं उन्हें Spirit Trance कहते हैं। आत्मा-द्वारा अचेतन के भी दो भेद हैं, (१) स्वेच्छा-पूर्वक (Volantary) और (२) अनिच्छा-पूर्वक (Involantary)। माध्यम अच्छा हो तो स्वेच्छा-पूर्वक अचेतन होने (Volantary Trance) से अत्यन्त महत्त्व के सन्देश प्राप्त होते हैं। साधारण माध्यमों के सन्देश अण्ड-बण्ड होते हैं, जिनका कोई अर्थ नहीं होता। यूरोप और अमेरिका में भी पहले इस प्रकार के प्रयोगों की खिल्ली उड़ाई जाती थी, किन्तु बाद में वहाँ के वैज्ञानिकों ने कुछ ऐसे माध्यमों को खोज निकाला, जिनके प्रयोग से संसार चकित हो गया।

संसार की सबसे बड़ी मानसिक माध्यम

मिस्टर हेरी प्राइस अपनी पुस्तक "Fifty years of psychical Research" में लिखते हैं—"अब तक जितने माध्यमों को हम जान सके हैं, उनमें बोस्टन की मिसेज़ लिनोर पाइपर विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इन्हें अपनी माध्यम-शक्ति का ज्ञान एक अन्ध माध्यम 'काके' के सम्पर्क से छोटी ही अवस्था में हो गया था। इसके बाद इनकी ओर अनेक वैज्ञानिकों का ध्यान आकृष्ट हुआ। सर्वप्रथम प्रोफ़ेसर विलियम जेम्स ने इनके द्वारा प्राप्त सन्देशों का अध्ययन करना आरम्भ किया। आये हुए सन्देशों का प्रोफ़ेसर जेम्स पर बड़ा प्रभाव पड़ा। इसके बाद डाक्टर रिचार्ड हडसन इस माध्यम का अध्ययन करने के लिए अमेरिका गये। वहाँ वे मिसेज़ पाइपर के पास सात वर्ष तक रहकर उनके सन्देशों की सत्यता

का अनुभव करते रहे। इनमें से अधिकांश सन्देश सत्य निकले। आपकी मृत्यु के बाद डाक्टर जेम्स एच० हिस्लोप ने इनके द्वारा प्राप्त सन्देशों का अध्ययन किया। इसके बाद तो इनकी ख्याति बहुत अधिक बढ़ी और सर ओलीवर लाज, प्रोफेसर विलियम रोमेन न्यू बोल्ड, एफ़० एच० एच० मायर, जे० एच० पिडिङ्गटन, सर विलियम बेरट और प्रोफ़ेसर चार्ल्स रिचेट ने भी इनके सन्देशों का अनुभव किया।

इनके द्वारा सन्देश व्यक्तिगत रूप के अधिक आते थे। उदाहरण के लिए डाक्टर फिनयूट की आत्मा ने सर ओलीवर लाज के श्वशुर की मृत्यु का विवरण इनके द्वारा बिलकुल ठीक-ठीक बता दिया। इसी भाँति सर ओलीवर को अपनी चाची और चाचा की मृत्यु का भी पूरा-पूरा विवरण इसी माध्यम के द्वारा प्राप्त हो गया। प्रोफ़ेसर जेम्स की सास की बैङ्क की हिसाबवाली किताब खो गई थी; उसका पता भी इसी माध्यम के द्वारा मिल गया। इसने कहा कि अमुक स्थान में वह किताब मिलेगी। इनके सम्बन्ध में यूरोप और अमेरिका में कितनी ही पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। इनमें से दो एक का नाम है—'Mrs Piper and the Society for Psychical Research', by Michel Sage. The Life and work of Mrs Piper by her daughter, Alta तथा अन्य कितनी ही पुस्तकें हैं जिन्हें पढ़ने पर इस विद्या के घोर विरोधियों को भी सिर झुका देना पड़ा है।

वायुयान आर १०१ की दुर्घटना

इँगलेण्ड में भी अनेक अचेतन माध्यम हुए हैं। इनमें मिसेज़ एलीन गारेट की बड़ी ख्याति है। इन पर एक अरब की आत्मा अपना अधिकार कर लिया करती थी। उक्त अरब अपना नाम 'युवनी' बताते थे। यों तो मिसेज़ गारेट की ख्याति अमेरिका के विश्वविद्यालयों में पहले से ही थी, किन्तु सन् १९३० की ५वीं अक्तोबर को आर १०१ नामक वायुयान गिरकर नष्ट हो गया था। उस दुर्घटना में उसके कमाण्डर फ़्लाइट

लेफ़्टिनेंट एच० सी० इर्विन भी मारे गये थे। हमने (प्राइस ने) अपनी प्रयोगशाला में मिसेज़ गारेट का ७वीं अक्तोबर को पहले ही से प्रयोग निश्चित कर रक्खा था। नियत समय पर हमारा प्रयोग आरम्भ हुआ। मिसेज़ गारेट अचेत हो गईं। उन्हें वश करनेवाली 'युवनी' की आत्मा ने टूटी-फूटी अँगरेज़ी भाषा में कहा—"लेफ़्टिनेंट इर्विन कुछ बातचीत करना चाहते हैं।" दुर्घटना के ठीक ६० घण्टे बाद ही हमारा यह प्रयोग हो रहा था। इसके बाद माध्यम का स्वर बदल गया। इर्विन ने वायुयान-दुर्घटना का बड़ा ही विशद और कलापूर्ण वर्णन किया और बताया कि अमुक-अमुक कारणों से वायुयान गिरा था। इसके बाद इस वायुयान की दुर्घटना की जाँच करने के लिए सर साइमन की अध्यक्षता में एक कमीशन बैठा और जो बातें प्रकट हुईं, उनमें इर्विन की बताई हुई अनेक बातें सत्य प्रमाणित हुईं। इर्विन ने उस दिन कहा था—"वायुयान के एञ्जिन की शक्ति से वायुयान में अधिक भार था। एञ्जिन भी वज़नी था। उसके अमुक-अमुक भाग बिगड़े हुए थे। हमारा वायुयान बहुत नीचे उड़ रहा था, यह पूरी ऊँचाई पर उठ ही नहीं सका।" इत्यादि। ये सब बातें सत्य थीं। इस प्रयोग में मिसेज़ गारेट के द्वारा एक अत्यन्त गोपनीय बात यह प्रकट हुई कि वायुयान में पहले-पहल हाइड्रोजन और तेल मिलाकर जलाने के प्रयोग किये जा रहे थे। इन प्रयोगों की बात केवल अधिकारियों को ही मालूम थी। यह बात जब एक माध्यम द्वारा मालूम हुई तो लोग बड़े चकित हुए। मिसेज़ गारेट को दुर्घटना-सम्बन्धी ये सब बातें मालूम होना असम्भव था।

आत्माओं के देख सकनेवाले माध्यम (Clair Voyance Medium)—ऐसे माध्यमों के विषय में मिस्टर वालेस अपनी पुस्तक A guide to Mediumship में लिखते हैं—"यदि आपमें आकर्षण-शक्ति और पर्याप्त मात्रा में भावना है तो आत्माएँ आप पर अधिकार कर आपको दृष्टिगोचर हो सकती हैं।" ऐसे माध्यमों को आत्माएँ अपने अधीन कर पूर्ण रूप से अथवा अर्द्ध रूप से अचेतन कर देती

हैं। एलेन कार्डेक इसका और भी अधिक स्पष्टीकरण करते हुए लिखते है—"देखनेवाले माध्यम वे हैं, जिनमें आत्माओं को देखने की शक्ति विद्यमान हो। कुछ ऐसे भी माध्यम हैं जो साधारण जागृत अवस्था में ही आत्माओं को देख सकते हैं और जो कुछ वे देखते हैं, उसे ठीक-ठीक बता भी देते हैं। अन्य ऐसे भी माध्यम हैं जो अचेतन अवस्था में या अर्द्ध-अचेतन अवस्था में उन्हें देख सकते हैं। कुछ माध्यम आत्माओं को स्वप्न में देखती हैं। यह भी उनकी माध्यम-शक्ति के कारण होता है, किन्तु उन्हें देखनेवाले माध्यम नहीं कह सकते।" जो लोग जागृत अवस्था में आत्माएँ देखते हैं, उनका एक उदाहरण हम नीचे देते हैं। एलन कार्डेक लिखते हैं कि एक बार हम एक नाटक देखने गये। हमारे साथ आत्माओं को देखनेवाला एक माध्यम भी था। नाटकघर में दर्शकों की बहुत सी जगह ख़ाली पड़ी थी। किन्तु उक्त माध्यम ने देखा कि उन स्थानों पर आत्माएँ बैठी हैं। ये आत्माएँ नाटक बड़े चाव से देख रही थीं, कुछ आत्माएँ दर्शकों के पास भी थीं जो उनकी बातें सुन रही थीं। स्टेज पर भी आत्माएँ नाटक के पात्रों के साथ बड़े विनोदी भाव में दिख रही थीं। कोई मुँह बनाकर एक्टरों की नक़ल कर रही थी तो कोई बड़े गम्भीर भाव से उन्हें प्रोत्साहन दे रही थी। एक ओर नाटक हो रहा था, दूसरी ओर यह दूसरा नाटक हो रहा था। किन्तु इस दूसरे नाटक को केवल वही माध्यम देख सकता था। इसके बाद बीच की छुट्टी (Interval) में हमने वेबर की आत्मा को बुलाया और उससे नाटक के सम्बन्ध में अपना मत प्रकट करने को कहा। वेबर कहा—"नाटक बुरा नहीं है, किन्तु इसमें नाटकीय चपलता नहीं है। केवल गायन मात्र हैं। पात्रों के काम में भावना का प्रदर्शन भली भाँति नहीं होता। मैं उन्हें उत्साह दूँगा।" इसके बाद माध्यम ने देखा कि वेबर की आत्मा स्टेज पर मँडरा रही थी और वह एक्टरों में भाव प्रेरित करती थी।

आत्माओं को देखने की यह शक्ति धीरे-धीरे बढ़ सकती है, किन्तु माध्यम को उचित यही है कि वह उसे स्वाभाविक रूप से विकसित होने

दे; अन्यथा इस शक्ति के नष्ट होने का भय बना रहता है। यह शक्ति ईश्वर-प्रदत्त है, जो किसी विरले को ही प्राप्त है।

विलायत में हमने स्वयं देखनेवाले माध्यम के प्रयोग देखे हैं। जब स्टेले राबर्ट, ह्यूजेज हेलन और हारेस लीफ जैसे प्रसिद्ध माध्यम इन प्रयोगों में सम्मिलित होते हैं, तब वहाँ की जनता उनके प्रयोग देखने को उमड़ पड़ती है। दर्शकों पर प्रवेश-शुल्क एक-एक शिलिङ्ग लगा दिया जाता है; फिर भी चार-चार हज़ार दर्शक इनके प्रयोगों को देखने को एकत्र हो जाते हैं। इससे विलायत-वासियों का अनुराग सहज ही प्रकट हो सकता है। दर्शकगण बड़े कौतूहल से देखते रहते हैं। माध्यम उपस्थित दर्शकों में से किसी के पास खड़ी हुई आत्माओं का वर्णन करने लगता है। वर्णन सुनकर दर्शक कहता है कि हमारा कोई ऐसा सम्बन्धी था और वह परलोकगत हो गया है। लन्दन में मिसेज़ स्टेले राबर्ट के प्रयोग में एक बार हम और हमारे मित्र कराची के श्री गुरुदास साजनानी सम्मिलित हुए थे। मिसेज़ राबर्ट ने श्री गुरुदास को बताया कि आपके पास एक स्त्री खड़ी है। उसकी ऐसी आकृति है, उसके अमुक वस्त्र हैं, अमुक नाम है इत्यादि। यह उनकी स्त्री थी।

स्पर्श-संवेदक माध्यम (Psychometry) ऐसे माध्यमों को कहते हैं, जो मृत आत्मा के जीवन-काल की किसी भी पहनी हुई वस्तु या लिखा हुआ पत्र, आभूषण या अन्य कोई वस्तु हाथ में लेकर उस आत्मा का परिचय दे सके। यदि उसका पत्र वह हाथ में ले लें तो उस पत्र के भाव, विचार विना देखे हुए ही बता सकें। यह शक्ति भी कुछ माध्यमों में होती है और वे यहाँ तक बता सकते हैं कि यह वस्तु कहाँ कहाँ घूम आई है। एक बार इसका प्रयोग किया गया। एक पत्र को एक स्थान से दूसरे स्थान और दूसरे से तीसरे इस प्रकार समस्त पृथ्वी पर घुमा दिया गया। इसके बाद एक हिन्दू लड़की से इसके विषय में पूछा गया। यह लड़की सब देशों का नाम नहीं जानती थी, किन्तु इस पत्र को हाथ में लेकर वह उन देशों के निवासियों का वर्णन करने लगी,

जहाँ-जहाँ वह पत्र घूम फिरकर आया था। जहाँ-जहाँ पत्र गया था, वहाँ वहाँ का वर्णन उक्त लड़की ने ऐसी सुन्दरता से किया कि सुनने-वालों को संसार-पर्यटन का आनन्द आ गया।

सिर के बालों से विशेष कर कनपटी के बालों से इसके प्रयोग बड़े सफल हुए हैं। कभी कभी लोगों ने माध्यम की परीक्षा करने के लिए जानवरों के बाल भेज दिये हैं, किन्तु उन्हें ठीक उत्तर मिल गया। हमें स्वयं इसका अनुभव हुआ है। हमने पहले पहल जब अपनी पत्नी सुभद्रा का छल्ला विलायत के मिस्टर ब्रूस के पास भेजा तो उन्होंने स्वर्गीय सुभद्रा का बहुत कुछ स्वभाव लिख भेजा और साथ ही यह भी लिख दिया कि यह छल्ला अमुक प्रकार के सोनार ने बनाया है, वह अमुक दिशा में रहता है आदि। इस प्रकार के माध्यमों द्वारा दूर बैठे हुए लोगों को बड़ी सहायता मिलती है।

माध्यमों के प्रकरण को समाप्त करने के पहले हम अपने देश के वैज्ञानिकों का ध्यान इन शब्दों की ओर आकर्षित करते हैं—"जनता का दृष्टिकोण अब धीरे-धीरे बदलता जाता है। लोगों को अब प्रकृति की अन्य बारीक शक्तियों का ज्ञान होने लगा है। प्रतिदिन ऐसी गुप्त शक्ति रखनेवालों के चमत्कार दृष्टिगोचर हो रहे हैं और अब यह बात लोगों की समझ में आ रही है कि मानव-जाति के प्रायः सभी सदस्यों में एक न एक शक्ति अज्ञात अवस्था में विद्यमान है। यदि वैज्ञानिक रूप से इन शक्तियों का समुचित रूप से विकाश किया जाय तो सर्वसाधारण में इनका प्रदर्शन हो सकता है।" हम चाहते हैं कि हमारे देशवासी भी अपने देश के लोगों की गुप्त शक्तियों का ज्ञान प्राप्त करें तथा उनका समुचित उपयोग करें।

पाँचवाँ परिच्छेद

आत्माओं से बात करने की विधि

पिछले परिच्छेद में हमने माध्यमों के भेद और उपयोगिता बताई है। माध्यम की सहायता से हम परलोकगत आत्माओं से बातचीत कर सकते हैं, उनके संदेश प्राप्त कर सकते हैं, उनके फोटो ले सकते हैं, उन्हें प्रत्यक्ष देख सकते हैं, सुन सकते हैं आदि। हम यह भी बता चुके हैं कि माध्यमपन की शक्ति थोड़ी बहुत मात्रा में प्रायः सब में होती है। इसलिए प्रयोग करनेवालों को समझना चाहिए कि शायद यह शक्ति हममें हो।

टेबिल टिल्टिङ्ग (Table Tilting) मेज़ या टेबिल से बात करने की सबसे सरल विधि है। तीन पैरों की एक गोल टेबिल, जिसकी चौड़ाई १॥ फ़ीट हो और ऊँचाई २॥ फ़ीट हो, काम में लाना चाहिए। चार आदमी इस टेबिल के चारों ओर कुर्सियों पर बैठ जायँ और अपने हाथ टेबिल पर हल्के रूप से रखकर आत्मा का आह्वान करें। प्रयोग करनेवालों को ऐसी ही आत्माएँ बुलानी चाहिएँ, जो उनकी परिचित हों। आत्माओं को बुलाते समय ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए—"हे सर्व शक्तिमान्, मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि अमुक अमुक आत्मा को मुझसे बात करने की अनुमति दे।" इसी भाँति अपने सम्बन्धी आत्मा से भी प्रार्थना करनी चाहिए कि "हम आपसे बात करना चाहते हैं कृपा कर आइए। पितृगण दुष्टात्माओं से हमारी रक्षा करें।' प्रयोग करनेवाले लोगों को बड़ी शांति से, दत्तचित्त होकर बैठना चाहिए और यह विश्वास रखना चाहिए कि हमें इस प्रयोग में अवश्य ही सफलता प्राप्त होगी। प्रयोग करते समय चिंता या व्यग्रता न होनी चाहिए। इस प्रकार कुछ देर तक

बैठे रहना चाहिए। प्रयोग अधिक से अधिक १५ मिनट तक करके देखना चाहिए। १५ मिनट तक यदि कोई आत्मा न आये तो प्रयोग स्थगित कर देना चाहिए। दूसरे दिन फिर प्रयोग करना चाहिए। एलन कार्डेक लिखते हैं—"प्रतिदिन यह प्रयत्न जारी रखना चाहिए। पहले दन सफलता नहीं होगी तो दूसरे दिन होगी, यह आशा अवश्य रखनी चाहिए। मैंने देखा है कि कुछ माध्यम पहले ही दिन बहुत कुछ सफल हो जाते हैं और कुछ ऐसे होते हैं, जिन्हें छः मास तक नित्य प्रयत्न करने पर सफलता मिली है।" इसलिए केवल एक या दो वार के प्रयोगों से निराश न होना चाहिए।

आरम्भ में आत्माओं से ऐसे प्रश्न करना चाहिए, जिनका उत्तर वे 'हाँ' या 'नहीं' में दे सकें। इसके लिए टेबिल हिलने के संकेत निर्धारित कर लिये जायँ। उदाहरण के लिए यह पूछा जाये कि आप सुखी हैं या नहीं ! सुखी हों तो ४ खटके दें नहीं तो २ दें। इस प्रकार के खटकों से पहले उत्तर प्राप्त किया जाता है। जिस भाँति तार देने के लिए तारबाबू तार की भाषा में तार देते हैं, उसी भाँति टेबिल के खटकों की बारहखड़ी बना ली जाती है। इसके द्वारा आत्माएँ अपना सन्देश देती हैं।

विलायत में टेबिल के प्रयोगों से बहुत बातचीत की गई है। प्रसिद्ध वैज्ञानिक सर ओलीवर लाज ने अपने पुत्र 'रेमण्ड' की आत्मा से इस टेबिल द्वारा बहुत से सन्देश प्राप्त किये हैं। उदाहरण के लिए हम एक सन्देश उनकी पुस्तक 'रेमेएड' से उद्धृत करते हैं।

'रेमेएड' से सर ओलीवर लाज ने पूछा—क्या तुम यह बता सकते हो कि तुम टेबिल को कैसे हिलाते हो !

इसका उत्तर भी रेमण्ड ने टेबिल हिलाकर ही दे दिया। ऊपर जिस बारहखड़ी का संकेत किया है, उसी भाँति टेबिल हिलती गई। सर लाज उसके अक्षर बताते गये, परन्तु उनकी समझ में वाक्य न आ सका। अन्त में उन अक्षरों को जोड़कर वाक्य बनाया गया। उक्त

वाक्य का अर्थ इस प्रकार है—"माध्यम की आकर्षण-शक्ति का आश्रय लेकर हम टेबिल में गति उत्पन्न करते हैं।"

टेबिल से एक दूसरे प्रकार से भी सन्देश प्राप्त किये जाते हैं। जब आत्मा आ जाती है, तब उससे पूछा जाता है कि आप अपना नाम बताइए। इसके लिए आत्मा के सामने अँगरेज़ी की वर्णमाला ए० बी० सी० डी० बोली जाती है। हम लोगों को हिन्दी की वर्णमाला बोलनी चाहिए। जिस अक्षर पर टेबिल का खटका हो उस अक्षर को लिख लेना चाहिए। इसी भाँति फिर वर्णमाला बोलना चाहिए। इस प्रकार एक-एक अक्षर जोड़कर उसका नाम आ जाता है। सर ओलीवर लाज ने २८ वीं सितम्बर सन् १९१५ में एक प्रयोग इसी भाँति किया था। जब टेबिल हिलने लगी तो माध्यम ने कहा—आप तीन बार टेबिल हिलाइए जिससे हमें यह मालूम हो जाये कि आप हमारी भाषा समझते हैं। (टेबिल तीन बार हिल गई)

प्रश्न— क्या आप अपना नाम बतायेंगे ? (तीन बार टेबिल हिली, जिसका संकेत है हाँ।)

इसके बाद उसके सामने वर्णमाला कही गई। पहली बार पी० P. अक्षर पर टेबिल ने खटका दिया। दूसरी बार ए० A. पर खटका दिया। तीसरी बार यू० U. पर खटका दिया और चौथी बार एल० L. पर खटका दिया। मालूम हुआ कि यह पाल महाशय हैं। इसी भाँति अन्य सन्देश भी प्राप्त हो सकते हैं। एलन कार्डेक ने टेबिल द्वारा संकेत के प्रकरण में एक मज़ेदार घटना का ज़िक्र किया है। आप लिखते हैं—फ्रेञ्च नौसैन्य के एक जहाज़ में आत्माओं को बुलाने के प्रयोग किये गये। एक दिन किसी मल्लाह को याद आया कि हम अपने पहले लफ़्टेएट को बुलायें। उसका आह्वान किया गया। लफ़्टेएट की आत्मा आई। उसने अपने सन्देश में कहा—"मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप अमुक रक़म कप्तान को चुका दें। मैंने यह रक़म उनसे ऋण रूप में ली थी।" उस समय इस ऋण की कल्पना तक किसी के हृदय में भी नहीं थी।

स्वयं कप्तान को भी इसका स्मरण नहीं था। जब उन्होंने अपनी हिसाब की किताब में देखा तो उन्हें मालूम हुआ कि लफ़टेएट को इतनी ही रक़म ऋण में दी गई थी। इस घटना से यह सहज ही सिद्ध हो जाता है कि जिन बातों की हृदय में कल्पना भी नहीं होती, ऐसे भी सन्देश आते हैं।

स्वयं लेखन (Automatic writing)

इसके बाद अब हम स्वयं लेखन (Automatic writting) की विधि बताते हैं। प्रातः या सन्ध्या समय जब सुविधा हो, एकान्त कमरे में एक पेंसिल और काग़ज़ लेकर बैठ जाना चाहिए। पेंसिल हल्के हाथ से पकड़कर काग़ज़ पर रखनी चाहिए और मन में आत्मा का ध्यान कर उससे प्रार्थना करनी चाहिए कि हम आपसे बात करना चाहते हैं, कृपा कर आइए। लिखते समय आँखें खुली रखनी चाहिएँ। जब पेंसिल चलने लगे तो समझना चाहिए कि बुलाई हुई आत्मा आ गई। इसके बाद आत्मा से उसका नाम पूछना चाहिए। यदि नाम न लिखा जाय और केवल लकीर जैसी या अस्पष्ट अक्षर लिखे जायँ तो समझना चाहिए कि माध्यम-शक्ति की कमी है, इसे विकसित करने की आवश्यकता है। बहुत बार नाम नहीं लिखा जाता। इसलिए नाम के लिए विशेष आग्रह नहीं करना चाहिए। इसके बाद उनसे ऐसे प्रश्न करने चाहिएँ, जिनके उत्तर केवल 'हाँ', 'न' में आ जायँ। जब इस प्रकार के उत्तर आने लगें तो प्रयोग जारी रखना चाहिए। आधे घण्टे से अधिक प्रयोग नहीं करना चाहिए। धीरे-धीरे जब हाथ चलने लगे तो सन्देश आने लगेंगे। उस समय आप आत्माओं से जो कुछ पूछना चाहें वह पूछें, उसका उत्तर आपको मिलेगा।

प्लानचेट (Planchette)

प्लानचेट का नाम पाठकों ने सुना होगा। कुछ लोगों ने देखा भी होगा। हमारे देश में अनेक विज्ञापनदाताओं ने इसके द्वारा भूत,

भविष्य सबका वृत्तान्त जान लेने का दावा किया है। वास्तव में केवल प्लानचेट से ऐसी कोई बात मालूम नहीं होती। स्वयं लेखन के कार्य्यों में इसका कभी-कभी प्रयोग किया जाता है; विशेष कर उन लोगों के लिए जिनकी माध्यम-शक्ति कम होती है। किन्तु बिना माध्यम-शक्ति के इसका कोई उपयोग नहीं हो सकता। जिस भाँति पेंसिल लिखने का साधन है, उसी भाँति प्लानचेट भी स्वयं लेखन का साधन है, किन्तु उससे बिना माध्यम की सहायता के कोई सन्देश प्राप्त नहीं हो सकते। प्रायः देखा जाता है कि कुछ लोग विज्ञापनदाताओं के चक्कर में आकर प्लानचेट मँगा लेते हैं और जब प्रयोग करते हैं तो उन्हें निराश होना पड़ता है। हम इस सम्बन्ध में जनता को सावधान कर देना चाहते हैं कि केवल प्लानचेट से ऐसे कोई सन्देश प्राप्त नहीं हो सकते। जब तक उपयुक्त माध्यम न हो, तब तक प्लानचेट का कोई विशेष लाभ नहीं है।

इस सम्बन्ध में हम प्रसिद्ध परलोक-विद्या-विशारद एलन कार्डेक की "The mediums Book" पुस्तक से एक अवतरण देते हैं—"पहले पहल जब आत्माओं का प्रदर्शन हुआ तो लोगों ने विविध नाम की पुस्तकें प्रकाशित करनी आरम्भ कीं। उदाहरण के लिए—डलिया के संवाद (Communication of a Basket), प्लानचेट के संवाद, टेबिल के संवाद इत्यादि। अब हम यह समझ सके हैं कि इस प्रकार की कल्पना कैसी भ्रममूलक थी। टेबिल या प्लानचेट केवल साधन हैं, इनमें कोई बुद्धि नहीं है। ये स्वतः कुछ नहीं लिख सकते। इस प्रकार के नाम देना ठीक वैसा ही होगा, जैसे कोई अपनी पुस्तक का नाम दे—'लोहे की क़लम के संवाद'। जिस प्रकार यह नाम व्यर्थ मालूम होगा, ठीक उसी भाँति ऊपर के भी नाम हैं।"

औजा बोर्ड (Anja Board) यह वर्णमाला का बोर्ड या एक चौड़ा तख़्ता होता है। इसमें किसी भी भाषा की वर्णमाला लिख सकते हैं। इसके द्वारा सन्देश प्राप्त करने में बड़ी सुविधा होती है। इस बोर्ड पर एक इण्डीकेटर (Indicator) या अक्षर दिखानेवाला लकड़ी

का एक छोटा सा यन्त्र होता है। दो आदमी इस पर हाथ रखकर बैठ जाते हैं। इसके बाद यह यन्त्र एक-एक अक्षर बताता है। इन अक्षरों को जोड़कर शब्द और वाक्य बना लेते हैं। इन्हीं वाक्यों का सन्देश हो जाता है। स्वयं लेखन की विधि में औजाबोर्ड की विधि सबसे सरल है। इसमें दो आदमियों का हाथ होने से माध्यम-शक्ति दूनी हो जाती है। इससे साधारण व्यक्ति भी संदेश प्राप्त कर सकते हैं। हमारे यहाँ इसका प्रयोग प्रधान रूप से किया जाता है। अक्षरों का यह बोर्ड किसी चौड़े मोटे काग़ज़ पर बना लेना चाहिए। आप किसी भी भाषा में अक्षर लिख सकते हैं। अक्षर बतानेवाला इण्डीकेटर इस बोर्ड पर माध्यमों के हाथ की सहायता से स्वतः घूमता रहेगा।

आत्माओं की प्रत्यक्ष आवाज़ (Direct voice) आत्माओं की प्रत्यक्ष आवाज़ भोंपे (Trumpet) द्वारा सुनी जाती है। इसके प्रयोग करने की विधि यह है कि माध्यम और ४-५-६ आदमी एक कमरे में बिल्कुल अँधेरा करके बैठ जाते हैं और भोंपा ज़मीन पर रख देते हैं। यह भोंपा ग्रामोफोन के भोंपे की भाँति होता है। इसकी लम्बाई १॥ फ़ुट से २ फ़ुट तक की होती है और इसके एक सिरे में ॥। इञ्च चौड़ा छिद्र होता है और दूसरा सिरा, जहाँ से आवाज़ सुनाई पड़ती है, ६ इञ्च का होता है। ये प्रायः काग़ज़ या हल्की धातु एल्यूमीनियम आदि के बनाये जाते हैं। प्रयोग करनेवाले परस्पर हाथ मिलाकर बैठते हैं। कमरे में बिल्कुल अन्धकार रहता है। इसके बाद भोंपा ऊपर अधर हो जाता है। अन्धकार में यह दिखाई पड़ता रहे, इसके लिए उसमें कुछ चमकनेवाले कण लगा दिये जाते हैं। प्रयोग करते समय जब भोंपा इस प्रकार ऊपर उठ जाता है तब उससे कुछ टूटी-फूटी आवाज़ आने लगती है। इसके बाद माध्यम और अन्य लोग आत्मा से प्रार्थना करते हैं कि 'हाँ बोलिए ! बोलिए।' धीरे-धीरे आवाज़ स्पष्ट सुनाई देने लगती है। हमने इसके प्रयोग अपनी विलायत-यात्रा के समय देखे हैं। जब यह भोंपा ऊपर उठता है तो हमने उसके चारों ओर हाथ फेरकर अपना यह सन्देह निवा-

रण किया कि इसमें कोई चालाकी तो नहीं है। किन्तु वह गुब्बारे की भाँति अधर रहता है। एक बार तो श्रीमती ऋषि ने उसे हाथ से ऐसा झटका दिया, कि वह ऊपर चला गया। ऐसे प्रयोग ३-३, ४-४ घण्टे तक होते रहते हैं। यदि बीच में आवाज़ कम हो जाती है तो आत्माओं से फिर प्रार्थना करते हैं कि कृपा कर बोलिए। भारत में ऐसे प्रयोम करने के लिए माध्यमों का अभाव है। हमने अपने यहाँ इसके प्रयोग किये थे, किन्तु इसमें कोई सफलता नहीं मिली।

आत्माओं के फोटो लेने की विधि

आत्माओं के फोटो भी लिये जा सकते हैं। इसके लिए ऐसे फोटोग्राफर चाहिएँ जिनमें माध्यम-शक्ति हो। विलायत में इसके नित्य प्रयोग होते हैं। हमने भी अपने यहाँ इसके प्रयोग किये थे। थोड़ी थोड़ी सफलता भी हमें मिली है। नासिक के श्री क्षीरसागर जी को भी थोड़ी सफलता मिली है, किन्तु विलायत में इस दिशा में जो सफलता प्राप्त हुई है, उसे देखकर दङ्ग रह जाना पड़ता है। वहाँ आत्मा के फोटो लेनेवाले कितने ही माध्यम हैं। अनेक लोग यह शङ्का करते हैं कि इसमें चालाकी की जाती है। माध्यम या फोटोग्राफर प्लेट बदल लेते हैं। किन्तु हमने स्वयं प्लेट ख़रीदकर उस पर अपना चिह्न बनाकर उसे दी और उस पर आत्माओं के फोटो आये। फोटो के प्रयोग हमने विलायत के चार माध्यमों के साथ किये। इनके नाम हैं (१) मिसेज डीन, (२) मिस्टर होप, (३) मिस्टर जान मायर और (४) फाकनर। ये प्रयोग रात और दिन दोनों में होते हैं। एक्सपोजर (प्रकाश-दर्शन) साधारण रूप में एक या दो सेकण्ड का होता है। किन्तु आत्माओं के फोटो लेने में प्रकाश-दर्शन ५-६ या १० मिनट तक का भी होता है। इससे कभी कभी स्थूल शरीरधारियों के फोटो बिगड़ भी जाते हैं, किन्तु आत्माओं के फोटो आ जाते हैं। माध्यम और प्रयोग करनेवाले पहले प्लेट को दोनों हाथों में रखकर आत्माओं से प्रार्थना करते हैं कि आपका

हम फोटो लेना चाहते हैं, कृपा कर हमें सहायता कीजिए। इसके बाद वह प्लेट को केमरे के अन्दर खोलता है और फोटो लेने के बाद उसी समय उसे डिवलप भी कर लेता है। हमारे प्रयोगों में कितनी ही आत्माओं के फोटो आये, जिन्हें हम नहीं पहचानते। एक प्रयोग में केवल दो वाक्य आये हैं, जिनका अर्थ है—"पिताजी को मेरा प्रणाम कहिए।" इसी प्रकार के कितने ही फोटो आये हैं। ये प्रयोग भी भारत में किये जायँ तो दुखी लोगों को अपनी परलोकगत आत्माओं का साक्षात्कार कर बड़ा सन्तोष होगा।

विना केमरे के चित्र (Scotography)

इसकी विधि में केवल इतना ही अन्तर है कि इसमें प्लेट को केमरे पर नहीं चढ़ाते। माध्यम प्लेट को दोनों हाथों में रख १०-१५ मिनट तक सिर से लगाये रखता है। इसके बाद उस प्लेट को डिवलप किया जाता है और उसमें आत्माओं के चित्र आ जाते हैं। भारत में इसके प्रयोग अभी तक नहीं हुए। हमने विलायत में मिसेज डोनोहो के साथ इसके प्रयोग किये थे। हम अपने साथ प्लेट ले गये थे और उन पर अपने चिह्न भी कर दिये थे। इसके बाद उन्होंने उपर्युक्त विधि से प्लेट को हाथ में लेकर सिर से लगाया। इसके पश्चात् प्लेट डिवलप की गई तो उसमें प्रसिला माङ्क का फोटो आया। और भी कई प्रयोग किये, जिनमें कभी किसी और कभी किसी के फोटो आये। हमने इनके पास ४००० फोटो चित्रों का एक विचित्र संग्रह देखा। उसमें अनेक आत्माओं के फोटो थे।

प्रत्यक्ष दर्शन (Materialization) की विधि

आत्माओं का साक्षात्कार भी किया जाता है। हम पहले बता चुके हैं कि इस प्रकार के प्रयोग हमने विलायत में स्वयं देखे हैं। अब हम इसकी विधि पर भी प्रकाश डालते हैं। ऐसे प्रयोग केवल उपयुक्त माध्यम से ही हो सकते हैं। प्रयोग अँधेरे में किये जाते हैं। ऐसे

प्रयोग में माध्यम को एक केबीनेट में, जो तीन पर्दों का बनाया जाता है, बिठाया जाता है। इसके बाद माध्यम अचेत हो जाता है। उसके शरीर से एक तत्त्व, जिसको अँगरेज़ी में एक्टोप्लेज़्म (Ectoplasm) कहते हैं, निकलता है। यह तत्त्व परलोक-विद्या-विशारदों की खोज है। यही तत्त्व धीरे धीरे साकार रूप धारण करने लगता है और धीरे धीरे यह बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है। माध्यम चालाकी न कर सके, इसके लिए उसके हाथ-पैर कुर्सी से बाँधकर भी ऐसे प्रयोग किये गये हैं।

पिछले पृष्ठों में हम इस सम्बन्ध में बहुत कुछ लिख चुके हैं, इसलिए अब इस पर और अधिक विस्तार से लिखने की आवश्यकता नहीं समझते। हम अपने देश में भी इसके प्रयोग देख सकें, इसके लिए हमें माध्यमों की आवश्यकता है। हमारे देश के वैज्ञानिकों के सामने यह काम है कि वे ऐसे माध्यमों की खोज निकालें।

——

छठा परिच्छेद

परलोक की झाँकी

गत परिच्छेदों में हमने परलोकगत आत्माओं से सम्बन्ध स्थापित करने की विधि बताई है। अब पाठक यह जानने के लिए उत्सुक होंगे कि इतना सब करने के बाद भी उन्हें यह मालूम न हो सका कि परलोक कैसा है। वहाँ परलोकगत आत्माएँ कैसे रहती हैं। अन्ततः इस लोक में एक दिन सभी को जाना है। अतः इसके सम्बन्ध में लोगों की जिज्ञासा स्वाभाविक है। इसलिए अब हम परलोक का भी कुछ वर्णन करना आवश्यक समझते हैं। एक कहावत है "बिना मरे स्वर्ग नहीं दिखता।" इसमें सन्देह नहीं कि बिना मरे स्वर्ग नहीं दिख सकता। हम भी इसके कोई अपवाद नहीं हैं। हम जो कुछ लिख रहे हैं, वह देखकर नहीं लिख रहे हैं, किन्तु परलोकगत आत्माओं से जो सन्देश हमें तथा संसार के विभिन्न भागों के परलोक-विद्या-विशारदों को प्राप्त हुए हैं, उन्हीं के आधार पर हम यह वर्णन लिखते हैं। यह सन्देश विभिन्न धर्मों, विभिन्न जातियों और विभिन्न देशों के लोगों को विभिन्न आत्माओं से मिले हैं, किन्तु इन सब सन्देशों में प्रायः समानता है। इसलिए इनके सत्य होने में कोई सन्देह नहीं रहता। इसके अतिरिक्त जब परलोकगत आत्मा अपना पूर्ण परिचय दे देती है और हमें उसके परिचय से सन्तोष हो जाता है तब उसके दिये हुए सन्देशों पर हम क्यों अविश्वास करें? फिर ऐसे सन्देश केवल एक या दो आत्माओं ने नहीं दिये, किन्तु सैकड़ों-हज़ारों आत्माओं ने दिये हैं। इन सबके सन्देशों को हम क्योंकर असत्य मान लें? अवश्य ही हमारे परलोक-वर्णन से उन लोगों के विश्वास को आघात पहुँचेगा, जो केवल किसी धर्मग्रन्थ के आधार पर परलोक की

कल्पना किये बैठे हैं। किन्तु इसके लिए हमें कोई दोषी नहीं ठहरा सकता। हमें तथा संसार के अन्य परलोक-विद्या-विशारदों को जो अनुभव हुए हैं उन्हें केवल इसलिए प्रकट नहीं करना कि इससे कुछ लोगों की कल्पना को आघात पहुँचेगा कहाँ तक युक्तिसङ्गत है, इसे पाठक स्वयं विचार लें। साथ ही हम उन लोगों से भी सादर निवेदन करेंगे कि जब हमारे पास प्रत्यक्ष प्रमाण हैं तो हम उन्हें छोड़कर ऐसी बातों पर कैसे विश्वास कर लें, जिसके लिए केवल ग्रन्थों के अतिरिक्त और कोई आधार नहीं है।

महाकवि कालिदास ने एक स्थल पर कहा भी है—

पुराणमित्येव न साधु सर्वं
न चापि सर्वं नवमित्यवद्यम्
संतः परीक्ष्यान्यतरद्भजन्ते
मूढः परप्रत्ययनेयबुद्धिः।

अर्थात् जो कुछ प्राचीन है वह सब इसलिए ही अच्छा नहीं हो सकता कि वह प्राचीन है और जो नवीन है वह इसलिए ही निन्दात्मक नहीं हो सकता कि वह नवीन है। सन्त पुरुषों का काम है कि परीक्षा कर जो सत्य हो उसे ग्रहण करें।

परलोक-विद्या-विशारदों ने बिना किसी धार्मिक पक्षपात के ये सब सन्देश प्राप्त किये हैं। बहुत सी बातों में उनका मत नहीं मिलता था, फिर भी उन्हें सत्य के सामने सिर झुकाना पड़ा है। कुछ लोग हमसे पूछेंगे कि तो क्या हमारे शास्त्र असत्य हैं? उन्हें हम अतीव नम्रता से उत्तर देते हैं कि आपके शास्त्रों को असत्य बताने का हमारा उद्देश्य नहीं है। हम किसी के शास्त्र को असत्य कहने का दुस्साहस नहीं कर सकते। किन्तु हमारे पास जो सन्देश परलोक-गत आत्माओं से प्राप्त हुए हैं, वह प्रत्यक्ष प्रमाण है। यदि ये प्रमाण एक या दो या १०-२० आदमियों को ही मिले होते तो हम समझते कि सम्भवतः ये असत्य होंगे, किन्तु जब इस प्रकार के प्रमाण एक-दो नहीं सैकड़ों

और हज़ारों मिल चुके हैं और मिलते जाते हैं तो इन प्रमाणों की उपेक्षा कैसे की जा सकती है। हम तो कहते हैं कि आप प्रयोग कीजिए और जो परिणाम प्राप्त हों उन्हें देखिए। यदि वे सब शास्त्र के अनुगत हों तो हमें बड़ी प्रसन्नता है। बहुत सी बातें शास्त्रों की मिलती हैं। उन्हें हमने मुक्त कण्ठ से स्वीकार किया है, किन्तु जो नहीं मिलती, उसे भी हम लिखे विना नहीं रह सकते।

संसार का नियम है कि जब कोई नया ज्ञान प्रकट होता है तो उसका विरोध भी होता है। नया ज्ञान प्रकट करनेवाले लोगों को फ़ाँसी तक दी गई है, उन्हें अनेक प्रकार की यातनाएँ दी गई हैं। इतिहास इन घटनाओं से भरा हुआ है जिनका उल्लेख हम स्थानाभाव से नहीं कर सकते; फिर भी इतना अवश्य है कि सत्य त्रिकाल में सत्य रहेगा। इसलिए हम जिसे सत्य जानते हैं उसे निःसंकोच भाव से प्रकट करते हैं, फिर चाहे यह लोगों को रुचिकर हो अथवा अरुचिकर।

स्वर्ग-नरक की कल्पना

साधारण रूप से यह कल्पना है कि जब मनुष्य मरता है तो वह स्वर्ग या नरक में जाता है। लोग यह भी मानते हैं कि जो लोग पुण्यात्मा होते हैं वे स्वर्ग में जाते हैं और पापात्मा नरक में जाते हैं। स्वर्ग और नरक की कल्पना विभिन्न धर्मों में विभिन्न रूप की है। साधारणतया लोगों का विश्वास है कि स्वर्ग एक ऐसा स्थान है जहाँ सब प्रकार के सुख मिलते हैं और इसी भाँति नरक भी है जिसमें जीव को विभिन्न रूप से यातनाएँ दी जाती हैं। ऐसे स्वर्ग के विषय में जब किसी से पूछो कि वह कहाँ है तो वह केवल इतना ही कह देते हैं कि स्वर्ग ऊपर है और नरक नीचे है। इस सम्बन्ध में प्रसिद्ध परलोक-विद्या-विशारद एलन कार्डेक लिखते हैं—"जब आत्मा है, उसमें चैतन्य भी है, उसे दुःख-सुख की अनुभूति भी होती है तो मरने के बाद वह कहाँ जाती है? साधारण लोगों का विश्वास है कि वह

स्वर्ग या नरक में जाती है। परन्तु यह नरक-स्वर्ग है कहाँ ! इसका उत्तर भी यह दिया जाता है कि स्वर्ग ऊपर है और नरक नीचे है। अब यह बात हम जानते हैं कि ऊपर नीचे का कोई अर्थ नहीं है। पृथ्वी का जो भाग अभी ऊपर है, १२ घण्टे के बाद वह नीचे हो जायेगा और जो नीचे है, वह ऊपर आ जायगा। इसी भाँति नीचे से यदि पृथ्वी के नीचे की कल्पना हो तो भूगर्भ-विशारदों ने खुदाई कर यह देख लिया है कि नरक जैसा कोई स्थान नहीं है।"

अब मूल प्रश्न रह जाता है कि अन्ततः मृत आत्मा शरीर छोड़कर कहाँ जाती है ! इसका उत्तर एलन कार्डेक इस भाँति देते हैं—"परलोक के पुराने सिद्धान्तों और नये सिद्धान्तों में बड़ा अन्तर है। नये मत के अनुसार परलोकगत आत्माएँ किसी एक नियत स्थान में नहीं रहतीं, किन्तु वे समस्त विश्व में व्याप्त रहती हैं।"

मृत्यु के समय

सर्वप्रथम हम मृत्यु के समय का ही वर्णन करते हैं। मृत्यु के समय एक ओर आत्मा अपना स्थूल शरीर छोड़कर परलोक जाने की तैयारी करती है, दूसरी ओर उसके सगे सम्बन्धी इतने अधिक दुखी और निराश होते हैं कि उनकी अवस्था करुणाजनक हो जाती है। एलन कार्डेक इस अवस्था के विषय में लिखते हैं—"हमारी जितनी भी सांसारिक रीति-नीति, रहन-सहन और व्यवहार है, वह सब मनुष्य को इसी संसार से चिपटे रहने का विधान करती है और परलोक की राह से बिलकुल अलग रखती है। जब कोई आदमी मरता है तो उसके परिवार पर मानो कोई बड़ा दुःख गिर पड़ता है। वे मृत्यु को आशा की किरण न समझकर दुःख का कारण मानते हैं। मृत्यु को सब घृणा की दृष्टि से देखते हैं। कोई इसे आत्मा को मुक्त करनेवाला नहीं समझता। मरनेवाले के सम्बन्धी मृत व्यक्ति से अन्तिम प्रणाम कर समझते हैं कि अब पुनः इससे नहीं मिल सकेंगे। लोग मृत व्यक्ति के लिए शोक करते हुए

कहते हैं—'कैसा जवान आदमी था, घर में सब कुछ था, परन्तु बिना कुछ सुख देखे ही यह चलता बना।' यह कल्पना किसी के हृदय में नहीं आती कि मरने के बाद इसे सुख होगा। मृत्यु के सम्बन्ध में हमारी ये धारणाएँ तब तक बनी रहेंगी जब तक हम परलोकगत आत्माओं से भली भाँति सम्बन्ध स्थापित नहीं कर लेते।"

जिस समय सारा परिवार दुःख से सन्तप्त रहता है उस समय जीव अपने स्थूल शरीर को छोड़कर इस लोक से विदा होता है। तो क्या मृत्यु के समय उसे कष्ट होता है ? हम लोग मरनेवाले व्यक्ति को छटपटाते हुए देखकर अनुमान करते हैं कि इसे बड़ा कष्ट हो रहा होगा। कितने ही मनुष्य मृत्यु से नहीं डरते, किन्तु मृत्यु के समय जो वेदना होती है उससे उन्हें अवश्य भय होता है। यह भय क्या सत्य है ? जैसा कि हम गत पृष्ठों में बता चुके हैं, कि प्राणी के दो शरीर होते हैं; अर्थात् एक स्थूल शरीर और दूसरा सूक्ष्म शरीर। जब सूक्ष्म शरीर स्थूल शरीर को छोड़ देता है तो मृत्यु हो जाती है। इस स्थूल शरीर को छोड़ते समय क्या आत्मा को कष्ट होता है ? इसके सम्बन्ध में एलन कार्डेक लिखते हैं,—"यह दुःख सूक्ष्म शरीर और स्थूल शरीर के पारस्परिक सम्मिश्रण की मात्रा पर निर्भर है। सूक्ष्म शरीर यदि स्थूल शरीर को शीघ्रता से छोड़ दे तो आत्मा को कम कष्ट होगा। हाँ, यदि उसे छोड़ने में विलम्ब लगे तो अवश्य दुःख होगा। किन्तु यह दुःख तभी तक है जब तक वह शरीर को नहीं छोड़ देता। शरीर को छोड़ते ही वह दुःख से निवृत्त हो जाता है।......स्थूल शरीर छोड़नेवाली आत्माओं के निम्नलिखित चार प्रकार मुख्य रूप से हैं। इनके और भी अनेक भेद हो सकते हैं—(१) ज्योंही स्थूल शरीर की क्रिया बन्द हो त्योंही सूक्ष्म शरीर यदि स्थूल शरीर को छोड़ दे तो आत्मा को कोई कष्ट नहीं होता। (२) स्थूल शरीर और सूक्ष्म शरीर परस्पर ऐसे गुथे हुए हों कि अलग नहीं होते तो स्थूल शरीर के प्रत्येक अङ्ग से सूक्ष्म शरीर को निकलना पड़ता है। उसमें बहुत खींचा-तानी होती है, इससे आत्मा को कष्ट होता है। (३) यदि स्थूल शरीर

और सूक्ष्म शरीर का सम्बन्ध कुछ ढीला हो तो आत्मा को मृत्यु के समय कोई कष्ट नहीं होता। इसी लिए हिन्दू शास्त्रों ने स्थूल शरीर को बहुत अधिक महत्त्व नहीं दिया। प्रबुद्ध व्यक्ति अपनी आत्मा को मृत्यु के लिए तैयार रखते हैं, इसलिए ऐसे व्यक्तियों को दुःख नहीं होता। (४) ऐसे भी उदाहरण हैं कि मृत्यु के बाद भी सूक्ष्म शरीर का विच्छेद स्थूल शरीर से सम्पूर्ण रूप से नहीं हो पाता, इसलिए जब तक वह सड़कर गल नहीं जाता तब तक उसमें सूक्ष्म शरीर बना रहता है। हिन्दुओं के यहाँ मृत्यु के बाद तुरन्त शव को जला देते हैं, इसलिए सूक्ष्म शरीर को अलग होने में बहुत अधिक समय नहीं लगता। अवश्य ही जिन देशों में शव को गाड़ा जाता है वहाँ यह सम्भावना हो सकती है।

मरने के समय कौन आते हैं ?

लोगों की प्रायः ऐसी धारणा है कि मरने के समय यमदूत या देवदूत आते हैं और आत्मा को ले जाते । परलोक-विद्या-विशारदों को परलोकगत आत्माओं से ऐसे सन्देश मिले हैं कि मनुष्य की मृत्यु के समय उसकी सम्बन्धी आत्माएँ आती हैं और उसे परलोक ले जाती हैं। परलोक में जाने के बाद आत्मा को परलोक के नियमों के अनुसार . होता है। कभी कभी ऐसी अज्ञात आत्माएँ लेने आती हैं, जिन्हें मरनेवाला व्यक्ति नहीं पहचानता। किन्तु उसे इच्छापूर्वक अथवा अनिच्छापूर्वक उनके साथ जाना ही पड़ता है। हमारे प्रयोग में एक आत्मा ने मरने के समय का वर्णन करते हुए लिखा—"मैं सन्ध्या समय चुपचाप पड़ी थी। मैंने एक बाग़ देखा और उसमें दो आदमी देखे। उनकी आकृति मनुष्यों की भाँति थी। किन्तु अब मैं यह जान सकी हूँ कि वे दूत थे। ये दूत डरावने नहीं थे। एक दूत ने कहा—"अब और कितना समय लगेगा ?" मैं उस समय अचेत अवस्था में सुन रही थी। एक दूत ने फिर कहा—"यह वही आदमी है न ? अन्यथा कहीं तुम्हें धोखा न हो ?" दूसरे ने उत्तर दिया—"नहीं—नहीं; यह वही

आदमी है।" इसके बाद मुझे मालूम नहीं कि मैं कैसे इस लोक में आया।

उपर्युक्त सन्देश से मालूम होता है कि कोई अज्ञात आत्माएँ या दूत लेने आये थे। स्थूल शरीर छोड़ते समय आत्माएँ प्रायः अचेत हो जाती हैं। एलेन कार्डेक अपनी प्रसिद्ध पुस्तक Heaven and Hell में लिखते हैं—हमारी पेरिस की सोसाइटी के एक सदस्य मिस्टर सेनसन ने एक पत्र सोसाइटी के प्रेसिडेंट के नाम लिखा—'अब मेरा अन्तिम समय समीप जान पड़ता है, इसलिए मैं आपसे अपनी गत वर्ष की प्रार्थना को फिर दोहराता हूँ। मैंने कहा था कि मेरी मृत्यु के बाद, जितनी जल्दी हो सके, मेरी आत्मा को बुलाकर बात कीजिएगा और बारम्बार बात कीजिए जिससे मैं आपकी सहायता कर सकूँ।' उनकी इस प्रार्थना के अनुसार हम सोसाइटी के कुछ सदस्यों के साथ उनके घर गये। अभी उनका शव दफनाया नहीं गया था। उसकी क्रिया में अभी एक घण्टे की देर थी। हमने उनके शव के समीप ही उनकी आत्मा का आह्वान कर पूछा—

"मिस्टर सेनसन, आपके आदेशानुसार हमने आपकी आत्मा का आह्वान किया है। ऐसा कर जहाँ हम एक ओर अपने कर्त्तव्य का पालन कर रहे हैं, वहाँ दूसरी ओर आपसे भेंट कर हमें अत्यन्त प्रसन्नता हुई।"

उत्तर—मैं ईश्वर का धन्यवाद करता हूँ कि उसने मुझे आपसे बात करने की अनुमति प्रदान की है। मैं आपकी कृपा का भी धन्यवाद करता हूँ, किन्तु अभी मैं बहुत ही अशक्त हूँ।

प्रश्न—आप अपनी जीवित अवस्था में बहुत अधिक कष्ट में थे—रोग-पीड़ित थे। हम पूछना चाहते हैं कि अब आपकी अवस्था कैसी है? क्या अब भी आपको रोग की वेदना है?

उत्तर—अब मैं बहुत अच्छा हूँ। रोग की वेदना बिल्कुल नहीं है। अब तो मैं बिल्कुल ही नया बन गया हूँ। पहली बात यहाँ आकर यह होती है कि यहाँ की बातें हमारी समझ में कुछ भी नहीं आतीं। कितने

ही दिनों तक हम यहाँ आकर स्पष्ट विचार नहीं कर सकते। किन्तु मैंने ईश्वर से प्रार्थना की थी कि मुझे शक्ति दो कि मैं अपने सम्बन्धियों से तुरन्त बात-चीत कर सकूँ। ईश्वर ने मेरी यह प्रार्थना स्वीकार कर ली।

प्रश्न—यह बताइए कि मरने के बाद आपको पूरा चैतन्योदय कितनी देर के बाद हुआ ?

उत्तर—कोई ८ घण्टे के बाद।

प्रश्न—क्या आपको यह दृढ़ निश्चय है कि अब आप हमारे लोक में नहीं हैं ? यदि नहीं हैं तो आप यह कैसे समझते हैं ?

उत्तर—मैं दृढ़ निश्चय से कह सकता हूँ कि अब मैं आपके लोक में नहीं हूँ; किन्तु मैं आपके समीप रहूँगा। मैं अपने जीवन-काल में सदा पुण्य करता रहा हूँ और पापों से बचता रहा हूँ, वही यहाँ रहकर भी करूँगा और आप लोगों से भी कराऊँगा। मैं परलोक-विद्या का प्रचार करने में सहायता करूँगा। इससे सत्य का उदय होगा। अब मैं वृद्ध नहीं हूँ, किन्तु एक जवान आदमी की भाँति शक्तिशाली हूँ। एक शब्द में कहूँ, तो यों कह सकता हूँ कि अब मेरा कायाकल्प हो गया है। मैं स्थूल शरीर के बन्धन से मुक्त हो गया हूँ। मेरा देश असीम है और मेरा भविष्य ईश्वर की पूर्णता में है। यही बात मैं अपने बच्चों को भी कहना चाहता हूँ।

प्रश्न—आपका यह शव हमारे समीप रक्खा है। इसका आपके मन पर क्या प्रभाव पड़ रहा है ?

उत्तर—एक दिन यह मिट्टी हो जायगा। मेरे शव, मैं तेरा भी धन्यवाद करता हूँ; क्योंकि तूने ही मेरी आत्मा को पवित्र किया है।

प्रश्न—क्या आपको अन्त-समय तक चैतन्य था ?

उत्तर—हाँ, मेरी आत्मा अपनी सब शक्तियों का व्यवहार करती रही। मैं अब भविष्य की बातें भी देख सकता हूँ।

प्रश्न—जब आप अपने स्थूल शरीर से अन्तिम श्वास ले रहे थे तो क्या उस समय भी आपमें चैतन्य था ? उस समय क्या हुआ था ? आपको मृत्यु के समय कैसा अनुभव हुआ ?

उत्तर—जब स्थूल शरीर से आत्मा पृथक् होता है तो जीवन भङ्ग हो जाता है और आत्मा की दृष्टि हीन हो जाती है। इसके बाद हम शून्य आकाश में हो जाते हैं और किसी अज्ञात लहर से ऐसे स्थान में पहुँच जाते हैं जहाँ सब सुख हैं। अब मुझे कोई कष्ट नहीं है। इसके साथ ही मुझे अपार हर्ष हो रहा है।

इसके बाद मिस्टर सेनसन ने अपनी कब्र के लिए निम्नलिखित संदेश दिया—

"मेरे मित्रो, मृत्यु का भय मत करो। यह भी हमारी जीवन-यात्रा की एक मञ्ज़िल है। यदि हमारा जीवन ठीक रहा है तो हमें अत्यधिक सुख हैं। मैं फिर आपसे कहूँगा कि साहस रक्खो। सत्य का प्रचार करो। सांसारिक वस्तुओं से बहुत अधिक प्रेम मत करो। याद रक्खो, संसार की वस्तुओं का अधिक भोग, दूसरे के भाग को हड़पे बिना नहीं हो सकता और ऐसा करना नैतिक अपराध है।"

ऊपर के वर्णन से कितनी ही बातें नई जान पड़ती हैं। इसमें आत्मा को ले जानेवाली 'अज्ञात लहरें' हैं। रावबहादुर नृसिंहम् की पुस्तक 'नागेन्द्र सायी' से भी हम एक अवतरण देते हैं। श्री नृसिंहम् लिखते हैं—एक प्रयोग में, जब मेरे परिवार के सब लोग उपस्थित थे, नागेन्द्र को आह्वान किया गया। उसे हम लोगों की पूरी शक्ति मिल रही थी, इसलिए उसने निम्नलिखित सन्देश हमें दिया—"हमारे यहाँ का अस्तित्व पृथ्वी-जीवन का ही दूसरा भाग है। यहाँ भी हमारी पृथ्वी-जीवन की रूपरेखा बनी रहती है। हमारा स्वभाव बिल्कुल नहीं बदलता। हमारी भावना भी ज्यों की त्यों बनी रहती है। हम केवल इतना ही अनुभव करते हैं कि हमारे सिर से एक बोझ हट गया। इसके अतिरिक्त और कोई परिवर्तन नहीं होता।

"यहाँ आने पर हमें यह अनुभव नहीं होता कि हम किसी नये स्थान में आ गये हैं। यहाँ हमें अपने अनेक सम्बन्धी मिलते हैं। हम उन्हें नहीं जानते, किन्तु वे हमें पहचानते हैं और अपना-अपना परिचय देते हैं।

जब कोई आत्मा परलोक में जाती है तो उसकी सम्बन्धी आत्माएँ उसके समीप आकर एकत्र हो जाती हैं। पहले इन सबको देखकर नई आत्मा चकित रह जाती है, बाद में उसे मालूम हो जाता है कि अब वह कहाँ आ गई है। पृथ्वी के सम्बन्धी उसकी प्रतीक्षा करते हैं, किन्तु वह उनके समीप ही रहती है। बार-बार जाकर अपने सम्बन्धियों का स्पर्श करती है, किन्तु जब तक कोई उपयुक्त माध्यम न हो तब तक वह अपने को प्रकट नहीं कर सकती।"

परलोक की रूप-रेखा

अब हम परलोक की रूप-रेखा का वर्णन करना चाहते हैं। परलोक-गत आत्माओं से परलोक-विद्या-विशारदों को इस सम्बन्ध में जो संदेश मिले हैं, उन्हीं के आधार पर यह वर्णन लिखा जायगा। इसमें बहुत सी बातें हमारे हिन्दू-शास्त्रों से मिलती-जुलती हैं। मिस्टर आर्थर फिण्डले अपनी पुस्तक On the edge of the Etheric में लिखते हैं—चौथी दिसम्बर सन् १९२३ को ७ बजे रात को हमारे प्रयोग में एक अज्ञात आत्मा ने आकर प्रत्यक्ष आवाज़ (Direct voice) से कहा—'मिस्टर फिण्डले, पिछली बार जब आप मेरे माध्यम के साथ प्रयोग करने बैठे थे तब आपने हमारे लोक का वर्णन पूछा था। मैं आपको जो कुछ बता सकती हूँ, वह बताने को आई हूँ। आप पूछिए। क्या पूछते हैं?' यह आवाज़ मेरे सिर के ऊपर सुनाई पड़ रही थी। मैंने आत्मा का धन्यवाद कर पूछा—'हम अपने लोक में भौतिक वस्तुओं को देखते हैं जैसे पृथ्वी, सूर्य, चन्द्र और तारे इत्यादि; आपके लोक में क्या ये सब दिखाई देते हैं?'

उत्तर—मैं इस प्रश्न का उत्तर केवल उतना ही दूँगा, जितना मेरा ज्ञान है। आपके लोक में एक दूसरा लोक भी मिला हुआ है। यह विश्व महान् है; किन्तु आप जो कुछ देखते, सुनते और स्पर्श द्वारा अनुभव करते हैं, उसी को मानते हैं। परन्तु विश्वास कीजिए कि भौतिक संसार

के अतिरिक्त सूक्ष्म वस्तुओं के अनेक लोक हैं, वहाँ भी जीवन है। आप ऐसे लोकों की कोई कल्पना नहीं कर सकते। आपके मृत्यु-लोक से ही हमारा यह लोक भी सम्बन्धित है। इसमें मनुष्य आपके यहाँ से मरकर आता है। आपके लोक के ऊपर ही विभिन्न गुरुता के अन्य लोक हैं और वे सब आपकी पृथ्वी के साथ घूमते हैं।

प्रश्न—तो क्या आपका लोक वास्तविक है? क्या आप उसे छू सकते हैं?

उत्तर—हमारे लिए तो यह वास्तविक है; किन्तु हमारे मन की जैसी स्थिति होती है वैसा ही हम यहाँ रहते हैं। यदि हम चाहें तो बड़े सुन्दर देश में रह सकते हैं। जिस भाँति हम पृथ्वी पर अपनी इच्छा का वातावरण बना लेते हैं, उसी भाँति हम यहाँ भी अपने मन के आदमी ढूँढ़ लेते हैं। हमारे लोक में भी समान गुण रखनेवालों में परस्पर आकर्षण और प्रेम होता है। जो लोग बुरी भावना के हैं, वे बुरी भावनावाले लोगों के साथ पहुँच जाते हैं। इसी भाँति अच्छी भावनावाले व्यक्ति भी अपने समान भावना रखनेवालों के पास पहुँच जाते हैं। जब हम मृत्युलोक में आते हैं तब हम मृत्युलोक की स्थिति के अनुसार बन जाते हैं। हमारा शरीर कुछ भारी हो जाता है। यही कारण है कि जिन लोगों को आत्माएँ देखने की शक्ति है उन्हें कभी-कभी हम दिखाई दे सकते हैं।

प्रश्न—क्या आपके लोक के सब निवासी समय-समय पर पृथ्वी पर आते हैं?

उत्तर—जैसे-जैसे हमारी आत्मा का विकास होता जाता है और हम ऊपर चढ़ते जाते हैं, वैसे-वैसे हमारा सम्पर्क पृथ्वी से कम होता जाता है। यह सब अपनी इच्छा पर अवलम्बित है। हम अपनी इच्छा से पृथ्वी पर आ सकते हैं, किन्तु यदि हमें आने की इच्छा ही न हो तो हम क्यों आयेंगे?

प्रश्न—क्या आप अपने लोक में अपना व्यक्तित्व बनाये रखते हैं?

उत्तर—आप ज़रा किसी ऐसे ग्राम की कल्पना कीजिए जिसके पास ही कोई पहाड़ी हो और वर्षा होती हो। आप देखेंगे कि वर्षा का पानी बह-बहकर नालों में आता है; नालों से वह नदियों में जाता है और नदियों से बहकर समुद्र की ओर जाता है। वर्षा की बूँद को आप व्यक्ति समझ लें। वर्षा की बूँद में जो सूक्ष्म अणु हैं वे अपना अस्तित्व, समुद्र में मिलकर भी, स्थिर रखते हैं। इसी भाँति हम आत्माएँ भी उन्नति करती हुई अपना व्यक्तित्व रखती हैं, अन्त में हम पूर्ण ज्ञान में विलीन हो जाती हैं और दिव्य शक्ति का कोई अङ्ग बन जाती हैं।

प्रश्न—आपने कहा है कि आप अपने मन की स्थिति के अनुसार ही अपना वातावरण बनाते हैं। अब आप यह बताइए कि आपका जीवन शुद्ध मानसिक जीवन ही है, या आप हमारी भाँति अपने यहाँ की वस्तुओं को छूकर अनुभव भी कर सकते हैं? दूसरे शब्दों में हम यों पूछें कि क्या आपका लोक भी हमारे संसार की भाँति एक भौतिक या स्थूल है?

उत्तर—हमारा लोक भौतिक या स्थूल लोक नहीं है। किन्तु यह स्पर्श किया जा सकता है। आप जिस भाँति अपने स्थूल लोक में अपना मन लगाते हैं, उससे बिलकुल भिन्न रीति से हम अपने लोक में लगाते हैं। जैसा हमारा मन होता है, वैसी ही हमारी स्थिति हो जाती है। यदि हमारा मन अच्छा है तो स्थिति भी अच्छी होती है। यदि बुरा है तो स्थिति भी बुरी होती है।

प्रश्न—क्या आप स्वप्न-संसार में रहते हैं जिसमें प्रत्येक वस्तु वास्तविक दिखते हुए भी वास्तव में सच्ची नहीं होती?

उत्तर—नहीं, हम स्वप्न-संसार में नहीं रहते। मैंने आपसे अभी कहा है कि हम अपने लोक की वस्तुओं को स्पर्श करते हैं, वे वास्तविक हैं, किन्तु जिन अणुओं से आपका लोक बना है, उससे भिन्न हमारा लोक बना है। हम अपने लोक में जिस भाँति इच्छापूर्वक कार्य कर सकते हैं, उस भाँति आप अपने लोक में नहीं कर सकते।

प्रश्न—तो क्या प्रत्येक आत्मा अपने निज के संसार में रहती है ?

उत्तर—प्रत्येक व्यक्ति अपने ही लोक में रहता है। यदि आप मुझसे पूछें कि क्या प्रत्येक आत्मा उसी भाँति देख सकती और अनुभव कर सकती है तो मैं कहूँगा—हाँ कर सकती है। एक लोक की सभी आत्माएँ समान रूप से अनुभव कर सकती हैं। हमारा लोक भी आपके लोक के समान है, किन्तु यह सूक्ष्म अवस्था का है।

प्रश्न—आप जो कुछ देखते हैं, क्या वह सब स्पर्श भी कर सकते हैं ?

उत्तर—अवश्य। हम स्पर्श कर वैसा ही अनुभव करते हैं, जिस भाँति आप करते हैं।

प्रश्न—क्या आप भोजन करते हैं और उसके स्वाद का भी उपभोग करते हैं ?

उत्तर—हाँ, हम खाते-पीते अवश्य हैं; किन्तु आप जिस अर्थ में खाने-पीने की बात पूछते हैं, उस अर्थ में नहीं। हमारा मानसिक भोजन होता है। हम प्रत्येक वस्तु का उपयोग और अनुभव मानसिक रूप से करते हैं, शरीर से नहीं।

प्रश्न—मैं आपको देख नहीं सकता। यदि मैं देख सकूँ तो आप कैसे दृष्टिगोचर होंगे ?

उत्तर—मेरा जैसा शरीर पृथ्वी पर था वैसा ही इस समय है। हमारे वैसे ही हाथ-पैर हैं और हम उन्हें आपकी ही भाँति चलाते हैं। पहले मेरा यह सूक्ष्म स्थूल शरीर से घुला मिला हुआ था। अब वह पृथक् हो गया है। सूक्ष्म शरीर ही मनुष्य का वास्तविक शरीर है। स्थूल शरीर मृत्यु के बाद नष्ट हो जाता है और हम सूक्ष्म शरीर से सूक्ष्म लोक में आ जाते हैं। हमारा यह सूक्ष्म हमारे लिए उसी भाँति सत्य है, जिस भाँति मृत्युलोक में हमारा स्थूल शरीर। इस सूक्ष्म शरीर से हमें वैसी ही अनुभूति होती है, जिस भाँति स्थूल शरीर से आपको होती है। जब हम किसी वस्तु का स्पर्श करते हैं तो हम उसका अनुभव करते हैं—हम जब किसी वस्तु को देखना चाहते हैं तो देख सकते हैं। यद्यपि हमारा स्थूल शरीर नहीं है,

फिर भी हमारी आकृति, चिह्न और भाव सब स्थूल शरीर के हैं। जिस भाँति आप चलते-फिरते हैं, एक स्थान से दूसरे स्थान में जाते हैं, वैसे ही हम भी चलते-फिरते हैं, अन्तर केवल इतना ही है कि आपकी अपेक्षा हम शीघ्रगामी हैं।

प्रश्न—मन (Mind) क्या है ? क्या यह मस्तिष्क से (Brain) पृथक् है ?

उत्तर—हाँ, पृथक् हैं। आप अपना मन लेकर परलोक में आते हैं। आप अपने स्थूल शरीर का मस्तिष्क पृथ्वी पर ही छोड़ आते हैं। यहाँ सूक्ष्म शरीर का मस्तिष्क या मन रहता है।

प्रश्न—क्या आप अपने लोक के सम्बन्ध में हमें और भी कुछ बतायेंगे ?

उत्तर—एक लोक की सब आत्माएँ समान रूप से देख सकती हैं, स्पर्श कर सकती हैं और अनुभव कर सकती हैं। यदि हम किसी खेत को देखते हैं तो वह हमारे लोक की सब आत्माओं को खेत ही दृष्टिगोचर होगा। इसलिए यह स्वप्न नहीं है। हमारे लिए यहाँ की सभी वस्तुएँ वास्तविक हैं। हम लोग परस्पर मिलकर सत्सङ्ग का उसी भाँति लाभ उठाते हैं, जिस भाँति आप लोग अपने लोक में। हमारे यहाँ पुस्तकें हैं, जिन्हें हम समय-समय पर पढ़ते हैं। हमारी भी वैसी ही भावना होती है, जैसी आपकी। हम कभी-कभी दूर-दूर जाकर भी अपने इष्ट मित्रों से मिलते हैं। हम पुष्पों की सुगन्ध लेते हैं और अपने लोक में उनकी खेती भी करते हैं। हम पुष्पों को एकत्र करते हैं। हमारे यहाँ के पुष्प आपके पृथ्वी-लोक की अपेक्षा अधिक सुन्दर होते हैं और वह कभी नहीं मुरझाते। वनस्पतियाँ भी यहाँ उगती हैं और अदृश्य भी हो जाती हैं। आपकी भाँति हमारे यहाँ भी मृत्यु है। हम इसे मृत्यु न कहकर परलोक-गमन कहते हैं। जो आत्माएँ एक लोक से ऊँची स्थिति को जाती हैं वे प्रायः पृथ्वी पर नहीं आतीं। वे अपना संदेश हमारी मारफ़त भेज देती हैं।

प्रश्न—अभी आपने कहा है कि आपके लोक भी पृथ्वी-लोक के साथ घूमते हैं। क्या आपका लोक भी सूर्यलोक के चारों ओर घूमता है ?

जो लोक पृथ्वी के निकट होता है, वह पृथ्वी के साथ घूमता है। हम इसी लोक में रहते हैं। हम पृथ्वी को घूमता हुआ नहीं देखते; क्योंकि हम भी आपके ही साथ घूमते हैं। यदि हम आपकी पृथ्वी की स्थिति को जैसी की तैसी न मानें तो हम पृथ्वी को नहीं देख सकेंगे। हम जब आपके लोक में आते हैं तो हम आपके लोक के अनुकूल अपना शरीर कर लेते हैं। हम पृथ्वी पर तो आ सकते हैं, किन्तु ऊपर के लोकों में तब तक नहीं जा सकते, जब तक वहाँ जाने की हमारी योग्यता न हो जाय।

प्रश्न—यदि हमारी पृथ्वी किसी दूसरे नक्षत्र से टकराकर नष्ट हो जाय तो आपके लोक का क्या होगा?

उत्तर—इससे हमारे लोक को कोई हानि नहीं होगी। हमारा लोक आपके स्थूल लोक से सर्वथा भिन्न है।

प्रश्न—क्या आत्माएँ पुनर्जन्म ग्रहण करती हैं?

उत्तर—यह एक ऐसा प्रश्न है, जिसका उत्तर देना मुझे कठिन जान पड़ता है। मुझे यहाँ आये अनेक वर्ष व्यतीत हो गये, किन्तु मैं देखता हूँ कि मेरे आसपास हज़ारों वर्षों की पुरानी आत्माएँ रहती हैं। इस सम्बन्ध में मैं केवल इतना ही कह सकता हूँ।

प्रश्न—क्या कुत्ते-बिल्ली भी परलोक में आते हैं?

उत्तर—हाँ-हाँ, वह सब भी परलोक में जाते हैं। किन्तु उनका अपना लोक होता है। मान लीजिए किसी कुत्ते को अपने मालिक से बहुत अधिक प्रेम है तो वह अपने मालिक के पास जा सकता है।

प्रश्न—क्या आपकी वनस्पतियाँ हमारी वनस्पतियों के ही समान हैं?

उत्तर—बहुत अंशों में समान हैं, किन्तु हमारी वनस्पतियाँ आपकी अपेक्षा बहुत अधिक सुन्दर होती हैं।

प्रश्न—हमसे कितनी ही आत्माओं ने कहा है कि पृथ्वीलोक की पदवियाँ उनके नाम के साथ न लगाई जायँ। उदाहरण के लिए सर विलियम बेरट ने हमसे कहा—"हमसे बात करते समय मेरे नाम के साथ 'सर' का व्यवहार मत करो। यह क्या सत्य है?"

उत्तर—हाँ, यह ठीक है। पृथ्वीलोक की पदवियों का हमारे लिए कोई महत्त्व नहीं है। यहाँ जब ऐसी पदवीधारी आत्माएँ आती हैं, तो उनकी पदवियाँ उनके नाम के आगे से हटा दी जाती हैं।

प्रश्न—आपके मकान कैसे हैं?

उत्तर—हमारे मकान ठीक वैसे ही हैं, जैसे हम बनाने की कल्पना करते हैं। आप भी पृथ्वी पर जब कोई मकान बनवाते हैं तो पहले उसकी कल्पना कर लेते हैं और फिर अपनी कल्पना के अनुसार स्थूल पदार्थ लगाकर मकान बना लेते हैं। यहाँ हम सूक्ष्म तत्त्वों से अपने मकान बनाते हैं। इसलिए हमारे मकान हमारे मन की उपज हैं। हम मकानों का विचार करते हैं और उन्हें बना लेते हैं।

प्रश्न—आप कौन सी भाषा बोलते है?

उत्तर—यहाँ पृथ्वी की कितनी ही भाषाएँ बोली जाती हैं। उदाहरण के लिए अँगरेज़ी, फ्रेञ्च, जर्मन आदि; किन्तु हमारी बातचीत मानसिक होती है। हम अपने विचार एक दूसरे के पास पहुँचा देते हैं। पृथ्वी पर जिस भाँति हम बोलकर परस्पर अपने भाव व्यक्त करते हैं, वैसे यहाँ नहीं करते।

प्रश्न—एक प्रश्न पूछने के लिए और रह गया, इसके बाद समाप्त। आपको प्रकाश कहाँ से मिलता है? क्या आत्माएँ सोती भी हैं?

उत्तर—जब हम आराम करना चाहते हैं तो हम ऐसे स्थान में चले जाते हैं जहाँ थोड़ा प्रकाश होता है। हमारे यहाँ रात नहीं होती। हमारे यहाँ सूर्य्य नहीं होता—दिन नहीं होता; किन्तु हमें आवश्यकता के अनुसार प्रकाश मिलता रहता है। जहाँ से सबको प्रकाश मिलता है, वहीं से हमें भी मिलता है। बस अब हम जाते हैं।

उपर्युक्त वर्णन से परलोक की कुछ-कुछ कल्पना पाठकों को हो गई होगी। जिस भाँति हमारे स्थूल शरीर में एक सूक्ष्म शरीर घुला-मिला हुआ है, उसी भाँति हमारी पृथ्वी के ऊपर भी अन्य लोक घुले-मिले हैं। जिस भाँति हम अपने सूक्ष्म शरीर को नहीं देख सकते, उसी भाँति हम

अपने स्थूल नेत्रों से परलोक को नहीं देख सकते। इसे देखने के लिए सूक्ष्म शरीर चाहिए। मनुष्य जब परलोकगत होता है तो उसके रहने के लिए भी ऐसा ही लोक रहता है, जैसा कि हमारा पृथ्वीलोक है। अन्तर केवल स्थूल और सूक्ष्म अवस्था का है। आत्माएँ सूक्ष्म शरीर में चलती-फिरती हैं। उनकी मनःस्थिति वैसी ही होती है जैसी मृत्युलोक में थी। उनका व्यक्तित्व ज्यों का त्यों बना रहता है। वे परस्पर मिलती हैं, बातचीत करती हैं—भोजन भी करती हैं, पुष्पों की खेती करती हैं, पढ़ती हैं आदि। हमारी और उनकी अवस्था में इतना भेद अवश्य रहता है कि वे इन क्रियाओं को सूक्ष्म शरीर से करती हैं और हम स्थूल शरीर से। हमारी भाँति उन्हें भी आवश्यकता है, इच्छा है और वे अपनी इच्छाओं की पूर्ति करती हैं।

अब हम नागेन्द्र सायी के संदेशों पर से परलोक का कुछ और वर्णन करते हैं। नागेन्द्र सायी ने अपने संदेश में कहा—"मैं आपसे दूर नहीं रहता। मेरा लोक आपके समीप ही है। यह आपके लोक में ही है। हमारे लोक में भी मकान हैं। मैं भी अपने मकान में रहता हूँ। हम अपने मकान परमात्मा की कृपा से बिना विलम्ब तुरन्त बना लेते हैं।"

प्रश्न—क्या वहाँ मन्दिर और गिरजाघर भी हैं?

उत्तर—हाँ, यहाँ बहुत से मन्दिर हैं। ज्ञान-प्राप्ति के लिए अन्तः-करण से प्रार्थना करना आवश्यक है।

प्रश्न—क्या तुम इन मन्दिरों में जाते हो?

उत्तर—हाँ जाता हूँ। पहले मैं नास्तिक था; किन्तु इस लोक में आने के बाद सबको आस्तिक हो जाना पड़ता है। इससे बचने का कोई उपाय नहीं है। नास्तिक लोग भी आस्तिक बन जाते हैं। इस-लिए अब यह कहना कि मैं आस्तिक हो गया हूँ, कोई आश्चर्य की बात नहीं है।"

एक दिन नागेन्द्र ने लिखा—"मैं यहाँ ६॥ बजे सन्ध्या को आया था, तब से बाग़ में टहल रहा था।"

प्रश्न—क्या तुम्हें बाग़ में अच्छा लगता है ?

उत्तर—हाँ, मुझे फूल अच्छे लगते हैं। कुछ गुलाब के फूल मँगाइए। हमारे लोक में भी बाग़ हैं। वहाँ बड़े सुन्दर-सुन्दर वृक्ष हैं और उन्हें बड़ी अच्छी तरह सजाया जाता है। ये वृक्ष आपके पृथ्वी के वृक्षों से बहुत कुछ भिन्न होते हैं।

प्रश्न—क्या परलोक में भी पृथ्वी की भाँति वृक्ष उगते हैं ?

उत्तर—हाँ उगते हैं, किन्तु वे बड़े हल्के होते हैं।

प्रश्न—क्या उनके नाम भी पृथ्वी के ही नाम होते हैं ?

उत्तर—नहीं, उनके दूसरे नाम होते हैं। वे नाम आप नहीं जानते हैं।

एक दिन नागेन्द्र ने अपने संदेश में कहा—"हमारे यहाँ भी सूर्य दिखता है, किन्तु बहुत धुँधला दिखता है।" एक दिन बादल हो रहे थे। हमने नागेन्द्र से पूछा—आज तो बादल हो रहे हैं। क्यों मालूम है न ?

उत्तर में नागेन्द्र ने कहा—हमारे लोक में इसका कोई असर नहीं होता।

प्रश्न—क्या तुम्हारे लोक में मौसम होते हैं ?

उत्तर—नहीं। हमारे यहाँ सदा सुहावना मौसम रहता है।

प्रश्न—कुछ आत्माओं ने अपने संदेशों में कहा है कि उनके यहाँ नदी, तालाब आदि होते हैं। क्या यह सत्य है ?

उत्तर—आपके लोक में ऐसी कोई वस्तु नहीं है, जो इस लोक में न हो।

सर ओलीवर लाज ने इस सम्बन्ध में लिखा है—परलोक-विद्या-विशारद स्वेडनबोर्ग के प्रमाणों से यह स्पष्ट हो गया है कि परलोक भी हमारे लोक का प्रतिबिम्ब है।...ऐसा जान पड़ता है कि आत्माओं का लोक सूक्ष्म वस्तुओं का है जो इसी लोक का एक अङ्ग है। वास्तव में हम सब एक ही संसार में रहते हैं। आत्माएँ सूक्ष्म संसार में रहती हैं और हम भौतिक संसार में रहते हैं।

सप्तलोक

मृत्युलोक में आकर संदेश देनेवाली प्रायः सभी आत्माओं ने यह कहा है कि हमारा लोक ७ भागों में विभक्त है। इसी को सप्तलोक कहते हैं। कुछ आत्माएँ यह भी कहती हैं कि प्रत्येक लोक के और अनेक भाग हैं। इससे ऐसा जान पड़ता है कि लोकों की संख्या आत्माएँ अपने मन से स्थिर कर लेती हैं। किन्तु यह स्वाभाविक ही है। उदाहरण के लिए मद्रास को ही लीजिए। यदि कोई पूछे कि मद्रास कितने भागों में विभक्त है तो कोई आदमी कहेगा कि म्युनिसिपैलटी ने इसके ८ डिविज़न किये हैं, इसलिए ८ भागों में विभक्त है। कोई मुहल्ले या बाज़ार को ही भाग मान लेगा। किन्तु दोनों ठीक हैं। यही बात उपलोकों की भी है। वास्तव में यह उपभेद आत्मा की उन्नति पर है। जब कोई आत्मा अमुक परिमाण में उन्नति कर ले तो वह अमुक लोक के अमुक भाग में रहे, जब अमुक मात्रा में कर ले तो अमुक लोक में रहे।

नागेन्द्र सायी ने इस सम्बन्ध में प्रकाश डालते हुए कहा है—व्यापक रूप से ७ लोक हैं और प्रत्येक लोक में सैकड़ों उपविभाग हैं। हमें अपने कर्मों के अनुसार इनमें रहना होता है।

प्रश्न—क्या सबसे गिरी हुई आत्मा भी ऊँचे लोक में पहुँचती है ?

उत्तर—यह सब उसके कर्म पर अवलम्बित है। कुछ आत्माएँ सब लोकों में नहीं जा पातीं। कुछ आपके लोक में लौट आती हैं। जो आत्माएँ सातवें लोक में पहुँच जाती हैं वे फिर बहुत कम पृथ्वीलोक में आती हैं। उन्हें अपनी उन्नति करने के नियम-उपनियम मालूम रहते हैं। इसलिए स्वभावतः उन आत्माओं की इच्छा पृथ्वीलोक में आने की नहीं होती। फिर भी उन्हें अपनी सन्तानों से प्रेम रहता है।

प्रश्न—इन लोकों में भेद क्या है ?

उत्तर—ये उन्नति की सीढ़ियाँ हैं। जो आत्माएँ ऊपर के लोक में रहती हैं उन्हें अधिक स्वाधीनता रहती है। वे जब चाहें तब नीचे के

लोकों में आ सकती हैं। यही सबसे बड़ा अन्तर है..........नीचे के लोक में केवल दुरात्माएँ रहती हैं। उन्हें दण्ड भोगने के लिए वहाँ भेजा जाता है। जो आत्माएँ ऊपर के लोकों में रहती हैं वे सुखी होती हैं। उन्हें यह लोक इसलिए नहीं मिलता कि वे पृथ्वी पर धनी थीं या वे ऊँचे पद पर थीं, किन्तु वे पृथ्वी पर रहकर जैसे कर्म करती हैं वैसा ही लोक उन्हें मिलता है। एक करोड़पति आदमी को परलोक में सबसे नीचे लोक में भी जाना पड़ सकता है और एक भिखारी सर्वोच्च लोक में भी जा सकता है। जो आत्माएँ ऊँचे लोक में रहती हैं वे नीचे के लोक की आत्माओं से आकर बात-चीत कर सकती हैं, किन्तु नीचे के लोक में रहनेवाली आत्माएँ ऊँचे लोक में नहीं जा सकतीं।

बच्चों का लोक

नागेन्द्र ने अपने संदेश में कहा है कि यहाँ बालकों का भी लोक है। यहाँ बालक पृथ्वी की भाँति बढ़ते हैं। उन्हें यहाँ के नियमों के अनुसार शिक्षा दी जाती है।

हमारे पास जिन आत्माओं के सन्देश आये हैं, उन सब ने एक स्वर से यही कहा है कि हम बहुत अधिक प्रसन्न हैं। हमें कोई चिन्ता नहीं है। यदि उनके परिजन दुखी रहते हैं तो अवश्य ही उन्हें भी दुःख होता है। नागेन्द्र ने एक बार अपने सन्देश में कहा—"पृथ्वीलोक की बाधाओं से मैं मुक्त हो गया हूँ। अब मैं स्वच्छन्द पक्षी की भाँति जहाँ चाहता हूँ वहाँ फिरता ।"

प्रश्न—क्या तुम पृथ्वी पर आना चाहते हो ?

उत्तर—अब मैं पृथ्वी पर आने की इच्छा नहीं करता। मैं इस लोक में बहुत अधिक सुखी हूँ।

भोजन-वस्त्र

नागेन्द्र सायी ने एक सन्देश में कहा—कुछ लोग पूछते हैं कि क्या हमें भोजन और वस्त्रों की आवश्यकता है ? हाँ, आवश्यकता है

किन्तु आपकी भाँति नहीं। यह केवल भावना-मात्र है। यही बात कपड़ों के विषय में भी समझना चाहिए। यों हम जिसकी इच्छा करते हैं, वह हमें प्राप्त हो जाता है।

नागेन्द्र की स्वर्गीय माता ने एक बार अपने सन्देश में कहा—"उस दिन आपने पूछा था कि हम बिना भोजन किये परलोक में कैसे रहते हैं। किन्तु आपको मालूम है कि हमारा शरीर ही ऐसा है कि हमें प्रतिदिन भोजनों की आवश्यकता नहीं होती। इसके अतिरिक्त हमें क्षुधा नहीं लगती और न हम कोई वस्तु प्राप्त करने के लिए लालायित रहते हैं। यहाँ ऐसे कितने ही पानी के स्रोत हैं, जिनका जलपान करने से हमें बहुत दिनों तक भूख-प्यास नहीं लगती।"

प्रश्न—क्या आत्माएँ भोजन चाहती हैं?

उत्तर—हाँ, नई आनेवाली आत्माओं को भोजन की आवश्यकता होती है। इसी लिए हिन्दुओं में १० दिन तक उन्हें विभिन्न चीज़ें दी जाती हैं। ये वस्तुएँ उन्हें मिलतीं नहीं, किन्तु इनके अर्पण से उन्हें सन्तोष हो जाता है।

नागेन्द्र सायी की मृत्यु अल्प-अवस्था में ही हो गई थी। इस सम्बन्ध में जब उनसे प्रश्न किया गया तब उन्होंने कहा—"अल्पावस्था में परलोक जाना मैं बड़ा सुखमय समझता हूँ। अन्ततः यह संसार एक नाटक है। इसके प्रत्येक पात्र को अन्त में जाना ही पड़ेगा। यदि किसी का काम थोड़ा है तो वह अपना काम कर जल्दी चला जाता है। जितनी जल्दी वह चला जाये, उतना ही अच्छा है। अन्ततः जाना सबको पड़ेगा ही।"

एक बार हमने नागेन्द्र सायी से पूछा—क्या तुम यह बताओगे कि अपना समय कैसे व्यतीत करते हो?

उत्तर—हम अपना समय इस लोक की सब बातें जानने में तथा ईश्वर-प्रार्थना करने में व्यतीत करते हैं। जब कहीं जाने की इच्छा होती है तब चले भी जाते हैं। हम बिना किसी कष्ट के किसी भी स्थान में जा सकते हैं।

हमने अपने प्रश्न को और अधिक संकुचित कर पूछा—"तुम अपनी दिनचर्या बताओ।"

उत्तर—हमारी दिनचर्या आपके लोक की भाँति नहीं है। पहली बात यह है कि हमें नित्य आराम करने की या सो जाने की आवश्यकता नहीं होती। हमारा शरीर हल्का है। मैं तीन बजे उठता हूँ। इसके बाद मैं आधे घण्टे तक ईश्वर की प्रार्थना करता हूँ और फिर एक घण्टे तक पूजा करता हूँ। इसके बाद कभी-कभी मैं माँ के पास जाता हूँ। कभी-कभी मुझे बालकों को पढ़ाने का काम सौंप दिया जाता है। अपराह्न में मैं फिर प्रार्थना करता हूँ और इसके बाद कहीं बाहर जाता हूँ।

प्रश्न—सब आत्माओं का क्या एक सा कार्यक्रम होता है?

उत्तर—नहीं, मनुष्य के आचरण पर उसका कार्य अवलम्बित है।

प्रश्न—प्रातः जब हम तुम्हें बुलाते हैं तब तुम आ जाते हो और यह भी कहते हो कि तुम पूजा करते हो?

उत्तर—मैंने आपसे अभी कहा कि ३ बजे से ५ बजे तक पूजा करता हूँ।

प्रश्न—एक बार तुमने कहा था कि तुम्हें यहाँ आने के लिए अपने गुरु से आज्ञा लेनी होती है?

उत्तर—यदि हम नियम का उल्लङ्घन करें तो हमें आज्ञा लेनी पड़ती है; अर्थात् यदि हमें अपराह्न में आना पड़े तो आज्ञा लेनी पड़ेगी।

पिण्डदान

प्रश्न—हमने अपने सब पितरों के लिए और तुम्हारे लिए गया, प्रयाग और बनारस में पिण्ड-दान कर दिया है—क्या यह बात तुम्हें मालूम है?

उत्तर—हाँ, हमें मालूम है कि आपने हमारे लिए पिण्ड-दान किये थे और विशेष प्रार्थनाएँ भी की थीं। हमें ऐसी प्रार्थनाओं से बड़ा सुख मिलता है।

प्रश्न—जब कोई व्यक्ति मर जाता है तब हम उसके निमित्त शय्या-दान, वस्त्र-दान आदि करते हैं। क्या इनसे कुछ लाभ होता है?

उत्तर—नई आत्माओं को इससे लाभ होता है, इसी लिए इनके देने का शास्त्रों में विधान है। ये वस्तुएँ उन्हें प्राप्त नहीं होतीं, किन्तु जो चीज़ उन्हें अर्पण की जाती है उससे उन्हें सन्तोष होता है।

प्रश्न—पिण्डदान और तर्पण करने का क्या कोई प्रभाव होता है?

उत्तर—हाँ, यह नई आत्माओं के लिए बड़ा आवश्यक है। नई आत्मा को ६ मास में अपनी स्थिति का ज्ञान होता है।

प्रश्न—हम प्रतिवर्ष श्राद्ध करते हैं, क्या उसका कुछ उपयोग है?

उत्तर—हाँ, हमें उससे सन्तोष होता है, किन्तु मैं इसके लिए कोई विशेष आग्रह नहीं करता।

प्रश्न—ब्रह्मसमाजी तो पिण्डदान नहीं करते?

उत्तर—वे प्रार्थना करते हैं। प्रार्थना हृदय से होनी चाहिए। प्रार्थना थोड़ी हो, किन्तु ठीक रूप से होनी चाहिए।

प्रश्न—पिण्ड केवल तीन पीढ़ी के पितरों को दिये जाते हैं—यह क्यों?

उत्तर—तीन पीढ़ी से ऊपर के पितरों को जान सकना कठिन होता है।

सुखी आत्मा का सन्देश

अब हम कुछ ऐसे सन्देश उद्धृत करेंगे जो सुखी आत्माओं ने परलोक से दिये हैं। सेमुअल फिलिप एक सीधे और सरल स्वभाव के व्यक्ति थे। उन्होंने अपने जीवन-काल में कभी किसी को कष्ट नहीं दिया और न किसी की कोई हानि की। मित्रों से उन्हें अपार प्रेम था। मित्रों को जब कभी आवश्यकता होती तो वे उदार भाव से उनकी सहायता करते थे। कभी-कभी ऐसी उदारता प्रकट करते समय वे विपत्ति में पड़ जाते, फिर भी वे अपनी उदारता दिखाने में कभी नहीं चूकते थे। दूसरों के लिए वे कष्ट सहन करते, त्याग करते, परिश्रम करते थे।

वे यह सब स्वाभाविक रूप से किया करते थे। यदि इसके लिए कोई उनकी प्रशंसा करता तो उन्हें बड़ा आश्चर्य होता था। यदि कोई व्यक्ति उनको उपकार का बदला अपकार में देता तो भी वे उससे नाराज़ न होते और समय पड़ने पर उसकी सहायता करते थे। जब कभी उनके उपकार का बदला कोई अपकार में देता तो वे कहते—"इसके लिए मुझ पर तरस खाने की आवश्यकता नहीं; किन्तु जिसने अपकार किया है उस पर तरस खाओ।" उनका सारा जीवन परिश्रम और अनेक कठिनाइयों से व्यतीत हुआ है। वे ऐसे एक व्यक्ति थे, जिन्हें मनुष्य स्थूल नेत्रों से नहीं पहचान सकता था। किन्तु वे अपने ढङ्ग के अद्वितीय परोपकारी पुरुष थे। वे परलोक-विद्या के प्रेमी थे। इससे उनके जीवन में बहुत अधिक सुधार हो गया था। उनकी मृत्यु सन १८६२ ई० में हो गई। कुछ महीनों बाद उनकी आत्मा को बुलाया गया। उनसे निम्नलिखित बातचीत हुई—

प्रश्न—मृत्यु के समय की अवस्था क्या आपको पूर्ण रूप से याद है?

उत्तर—पूर्ण रूप से याद है। मरने के बाद तो मेरे विचारों में ऐसी गड़बड़ मची कि मुझे कुछ याद ही न रहा; किन्तु बाद में धीरे-धीरे सब बातें याद आ गईं।

प्रश्न—क्या आप कृपापूर्वक यह बतायेंगे कि आप किस प्रकार स्थूल शरीर को छोड़कर सूक्ष्म शरीर में आये? आपका जीवन पृथ्वी-लोक में आदर्श रहा है, अब परलोक में आपकी कैसी स्थिति है?

उत्तर—बड़ी प्रसन्नता से बताऊँगा। इस वर्णन से केवल आपको ही लाभ न होगा, किन्तु मुझे भी है। जब मैं पृथ्वी-लोक की बातों की याद करता हूँ तो भगवान् की कृपा के लिए मैं अनेक धन्यवाद करता हूँ। आपको मालूम है कि मेरा जीवन कैसे कष्ट से व्यतीत हुआ है। भगवान् का धन्यवाद है कि विपत्तिकाल में भी मेरा धैर्य बना रहा और जो कष्ट मैंने उस समय धैर्यपूर्वक सहन किये थे, उनका सुख अब मैं उपभोग कर रहा हूँ। यदि मैं निराश हो जाता तो मेरे हाथ से कैसा बढ़िया

अवसर जाता रहता। यदि उस समय मैं अपनी निर्बलता के कारण अपने कर्त्तव्य से च्युत हो जाता तो मुझे आज जो लाभ प्राप्त हो रहे हैं वे न होते और मुझे फिर से अपना पाठ पढ़ना पड़ता। मित्रो, आप भी इस सत्य का पूर्ण रूप से अनुसरण करो। इसी पर आपका भावी सुख अवलम्बित है। ज़रा विचार तो कीजिए कि पृथ्वी का जीवन कितना अल्प है। उस जीवन से हम अपना परलोक का अनन्त जीवन कैसे सुधार सकते हैं।

यदि मेरा जीवन कुछ भी परोपकारी रहा है तो इसका कारण यही कि मैं अपनी कुवासनाओं से निरन्तर रूप से संग्राम करता रहा हूँ और तब मैं ऐसा बन सका हूँ। अपने दोषों को मिटाने के लिए मुझे अन्तिम समय में बड़े कष्ट सहन करने पड़े, किन्तु मैंने ये सब स्वेच्छापूर्वक सहन किये थे। मुझमें संकल्प-शक्ति थी, इसी से मैं उन कष्टों को बिना किसी शिकायत के सहन करता रहा। आज मैं उन कष्टों के लिए धन्यवाद करता हूँ। उन कष्टों की अब केवल स्मृति मात्र रह गई है, किन्तु उनके कारण मेरी जो प्रगति हुई उससे मुझे बहुत अधिक सन्तोष हो रहा है। जिन लोगों ने मुझे पृथ्वी पर कुछ भी कष्ट दिया है, मेरी भर्त्सना की या मुझे अपमानित किया, उन सबको मैं न केवल क्षमा करता हूँ, वरन् उनका धन्यवाद भी करता हूँ। जिन लोगों ने मेरे साथ उपकार किया है, उन्हें इसकी कल्पना भी न होगी कि ऐसा कर वे मेरा कितना उपकार कर रहे थे। उन्हीं लोगों की कृपा से आज मैं इतना सुख उपभोग कर रहा हूँ। परमात्मा ने मेरे धैर्य की परीक्षा के लिए ही ऐसे लोगों को पृथ्वी पर उत्पन्न किया था, जिससे मैं सबसे कठिन मार्ग का अनुसरण कर सकूँ अर्थात् अपने शत्रुओं से भी प्रेम करूँ।

यद्यपि मृत्यु के पहले मुझे भयङ्कर रोग से आक्रान्त होना पड़ा, किन्तु मृत्यु मुझे सुखद निद्रा की भाँति आई। इसके लिए मुझे ज़रा भी यत्न नहीं करना पड़ा और न मुझे कोई कष्ट पहुँचा। मैंने अपने स्थूल शरीर को बिना किसी प्रयत्न के, बिना कष्ट के और बिना ज्ञान के

छोड़ दिया। मुझे मालूम नहीं कि मेरी निद्रा की अवस्था कितने समय तक रही, किन्तु मेरे विचार से वह थोड़े ही समय तक रही है। जब मैं उस निद्रा से उठा तो अपनी स्थिति में बड़ा परिवर्तन देखा। अब वह रोग का कष्ट नहीं था। मैं उस रोग-विमुक्ति से अत्यन्त हर्षित हुआ। अब मेरी इच्छा होने लगी कि मैं चलूँ-फिरूँ, किन्तु शिथिलता बहुत अधिक थी। यह शिथिलता दुःखद नहीं किन्तु सुखद थी। मैं चुपचाप उसी अवस्था का सुखोपभोग करने लगा। मुझे उस समय यह ज्ञान नहीं हुआ कि मैं पृथ्वी-लोक छोड़कर अब परलोक में आ गया हूँ। मुझे यह सब स्वप्न सा दिखने लगा। मैंने देखा कि मेरी स्त्री और मेरे कितने ही मित्र रो रहे हैं, तब मुझे मालूम हुआ कि मेरी मृत्यु हो गई। मैं उनसे यह कहना चाहता था कि आप क्यों रोते हैं, मैं मरा नहीं हूँ। किन्तु मेरे मुख से एक भी शब्द नहीं निकला। उसी समय मुझे मालूम हुआ कि मैं यह सब स्वप्न देख रहा हूँ। इसके अतिरिक्त जब मैंने उन लोगों को भी देखा जो मेरे से बहुत पहले मर चुके थे, तब तो मेरी स्वप्न की धारणा और भी अधिक प्रबल हो गई। मैंने देखा कि ऐसे बहुत से मेरे इष्ट-मित्र मेरे आसपास खड़े हैं जो पहले मर चुके हैं। कुछ ऐसी आत्माएँ भी थीं जिन्हें मैं नहीं पहचानता, किन्तु वे सब मेरे जागने की प्रतीक्षा कर रही थीं। इसके बाद मेरे सामने प्रकाश बढ़ता गया और मुझे स्पष्ट जान पड़ने लगा कि अब मैं पृथ्वी पर नहीं हूँ। यदि मुझे परलोक-विद्या का ज्ञान न होता तो मैं थोड़े समय तक और धोखे में रहता। मेरा शरीर अभी तक दफनाया नहीं गया था। उस समय मैंने अपने स्थूल मृत शरीर को देखा तो मेरे हृदय में उसके प्रति तिरस्कार हुआ और अनुभव किया कि अच्छा हुआ, मेरा इससे पीछा छूट गया। मैं उसी भाँति सुख अनुभव कर रहा था, जैसे कोई फँसा हुआ आदमी विपत्ति से निकल जाने पर अनुभव करता हो। पृथ्वी पर जिन लोगों से मेरा प्रेम था, उन्हें परलोक में देखकर मुझे आनन्द हुआ। उन्हें देखकर मुझे कुछ भी आश्चर्य नहीं हुआ और ऐसा जान

पड़ा कि बहुत दिनों की यात्रा के बाद हम सब फिर मिल गये हों। एक विचित्र बात मैंने यहाँ यह देखी कि जब किसी आत्मा से हमारी बात होती तो हम अपने भाव बिना बोले उन्हें जता देते थे और उनके भाव हमारी समझ में आ जाते थे।

प्रश्न—आप परलोक में आकर अब पृथ्वी-लोक को इतना हेय समझने लगे हैं, तो हमें भी आप भूल गये होंगे ?

उत्तर—नहीं। यदि मैं भूल जाता तो जो सुख मैं उपभोग कर रहा हूँ, वह न कर पाता। परलोक में स्वार्थपरायणता अच्छी नहीं समझी जाती—वहाँ स्वार्थी मनुष्य दण्डनीय माना जाता है। मैं पृथ्वी-लोक से भले ही उदासीन हो जाऊँ, किन्तु पृथ्वीलोक के मनुष्यों से उदासीन नहीं हो सकता। यह आप ही के लोक में होता है कि ऊँची स्थिति पाकर अपने साथियों को भूल जाते हैं। परलोक में ऐसा व्यवहार नहीं है। पृथ्वी लोक के जीवन में जिन लोगों से मेरा किसी प्रकार का सम्बन्ध था, उनसे मिलने मैं प्रायः आता रहता हूँ। जब वे मुझे याद करते हैं तो मुझे बड़ा आनन्द होता है। मैं उनके हर्ष में हर्षित होता हूँ और दुःख में दुखी। मेरी यह सहानुभूति दुःख से प्रेरित होकर नहीं होती, वरन् मैं यह समझता हूँ कि इसका दुःख थोड़े समय के लिए है और इसके कल्याण के लिए है। मैं इसी कल्पना से सुखी रहता हूँ कि अन्त में इन सबको भी इसी लोक में आना है और यहाँ आने पर कोई दुःख नहीं रह जाता। मैं अपने लोक से उनके मस्तिष्क में सुन्दर विचारों की प्रेरणा करता हूँ......।

हमारी पत्नी स्वर्गीय सुभद्रा बाई ने परलोक के सम्बन्ध में जो वर्णन दिया है, उसका सारांश भी हम नीचे दे देना चाहते हैं। एक बार स्वर्गीय सुभद्रा से हमने प्रश्न किया कि तुम आती क्यों नहीं, मेरे प्रश्नों का यथोचित उत्तर क्यों नहीं देती ? इसका उत्तर देते हुए उसने कहा—"आप कहते हैं कि मैं आती क्यों नहीं, आपके प्रश्नों का उत्तर क्यों नहीं देती क्या करूँ। मेरे लिए दोनों ही तरफ़ ख़न्दक़ है। अपने लोक

में मुझे गुरु की आज्ञा का पालन करना होता है। बिना उनकी आज्ञा के मैं कहीं नहीं जा सकती। उनकी आज्ञा से मैं ५ घण्टे सोती हूँ। एक घण्टे तक देव-अर्चन करती हूँ। इसके बाद दो घण्टे जप करती हूँ। तदुपरान्त फिर आरती होती है। हमारी सब आरती मन्दिर में होती है। १ घण्टे तक मैं पूजन की सामग्री तैयार करती हूँ। इसके बाद फिर दोपहर की आरती होती है। १ घण्टे के लिए मैं आपके पास आती हूँ। २ घण्टे मैं पुराण सुनती हूँ। एक घण्टे मैं गुरु के पास बैठती हूँ। एक घण्टे मैं पुराण सुनती, विश्राम करती हूँ और एक घण्टे घूमने जाती हूँ। अब आप बतायें कि मैं किस समय आऊँ!"

उपर्युक्त सन्देश हमारे पास कई वर्ष पूर्व आया था। इसलिए हमने इसकी पुष्टि के लिए २८वीं दिसम्बर १६४१ को फिर स्वर्गीय सुभद्रा को बुलाकर पूछा। उसने कहा कि मैं देव-अर्चन करती, पूजन-सामग्री तैयार करती हूँ, जप करती हूँ, पुराण सुनती हूँ किन्तु इन सबके लिए अब समय की क़ैद नहीं रही। मैं अपने इच्छानुसार देर-सबेर तक काम करती रहती हूँ। पहले की अपेक्षा अब मैं अधिक स्वतन्त्र हूँ।

स्वर्गीय सुभद्रा के परलोक-गमन किये लगभग २० वर्ष हो गये। किन्तु वह नित्य हमारे पास आती है और हमारे कार्यों में सहयोग देती है। वह हमें परलोक-विद्या के कार्यों में ख़ूब सहायता करती है। उसके द्वारा हम दूसरी आत्माओं का आह्वान करके उनसे संदेश प्राप्त करते हैं। इस प्रकार हम ऐसे लोगों की सम्बन्धित आत्माओं से भी बातचीत कर लेते हैं, जो स्वयं नहीं आ सकते, किन्तु अपनी आत्माओं से बात करना चाहते हैं। इस प्रकार हमारे पास जो संदेश आये हैं, वे बहुत सन्तोष-जनक सिद्ध हुए हैं। ऐसे संदेश जब उनके सम्बन्धित आदमियों को मिलते हैं तो वे कहते हैं कि यह बात हमारी आत्मा की ही है। इसके अतिरिक्त सुभद्रा अपरिचित आत्माओं से संदेश लेकर उसे समझाती है। ऐसी आत्माओं को बुलाया जाता है, जो हमारी भाषा नहीं समझ सकतीं। उनसे बातचीत हम सुभद्रा के द्वारा ही करते हैं। वह इस कार्य में बड़ा

सहयोग दे रही है। सच पूछा जाय तो हम यह कार्य उसके बल से चला रहे हैं। हमें अपने इस कार्य में जो सफलता प्राप्त हुई है, उसका सारा श्रेय सुभद्रा को है। उसकी प्रेरणा से हम इस परलोक विद्या का प्रचार कर रहे हैं। इस प्रचार में हमें कहीं निराश नहीं होना पड़ा। अज्ञात स्थानों में झोपड़ी से लेकर महलों तक में हमने प्रयोग किये, हमारे इन सब प्रयोगों में सुभद्रा का सहयोग रहा है। हमने उसे राजमहलों में भी पाया और ग़रीबों की झोपड़ी में भी।

इसके बाद अब हम एक कंजूस लालची मनुष्य की आत्मा का भी परिचय दे देना चाहते हैं। वह परलोक में कैसी दुखी रहती है, यह इस वर्णन से प्रकट हो जायगा। फ्रेंक्कोइस रिक्वायर एक लोभी और अविवाहित व्यक्ति थे। उनकी मृत्यु सन् १८५७ में हो गई। एक बार उनकी आत्मा को बुलाया गया और उनसे पूछा गया—

प्रश्न—आप क्या चाहते हैं?

उत्तर—मुझे केवल अपना धन चाहिए। उन दुष्टों ने मिलकर मेरा धन बाँट लिया है। उन्होंने मेरे खेत बेच दिये, मकान बेच दिये, मेरी सारी सम्पत्ति बेच दी और परस्पर बाँट ली। उन्होंने मेरी सारी सम्पत्ति ऐसी बाँट ली है जैसे उनकी अपनी हो। उनसे मेरी सम्पत्ति, मेरा धन दिला दो। वे मेरी नहीं सुनेंगे।......देखो मैं ऐसी लूट सहन नहीं करूँगा। वे सब लोग मुझे दूसरे का माल हड़पनेवाला कहते थे और अब वे मेरा ही माल हड़पे जाते हैं। वे मुझे मेरा धन क्यों नहीं दे देते?

प्रश्न—भले आदमी, अब भी तुम्हें धन चाहिए? मर गये हो, फिर भी धन की चाह बनी हुई है! भगवान् से क्षमा-याचना करो, उनसे प्रार्थना करो कि प्रभु मुझे एक ग़रीब का जन्म दो, जिससे मैं अपने पिछले जीवन के पापों का प्रायश्चित्त कर सकूँ।

उत्तर—नहीं-नहीं। मैं ग़रीब होकर जीवित नहीं रह सकता। मुझे धन दो।

इसके बाद उसकी इस भावना को समझने के लिए प्रश्न किया गया—क्या आपको कोई कष्ट है !

उत्तर—हाँ, कष्ट है। इतना कष्ट है, जितना अधिक से अधिक वेदना देनेवाले रोग से भी नहीं हो सकता। यह मेरी ही आत्मा है जो इसे सहन कर रही है। मेरे सामने अपना पहला वह अन्यायी-जीवन नाचा करता है, जिससे मैंने बहुतों को दुःख दिया है। मैं जानता हूँ कि मैं घोर पापी हूँ, दया के अयोग्य हूँ, किन्तु मैं दुखी हूँ, कृपा कर मुझे दुःख से बचाओ।

प्रश्न—हम आपके लिए भगवान् से प्रार्थना करेंगे ?

उत्तर—हाँ, प्रार्थना कीजिए कि मैं अपनी पृथ्वी की सम्पत्ति भूल जाऊँ। इसके बिना मैं भगवान् की प्रार्थना न कर सकूँगा।

आत्महत्या करनेवाली दुखी आत्मा

अब हम एक आत्महत्या करनेवाली दुखी आत्मा का वर्णन देते हैं, जिससे पाठकों को यह मालूम हो सकेगा कि आत्महत्या करनेवालों की आत्माएँ कैसी दुखी रहती हैं। सन् १८५६ में एक व्यापारी पेरिस में रहता था। उसका एकमात्र पुत्र था। उसे अनिवार्य्य सैनिक भरती के नियम के अनुसार सेना में भरती कर लिया गया। इसके पास इतना धन न था कि वह अनिवार्य्य भरती से अपने पुत्र को बचा सकता। वहाँ उस समय एक क़ानून यह भी था कि यदि किसी विधवा स्त्री के केवल एकमात्र पुत्र हो तो वह सैनिक सेवा से मुक्त हो जाता था। इसलिए इस व्यापारी ने अपने पुत्र को सेना में भरती होने से बचाने के लिए आत्महत्या कर ली। एक बार एक प्रयोग में उसकी आत्मा को बुलाया गया और निम्नलिखित प्रश्नोत्तर हुए,—

प्रश्न—आप हमारे प्रश्नों का उत्तर देंगे ?

उत्तर—मैं आपकी इस कृपा के लिए धन्यवाद करता हूँ। मुझे अभी बड़ा कष्ट है।...दयालु है; वह मुझे क्षमा करेगा।

प्रश्न—जो शब्द छोड़ दिया है, वह लिखिए।

उत्तर—मैं लिखने के योग्य नहीं हूँ।

प्रश्न—आप कहते हैं कि आपको बहुत कष्ट है; आपने आत्महत्या कर बड़ा पाप किया। किन्तु जिस उद्देश्य के लिए यह पाप किया था, वह उद्देश्य तो बड़ा पवित्र था, क्या उससे आपको कोई विशेष रियायत नहीं मिली?

उत्तर—उद्देश्य के लिए मेरा दण्ड कुछ समय के लिए कम हो जायगा, किन्तु आत्म-हत्या एक ऐसा पाप है, जो बहुत अधिक दण्डनीय है।

प्रश्न—आपको किस प्रकार का दण्ड भोगना पड़ रहा है? क्या आप उसकी रूपरेखा बतायेंगे?

उत्तर—मुझे दोहरा दण्ड भोगना पड़ा है। मेरी आत्मा को भी दुःख है और मेरे शरीर को भी। यद्यपि मेरा स्थूल शरीर नहीं रहा, फिर भी उसकी पीड़ा उसी भाँति बनी हुई है, जिस भाँति काटे हुए अङ्ग की पीड़ा बनी रहती है।

प्रश्न—क्या आपने केवल पुत्र की चिन्ता से आत्म-हत्या की थी या आपका कोई दूसरा उद्देश्य भी था?

उत्तर—उस समय मेरे हृदय में केवल पैतृक प्रेम था, दूसरा कोई उद्देश्य नहीं था। मेरे इस उद्देश्य को देखकर मेरा दण्ड कुछ कम हो जायगा।

प्रश्न—आप अपने कष्टों का अन्त होने का कैसे विचार करते हैं?

उत्तर—मुझे यह तो मालूम नहीं कि इन कष्टों का कब अन्त होगा, किन्तु मैं यह जानता हूँ कि एक दिन इनका अवश्य ही अन्त होगा। बस इसी का मुझे सन्तोष है।

प्रश्न—आपने भगवान् का नाम नहीं लिखा, क्या यह भी आपके दण्ड का अङ्ग है?

उत्तर—जब मैं पूर्ण रूप से पश्चात्ताप कर लूँगा तब मैं भगवान् का नाम लिख सकूँगा।

प्रश्न--अच्छा तो ख़ूब पश्चात्ताप करके भगवान् का नाम लिखो, जिससे हमें यह मालूम हो जाय कि अब आप कष्ट से मुक्त हुए।

इसके बाद आत्मा ने बहुत देर तक यत्न किया और अन्त में लिखा-"भगवान् बड़े दयालु हैं।"

प्रश्न—हम आपका धन्यवाद करते हैं कि आप हमारे बुलाने पर आ गये। हम सब भगवान् से प्रार्थना करेंगे कि वे आप पर दया करें।

उत्तर—अवश्य कीजिए।

इसके बाद हमने एक दूसरी आत्मा से इस आत्मा के विषय में पूछा तो उसने कहा—"इसको परमात्मा पर विश्वास नहीं था—यह एक ऐसा अपराध है, जो अवश्य ही दण्डनीय है। यदि इसका उद्देश्य इतना पवित्र न होता तो इसे बड़ा कठोर दण्ड भोगना पड़ता। भगवान् घट-घट-व्यापी हैं। वे अपराधी को उसके अपराध के अनुसार दण्ड देते हैं।"

एलन कार्डेक लिखते हैं--यह जीवन हमें पृथ्वी पर अपना कर्त्तव्य-पालन करने को दिया गया है। हमें इसे नष्ट करने का कोई अधिकार नहीं है। किसी भी कारण से इसे नष्ट नहीं करना चाहिए। मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र है, इसलिए उसे आत्महत्या करने से नहीं रोका जा सकता; किन्तु उसे इसका दण्ड भी भोगना पड़ता है। जो व्यक्ति अपने जीवन के कष्टों से दुखी होकर आत्म-हत्या कर लेता है, उसे बहुत अधिक दण्ड भोगना पड़ता है। ये कष्ट हमारे जीवन के शुद्ध करने को होते हैं। इनसे बचने का यत्न करना अपनी आत्मा को मलिन बनाये रखना है। फिर जिस उद्देश्य के लिए हमारा जन्म हुआ है उस उद्देश्य की पूर्ति भी नहीं होती।"

अब हम एक भारतीय आत्मा का भी उल्लेख करेंगे। इस आत्मा ने हमारे यहाँ के एक प्रयोग में निम्नलिखित सन्देश दिया है—"पहले कुछ वर्षों में मुझे बड़ा कष्ट सहन करना पड़ा। मैंने अपने पृथ्वी-लोक के जीवन का अन्त बहुत बुरी तरह किया था। इन वर्षों में मुझे अनेक

यातनाएँ सहन करनी पड़ीं। इसलिए मैं सच्चे हृदय से सबसे प्रार्थना करूँगा कि कोई भी व्यक्ति आत्महत्या न करे। जब आत्मा को निरन्तर रूप से कष्ट दिया जाता तो उसे सूई छेदने की सी यातना होती है। यह बात मैं इसलिए बता रहा हूँ जिससे कोई व्यक्ति आत्महत्या न करे। मैं पृथ्वी-लोक के बिलकुल समीप था। गुरु-कृपा से अब मैं ठीक हो रहा हूँ। बार-बार उनसे प्रार्थना की, तब उन्होंने यह कृपा की है। जो कष्ट मुझे भोगने पड़ते थे, उन्हें मैं सहन नहीं कर सकता था। **कृपा कर मेरे इस सन्देश का खूब प्रचार कीजिए**, जिससे कोई व्यक्ति आत्महत्या न करे। आपने मुझे स्मरण किया, इसके लिए मैं धन्यवाद करता हूँ। यातना-सहन करने को ही नरक कहते हैं।"

जीवन कैसा हो ?

परलोकगत आत्माओं से जो सन्देश मिले हैं, उनसे एक बात बड़ी स्पष्ट होती है कि जीवन शुद्ध और सात्त्विक हो, आडम्बर से रहित, परोपकारी हो। मिथ्या जीवन परलोक में दण्डनीय है। इसका प्रायश्चित्त मनःसन्ताप है। नीचे हम एक सिनेमा की अभिनेत्री की आत्मा का सन्देश देते हैं। उसका नाम केवल वरजिनिया बताया गया है। जब उसे बुलाया गया तो उसने सन्देश देते हुए कहा—"आपने मुझे बुलाकर जो गौरव प्रदान किया उसके लिए मैं अन्तःकरण से आपका धन्यवाद करती हूँ। हमें बचपन से ही वास्तविक शिक्षा मिलना चाहिए। हमें बताना चाहिए कि मृत्यु कुछ नहीं है। मृत्यु के बाद एक दूसरा जीवन है जो सबको प्राप्त होता है। हम लोग मिथ्या जीवन में रहते हैं और उसी मिथ्या जीवन से मानव-जाति को रिझाना चाहते हैं। आजकल लड़कियाँ कसरत के खेल खेलती हैं। मुझे उनके लिए दुःख होता है। हमें यह बताना चाहिए कि हमारा जीवन दूसरे के उपकार के लिए है—अपने लिए नहीं। लड़कियों को जीवन के सत्य सिद्धान्त बताना चाहिए—उन्हें मिथ्या जीवन नहीं सिखाना चाहिए।

मद्य संसार के लिए बुरा है। इसी भाँति और नशे भी बुरे हैं।......
भगवान् को ठीक रूप से समझना चाहिए! हमें उससे भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है। वह किसी सिंहासन पर नहीं बैठा, किन्तु वहीं सब प्राणियों में चैतन्य रूप से है। हमारे समीप जो वस्तुएँ हैं, उन सब में उसका अंश है।

"जब मैं पश्चात्ताप की अग्नि में तप्त होकर शुद्ध हुई तब मुझे सत्य की प्राप्ति हुई। मैं सुख और शान्ति चाहती थी, वह मुझे प्राप्त हो गई। जब पश्चात्ताप की अग्नि से मेरा हृदय शुद्ध हो गया तब मुझे मालूम हुआ कि भगवान् मेरे ही अन्तर में हैं—वे कहीं बाहर नहीं हैं। दूसरों का दोष देखने की अपेक्षा अपने को समझने का यत्न करो। सब लोग मित्रभाव से रहें—एक दूसरे का हित करते रहें। अपने मन पर अधिकार करना सीखें। जब कभी क्रोध आये तो अपने को सँभालें और थोड़ा घूम लें, जिससे क्रोध शांत हो जाय। मैं अपने जीवन में सदा क्रोध करती थी। इसी से मेरी मृत्यु हुई है। हमें क्रोध को जीतना चाहिए।"

परोपकारी आत्मा

कभी कभी आत्माएँ दूसरों के प्राण बचाने का भी यत्न करती हैं। एक ऐसी ही घटना का ज़िक्र हम नीचे देते हैं। अमेरिका के इलनोइज प्रांत के वेकेगन नामक नगर में एक युवक पर एक कालेज-कन्या की हत्या का अभियोग सन् १९१७ में चल रहा था। अचानक उस लड़की की आत्मा अमेरिका के परलोक-विद्या-विशारद विकलेएड की पत्नी मिसेज विकलेएड पर प्रकट हुई। पहले वह आत्मा आकर रोने लगी, इसके बाद उसने चिल्लाकर कहा—"मैंने स्वयं आत्महत्या की है। मैं अब इसे कैसे बताऊँ। कोई मेरी बात नहीं मानेगा। मुझे सर्वत्र अन्धकार दिखता है।"

प्रश्न—तुम्हारा नाम क्या है।

उत्तर—मेरियन लेम्बर्ट

प्रश्न—तुम अब कहाँ हो ?

उत्तर—मालूम नहीं। मैं यहाँ किसी से भी परिचित नहीं हूँ। लोग नरक की बात करते हैं, किन्तु जो कष्ट मुझे भोगना पड़ रहा है वह नरक से भी बुरा है। मैंने केवल मूर्खता-वश आत्महत्या कर ली। एक दिन मैं पोटेशियम साइनाइड लेकर उसे (अभियुक्त को) डराने लगी थी। बस वही मैंने खा लिया। अब ये लोग उसे दोषी बता रहे हैं। क्या करूँ, ये मेरी बात नहीं मानेंगे। मैं अदालत में जाती हूँ, लोगों से बारम्बार यह बात कहती हूँ, किन्तु कोई मेरी बात नहीं सुनता।

एक व्यसनी आत्मा

अब एक व्यसनी आत्मा की करुण दशा प्रकट करनेवाला वर्णन भी हम नीचे देते हैं। कहते हैं कि इस स्त्री ने भी आत्महत्या की थी। एक बार उसकी आत्मा को विकलेण्ड ने बुलाया। मिसेज़ विकलेण्ड पर इस आत्मा ने अधिकार कर लिया। इसके बाद यह आत्मा बुरी तरह रोने लगी।

डाक्टर विकलेण्ड ने पूछा—"आप कौन हैं ? आपको क्या कष्ट है ? आप क्यों रोती हैं ?—हम आपको कष्ट से मुक्त होने में सहायता करेंगे।

आत्मा—देखो देखो ! उसकी ओर देखो !

डाक्टर—आप क्या देखती हैं ?

आत्मा—देखो। वह कैसा भयानक मुँह बना रहा है।

डाक्टर—आपको मालूम है कि आप कहाँ हैं ? यह केलिफोर्निया नगर है।

आत्मा—मुझे बचाओ ! बचाओ !!

डाक्टर—ज़रा समझकर बात करो।

आत्मा—अच्छा, थोड़ी सी शेम्पन शराब दो। कोई भी शराब दो।

डाक्टर—देखो आप परलोकगत हो गई हैं। अब शराब क्यों माँगती हैं ? आपका शरीर नहीं है, शराब कैसे पियेंगी ?

आत्मा—(बड़े दु:खित भाव से) मुझे बचाओ।

डाक्टर—ज़रा बात समझो। अब आपका शरीर नहीं है। आप मेरी स्त्री के शरीर में आई हैं। आपको इसलिए बुलाया है कि हम कुछ आपकी सहायता करें।

आत्मा—तो मुझे कुछ पेय दो।

डाक्टर—आपका नाम क्या है? हमारे पास कोई शराब या पेय नहीं है, जो हम आपको दे सकें। यदि होता तो भी न देते।

आत्मा—मुझे बचाओ।

डाक्टर—किससे बचावें?

आत्मा—मेरे लिए थोड़ी शेम्पेन शराब ला दो।

डाक्टर—ज़रा समझकर बात करो। अब आप परलोकगत आत्मा हैं।

आत्मा—इसकी मुझे चिन्ता नहीं।

डाक्टर—इस प्रकार उत्तेजित होने से आपको कोई लाभ नहीं होगा।

आत्मा—मुझे शेम्पन चाहिए। जल्दी लाइए।

इस आत्मा की दशा से यह सहज ही प्रमाणित हो जाता है कि व्यसनी लोग परलोक में भी दुखी रहते हैं। अतः शुद्ध जीवन के लिए व्यसन से दूर रहना चाहिए। उपर्युक्त संदेशों से हमने परलोक का कुछ-कुछ चित्र खींचा है। वहाँ सुखी-दुखी व्यसनी आत्माओं की मनस्थिति का भी वर्णन किया है। इस सम्बन्ध में अँगरेज़ी भाषा में अनेक पुस्तकें हैं। एलेन कार्डेक की "Heaven and Hell", कार्ल ए० विकलेण्ड की "Thirty years among the dead", सर ओलिवर लाज का 'Rey mond' इत्यादि पुस्तकें पठनीय हैं। हिन्दी में 'सुभद्रा' और सत्येन्द्र-सन्देश भी पढ़ने योग्य हैं।

——

सातवाँ परिच्छेद

आक्षेपों का निराकरण

अब हम कुछ आक्षेपों का भी निराकरण करना चाहते हैं। आक्षेप करनेवालों को हम दो भागों में विभक्त कर लेते हैं—(१) अनुभवशून्य और (२) अनुभवी। जो लोग परलोकविद्या का श्रीगणेश भी नहीं जानते, वे भी इस विद्या को धोखे-धड़ी की विद्या कहते हैं। ऐसे लोगों को हम एक शब्द में यों उत्तर देंगे कि अज्ञता भी एक नियामत है। इसके प्रताप से स्वर्ग नरक दीखता है और नरक स्वर्ग। सत्य को ऐसे लोग मिथ्या समझते हैं और मिथ्या को सत्य समझते हैं। आक्षेपों का हम अधिक मूल्य नहीं समझते और उन्हें हम समझा भी नहीं सकते। किन्तु जो इसका कुछ अनुभव कर चुके हैं, उनके आक्षेपों का हम निराकरण करना आवश्यक समझते हैं। कुछ लोगों की यह शङ्का होती है, कि आत्माओं के संदेश साधारण मनुष्यों के से ही होते हैं। उनमें ऊँचेपन की कोई झलक नहीं दिखती। इसका उत्तर यह है कि जैसा व्यक्ति इस संसार में होगा, वैसी ही उसकी आत्मा होगी। साधारण व्यक्ति की आत्मा से ऊँचे दर्जे के सन्देश की आशा नहीं करनी चाहिए। ऊँचे दर्जे की आत्माओं से अपना सम्पर्क स्थापित कीजिए, आपको ऊँचे दर्जे के सन्देश प्राप्त होंगे। पृथ्वी पर ही देखिए, जब कोई व्यक्ति किसी नये नगर में जाता है, तो वह अपने ही वर्ग के मनुष्यों में रहने का यत्न करता है। बम्बई जैसे बड़े नगर में कितने ही उपनगर हैं। कोई व्यक्ति इन उपनगरों में से किसी एक उपनगर को देखकर यह कहे कि मैंने बम्बई देख ली, वह तो साधारण नगर से भी गई गुज़री है तो जिस भाँति उसका यह कहना ग़लत होगा, ठीक उसी भाँति उन लोगों का भी

कहना ग़लत होगा, जो एक दो बार के प्रयोग करने के बाद इस परिणाम पर पहुँच गये हैं कि इन आत्माओं के सन्देश साधारण व्यक्तियों के से ही होते हैं, उनमें विशेषता कुछ नहीं है। आपमें लगन होनी चाहिए, फिर आप जैसी आत्मा के सन्देश चाहेंगे, वैसी ही आत्मा के आपको सन्देश मिलने लगेंगे।

गुप्त मन (Sub-Conscious mind)

कुछ लोग यह संदेह करते हैं, कि आत्माओं के जो सन्देश आते हैं, वे हमारे गुप्त मन (Sub Conscious mind) के सन्देश होते हैं। किन्तु यह धारणा ग़लत है। जिन लोगों ने स्वयं लेखन के प्रयोग किये हैं, वे जानते हैं कि सन्देशों में प्राय: ऐसी अज्ञात बातें आती हैं जो उन्हें बिल्कुल मालूम न थीं। प्रायः लोग समझते हैं कि हम जिस आत्मा को बुलाने की कल्पना करते हैं, वही आत्मा आ जाती है और वह ऐसे सन्देश लिखती है जो हमें पहले से ही मालूम होते हैं। इसी को गुप्त मन या Sub Conscious mind कहते हैं—अर्थात् यह केवल मन की कल्पना मात्र है। किन्तु परलोक-विद्या के प्रयोग करनेवालों को मालूम है, कि सदैव ऐसा नहीं होता कि हम जिस आत्मा को बुलायें, वही आये। एक बार की घटना है कि एक पारसी सज्जन अपने परलोकगत पिता से मुक़दमे के सम्बन्ध में कुछ पूछ-ताछ करना चाहते थे। हमने उनके लिए प्रयोग किया। प्रयोग करने के पहले उन्होंने अपने पिता का फोटो दिखाकर हमसे कहा था, कि आप इसी का ध्यान करें, जिससे कोई दूसरी आत्मा न आ जाये। हम लोगों ने उनके पिता की आत्मा का ही आह्वान किया, किन्तु जब मेज़ हिलने लगी तो हमने पूछा कि आप वही आत्मा हैं जिन्हें हमने बुलाया है। उत्तर मिला 'नहीं'। तब आप कौन हैं? क्या कुछ लिखेंगे?—उत्तर मिला—हाँ, लिखेंगे। जब उससे लिखने को कहा गया तो एक ६ वर्ष के लड़के की आत्मा ने अपना नाम लिखा। यह भी उक्त पारसी सज्जन का कोई दूर का सम्बन्धी था। प्रयोगकर्त्ताओं

के हृदय में इसकी ज़रा भी कल्पना नहीं थी, कि उस लड़के की आत्मा आयेगी। इसका किसी ने विचार भी नहीं किया था। इससे स्पष्ट है, कि केवल वही आत्मायें नहीं आतीं जिनका हम ध्यान करते हैं, बल्कि कभी-कभी दूसरी आत्माएँ भी आ जाती हैं।

हमारे मण्डल के सदस्य श्री विश्वेश्वरदयाल गुप्त को भी ऐसा ही अनुभव हुआ। उन्होंने अपने एक परिचित व्यक्ति की आत्मा का आह्वान किया किन्तु आ गये उनके पिताजी। इन घटनाओं से यह स्पष्ट है कि गूढ़ मन की बात असत्य है। यदि यह मान भी लें तो अज्ञात बातें सन्देशों में कैसे लिखी जाती हैं। हमारे प्रयोगों में स्वर्गीय ओक नामक एक महाराष्ट्र सज्जन की आत्मा आती है। वह अपना सन्देश मराठी कविता में लिखती है। सन्देश ऐसे लोगों के द्वारा लिखा जाता है जो मराठी भाषा पूर्ण रूप से समझ भी नहीं सकते। कितने ही लोगों को ऐसी भाषा में सन्देश प्राप्त हुए हैं, जिसका उन्हें ज्ञान भी नहीं है। हमारे देश में ऐसे माध्यम हैं या नहीं, किन्तु यूरोप में ऐसे अनेक माध्यम हैं, जिन्हें अपरिचित भाषा में सन्देश प्राप्त हुए हैं। ये सब बातें क्या गूढ़ मन की हैं?

उत्तरों में भिन्नता क्यों?

कुछ लोगों की यह भी शङ्का होती है कि एक ही प्रश्न विभिन्न आत्माओं से किया जाय तो उसके विभिन्न उत्तर क्यों आते हैं? इसका उत्तर यह है कि विभिन्न आत्माओं का ज्ञान और आचार एक दूसरे से भिन्न होता है। इसलिए उनके उत्तर भी भिन्न ही रूप के होंगे। कभी कभी यह कहा जाता है कि साधारण आत्माओं की बात छोड़ दीजिए, ऊँचे दर्जे की आत्माओं के उत्तरों में भी बड़ा अन्तर रहता है। इस सम्बन्ध में एलन कार्डेक ने अपनी पुस्तक 'Spirit's Book' में कहा है—"बात यह है कि आत्माएँ उत्तर देते समय कभी कभी अपना व्यक्तिगत प्रभाव भी बताती हैं। यह बात निरन्तर रूप से प्रयोग करने

पर समझ में आ सकेगी। परलोक-विद्या एक अनन्त विज्ञान है, वह दो-चार घण्टों के प्रयोग से समझ में नहीं आ सकेगी। इसे समझने के लिए बहुत समय तक निरन्तर रूप से प्रयत्न करना होगा। साधारण रूप से देखिए, एक ही बात को अलग अलग व्यक्ति अलग अलग ढङ्ग से कहते हैं। विज्ञान में ही लीजिए, एक ही वस्तु की अलग अलग वैज्ञानिक परिभाषा करते हैं। यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि जिस रूप का आप प्रश्न करेंगे, उसी रूप का आपको उत्तर मिलेगा। यदि केवल शब्दों का अन्तर हो और भाव एक ही हो तो उसमें प्रभेद करना मूर्खता होगी। ऊँचे दर्जे की आत्माएँ केवल भाव को महत्त्व देती हैं, वे शब्दों अथवा उत्तर के रूप की ओर ध्यान नहीं देतीं।"

क्या पागलपन का भय है ?

कुछ लोग प्रत्येक नई विद्या या वस्तु में भय करते हैं। परलोक-विद्यावादियों पर भी इनका यह आक्षेप है कि ऐसे लोग पागल हो जाते हैं। परन्तु कोई भी समझदार व्यक्ति ऐसा आक्षेप नहीं कर सकता। निर्बल या शक्तिहीन मस्तिष्क के लोग जब किसी विषय का अधिक अध्ययन करते हैं तो पागल हो जाते हैं। गणित, डाक्टरी, सङ्गीत, तत्त्वज्ञान आदि विद्याओं को सीखनेवाले कितने ही विद्यार्थी पागल हो गये हैं, क्या इसलिए ये विद्याएँ पढ़ाना बन्द कर दी जायँ? शारीरिक परिश्रम करने से कितने ही लोगों के हाथ-पैर में चोट आ जाती है तो उसके भय से परिश्रम करना क्या छोड़ा जा सकता है? इसी भाँति बुद्धि से अधिक परिश्रम करनेवालों का मस्तिष्क यदि ख़राब हो जाय तो उसके लिए मस्तिष्क से काम करना नहीं छोड़ा जा सकता। यह हानि सहन करनी ही होगी। विचारणीय बात केवल इतनी ही है कि मनुष्य प्रायः निराशा, विपत्ति और प्रेम में धोखा खाने से पागल बन जाता है। किन्तु परलोक-विद्या-वादी इन घटनाओं पर ऊँचे भाव से विचार करते हैं। वे पृथ्वी का जीवन अल्पकालीन समझते हैं। उनकी

दृष्टि में विपत्ति मनुष्य का सुधार करने को आती है, वह हृदय की दुर्बलता और मलिनता को मिटाती है। परलोक में उन्हीं लोगों का जीवन सुखमय होता है जो अपनी विपत्ति को हर्षपूर्वक या बिना मानसिक वेदना के सहन करते हैं। इसलिए परलोक-विद्या पागलपन को रोकने में सहायक हो सकती है। इससे पागल होने का भय नहीं है। यदि कोई पागल बन गया है तो ऐसा आदमी परलोक-विद्या न भी जानता तो भी पागल बन जाता।

पहचान कैसे हो?

कुछ लोगों का यह भी आक्षेप है कि अमुक व्यक्ति की आत्मा आई, इसकी पहचान कैसे हो? अवश्य ही यह पहचान प्राप्त कर लेना थोड़ा कठिन है। इसके लिए कोई रजिस्टर नहीं रक्खा गया है कि अमुक आत्मा के ये-ये लक्षण हैं, किन्तु कुछ बातों से उनकी पहचान हो जाती है। जब कोई व्यक्ति मरता है तो उसका स्वभाव, भाषा, विचार प्रायः वैसे ही बने रहते हैं, जैसे उसके जीवन-काल में थे। यहाँ तक कि कितनी ही आत्माओं के सन्देश वैसे ही अक्षरों में लिखे हुए आये हैं जैसे वे अपने जीवन-काल में लिखा करते थे। उनकी भाषा भी प्रायः वैसी ही होती है। अपने जीवन-काल में वे जिन मुहावरों का प्रयोग करते थे, वे मुहावरे उनके सन्देशों में मिलेंगे। इसके अतिरिक्त वे कुछ ऐसी बातें भी बतायेंगे जो माध्यम को मालूम न होंगी। इन्हीं सब बातों से अपनी आत्मा का परिचय या पहचान हो सकती है।

उत्तर क्यों नहीं देतीं?

कुछ लोग यह भी आक्षेप करते हैं कि आत्माएँ ऐसे प्रश्नों का उत्तर क्यों नहीं देतीं—जैसे, हमारे हाथ में क्या है? हमारी आयु कितनी है? हमारी जेब में कितने रुपये हैं? हम कल क्या करेंगे? ऐसे प्रश्न करना आत्माओं का उपहास करना है। आत्माएँ ऐसे प्रश्नों का उत्तर नहीं

देतीं। एक बार स्वर्गीय कॉनन डाइल के प्रयोग के समय किसी व्यक्ति ने पूछा—"बताओ मेरी जेब में कितने रुपये हैं।" इसके उत्तर में आत्मा ने लिखा कि हम यहाँ आपको ज्ञान देने के लिए और जीवन ऊँचा करने की शिक्षा देने के लिए आते हैं, पहेलियाँ हल करने के लिए नहीं आते।"

विचार-संक्रमण

कुछ लोगों का यह भी आक्षेप है कि आत्माओं के द्वारा जो सन्देश मिलते हैं, वे प्रयोग-कर्त्ताओं के विचार हैं जो माध्यम के अन्तःकरण में आ जाते हैं, वही लिखे जाते हैं। किन्तु आत्माओं के सन्देशों में ऐसी-ऐसी बातें आती हैं जो प्रयोग-कर्त्ताओं के मस्तिष्क में नहीं होतीं। इसलिए यह आक्षेप भी निराधार है।

आठवाँ परिच्छेद

आत्माओं के उत्पात

अब हम आत्माओं के उत्पातों का भी वर्णन करना चाहते हैं। प्रायः समाचारपत्रों में ऐसी घटनाएँ सुनने में आती हैं कि अमुक स्थान में पत्थर बरसते थे, अमुक मकान में खट-खट होती थी, किवाड़ खुलते और बन्द होते थे आदि। ये घटनाएँ साधारण खट-खट की आवाज़ से बढ़कर कभी कभी बड़ा विकराल रूप धारण कर लेती हैं। जो लोग आत्माओं पर विश्वास नहीं करते, जब उन्हें कोई आत्मा सताने लगती है, तो वे आत्मा का अस्तित्व सहज ही मान लेते हैं और जैसे बनता है, वैसे उससे अपना पीछा छुड़ाते हैं। हमारे पास भी इस सम्बन्ध के कुछ पत्र आये हैं, किन्तु हम अपने पत्रों का उल्लेख बाद में करेंगे। पहले हम अन्य लोगों के अनुभवों पर प्रकाश डालेंगे। पाठक कहेंगे कि इनमें अनेक घटनाएँ असत्य सिद्ध हुई हैं या किसी की शरारत से होती थीं। हम मानते हैं कि कुछ घटनाएँ शरारत से भी होती हैं, कुछ घटनाएँ ऐसी भी होती हैं जिनका आत्माओं से कोई सम्बन्ध नहीं था, फिर भी ऐसी अनेक घटनाएँ हुई हैं और होती हैं जो आत्माओं द्वारा ही होती हैं। जो लोग असत्य घटनाओं या शरारत भरी घटनाओं का उल्लेख कर सब घटनाओं को मिथ्या समझते हैं, वे ग़लती करते हैं।

परलोक-विद्या का श्रीगणेश कैसे हुआ?

ऐसी ही एक घटना से परलोक-विज्ञान का आविर्भाव हुआ है। अमेरिका के हिड्स विली स्थान में फाक्स नामक एक परिवार रहता था। इसके घर में कुछ खटके हुआ करते थे। पहले तो इसने समझा कि

यह किसी की शरारत है, किन्तु अच्छी तरह देख-भाल कर चुकने के बाद जब यह मालूम हुआ कि यह किसी की शरारत नहीं है, तब एक दिन उन्होंने खटके की आवाज़ सुनकर पूछा—"आप कौन हैं? क्यों खटके करते हैं? यदि आप हमारी बात समझते हों तो चार खटके दीजिए।" इस पर चार खटके हो गये। इन्हें मालूम हुआ कि खटके करनेवाली कोई ऐसी अज्ञात शक्ति है जो हमारी बात समझती है। इसके बाद उन्होंने फिर पूछा—"आप क्या हमसे कुछ कहना चाहते हैं? यदि चाहते हों तो दो खटके कीजिए।" इसके उत्तर में भी दो खटके आ गये। इसके बाद उन्होंने तार की भाषा के अनुसार खटकों की वर्णमाला बना ली और उसके द्वारा आत्मा से बात की। उस बात-चीत के परिणाम-स्वरूप यह मालूम हुआ कि एक आदमी की हत्या की गई है और उसकी लाश उनके मकान के पास ही गड़ी है। जाँच की गई तो वह लाश मिल गई। इस प्रकार इस विद्या का श्रीगणेश पहले पहल अमेरिका में हुआ था।

एक ऐसी ही घटना का उल्लेख परलोक-विद्या-विशारद एलन कार्डेक ने अपनी पुस्तक "The Medium Book" में किया है। आप लिखते हैं—"आत्माएँ जब इस प्रकार का प्रदर्शन करती हैं तो समझना चाहिए कि वे कुछ कहना चाहती हैं। जब उनकी इच्छा की पूर्ति हो जाती है तो उत्पात बन्द हो जाते हैं। कुछ वर्ष पहले जब हम अपने परलोक-विद्या के अनुभव पुस्तकाकार में लिख रहे थे तो हमारे यहाँ द्वार खटखटाने की आवाज़ हुई। हमने बाहर आकर देखा तो कोई नहीं था। फिर आवाज़ आई, फिर देखा—किन्तु कोई न था। उन दिनों हमारे पास एक स्वयं लेखन करनेवाला माध्यम आता था। उसके द्वारा हमने पूछा—'आप कौन हैं? क्यों द्वार खटखटाते हैं?' उत्तर मिला—'आपकी परिचित आत्मा।' हमने पूछा—आप क्या चाहती हैं? उसने कहा कि आपने अपनी पुस्तक में अमुक स्थान में अमुक बात ग़लत लिखी है। यह बात उस प्रकार नहीं, किन्तु इस प्रकार है।

हमने अपनी पुस्तक में उसका बताया हुआ संशोधन कर लिया। इसके बाद भी वह आत्मा हमारे पास आती रही और वह हमारे कार्यों में सहायता करती थी।"

भूतों का घर

मिस्टर हेरी प्राइस अपनी पुस्तक "Fifty Years of Psychical Research" में लिखते हैं,—"३०वीं मार्च सन् १६३६ ई० में हमने भूतों के घर से रेडियो द्वारा ब्राडकास्ट करना निश्चित किया था, जिससे लोगों का सन्देह दूर हो जाय। ब्राडकास्ट करने के पहले हमारे पास उस मकान के भूतपूर्व एक किरायेदार ने निम्नलिखित पत्र भेजा था— 'मैं इस मकान में कोई ६ मास तक रहा हूँ और मैंने इस मकान में कितनी ही बार भूत देखा। एक बार तो मैंने भयभीत होकर उस पर भोजन करने का एक काँटा फेंककर मारा। किन्तु वह भूत वहाँ से ज़रा भी नहीं हटा। मेरा विश्वास है, इस मकान में एक नहीं कितने ही भूत हैं। इनमें एक तहख़ाने का भूत था जो बारम्बार हमारे घर का द्वार खोलता था। मैं जब घर रहता तो तहख़ाने का द्वार बन्द कर लिया करता था। यह केवल इसी लिए कि मुझे तल-घर का भूत दृष्टिगोचर न हो। किन्तु वह भूत भी सहज ही माननेवाला नहीं था। जितनी बार मैं द्वार बन्द करता, उतनी ही बार वह द्वार खोल दिया करता था। एक बार तो उसने मेरे सामने ही द्वार खोला। उस समय क्या हुआ, इसके लिए मैं भूत की ही प्रशंसा करूँगा।' इसके बाद हमने ब्राडकास्ट किया, किन्तु हमारे कार्य में कोई बाधा नहीं पड़ी। एक बात अवश्य हुई, कि किसी मसख़रे ने मेरी मोटर में किसी मनुष्य की जाँघ की हड्डी रख दी थी। जो लोग उस घर में सोये थे, उनका कहना है कि रात में किसी के चलने की आवाज़ आती थी।" इस सम्बन्ध में पृथक् पृथक् व्यक्तियों के पृथक् अनुभव हैं। एक आदमी को भूत दृष्टिगोचर होता है और दूसरे को नहीं। कभी ऐसा भी होता है, कि एक ही स्थान में अलग-अलग

आदमियों को अलग-अलग अनुभव हुए हैं। इसका उदाहरण हम नीचे देते हैं।

लन्दन के पास भूत-घर

सन् १६०८ की १५वीं अप्रेल को लन्दन के "डेली क्रानिकल" में निम्नलिखित पत्र प्रकाशित हुआ था—"इस पत्र को लिखने के ६ दिन पहले तक भूत था। वह दिखाई नहीं पड़ता, किन्तु जब वह आता था तो ऐसी दुर्गन्ध फैल जाती, जो असह्य होती थी। भूत के आने की सूचना इसी दुर्गन्ध से होती थी। दो वर्ष पहले लन्दन से २० मील दूर एक ग्राम में एक महिला मित्र ने एक बँगला किराये से लिया। इस बँगले में कोई ८ कमरे थे, फिर भी इसका किराया केवल नाम मात्र का था; अर्थात् प्रति सप्ताह केवल १० शिलिङ्ग था। इस बँगले के सम्बन्ध में उक्त महिला को कुछ भी मालूम न था। उनकी एक १४ वर्षीय लड़की थी। वह एक कमरे में सो गई। रात्रि का अन्धकार था। अचानक उसकी आँख खुली और उसे मालूम हुआ कि कोई उसके पलङ्ग के पास खड़ा है। लड़की चिल्लाना चाहती, कि उसके मुँह पर किसी ने ज़ोर से हाथ रख दिया। हाथ से सड़े हुए मांस की असह्य दुर्गन्ध आने लगी। लड़की ज़रा दृढ़ हृदय की थी। वह चारपाई पर बैठ गई और अपने मुँह पर रक्खे हुए हाथ को बलपूर्वक हटाने लगी। किन्तु यह देखकर उसे बड़ा भय हुआ कि वह हाथ हटाये नहीं हटता था। इसके साथ ही वह उसकी दुर्गन्ध से भी व्याकुल थी। इतने ही में उसने शीघ्र ही चद्दर ओढ़ ली और भगवान् से प्रार्थना करने लगी। प्रार्थना के फल-स्वरूप वह हाथ उसके मुँह से हट गया और वह सो गई। लड़की ने समझा कि यह कोई बुरा स्वप्न था। किन्तु दूसरे दिन भी उसे वैसा ही अनुभव हुआ। इस बार वह भागकर अपनी मा के पास गई और बोली कि 'मैं उस कमरे में किसी प्रकार भी नहीं सो सकती।' कुछ दिनों के बाद उक्त महिला के पास उनकी एक सम्बन्धिन दूसरी महिला गई। २० दिन तक

यह दूसरी महिला उस बँगले में रही, किन्तु उसे कोई भूत-प्रेत नहीं दिखा। २१वें दिन उसका भी वही हाल हुआ जो उपर्युक्त लड़की का हुआ था। उसके मुँह पर भी भूत ने ज़ोर से हाथ रख दिया और वही सड़ी हुई दुर्गन्ध आने लगी। इस बार यह दुर्गन्ध और भी भीषण रूप की थी। वह रात तो उसने किसी प्रकार बिताई, किन्तु दूसरे ही दिन वह वहाँ से चलती बनी।

"गत बृहस्पतिवार की बात है कि उक्त महिला अपने परिवार-सहित भोजन करने को बैठी, इतने ही में किसी के ज़ीना उतरने की आवाज़ आई। आवाज़ से ऐसा जान पड़ता था कि कोई मोटा भारी आदमी ज़ीना उतर रहा है। ज़ीने से उतरकर वह (भूत) भोजनागार में आया। उसके आते ही कमरे में सड़ायँ की दुर्गन्ध फैल गई। भोजन करनेवाले लोगों को यह भूत दृष्टिगोचर नहीं हुआ, किन्तु उन्हें ऐसी आवाज़ आई कि जैसे कोई भारी आदमी कुर्सी पर बैठ गया हो। उसके आते ही दुर्गन्ध से भोजनगृह भर गया। कमरे की सब खिड़कियाँ खोल दी गईं; फिर भी दुर्गन्ध नहीं गई।

"ये घटनाएँ प्रायः होती रहती हैं। एक बार इस महिला ने एक दूसरी प्रतिष्ठित महिला को अपने यहाँ भोजन के लिए आमन्त्रित किया। उस समय भी यह दुरात्मा आ गई और अपनी दुर्गन्ध फैला गई, जिससे भोजन करना असम्भव हो गया। यह महिला इस प्रकार का कष्ट महीनों से सहन कर रही है, किन्तु उस मकान को नहीं छोड़ती। एक बार उसने इस भूत से यह भी पूछा कि आप कौन हैं, यहाँ क्यों आते हैं। यदि कोई ऐसा काम हो, जो हम कर सकती हों तो हम आपके लिए कर देंगी, किन्तु भूत ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया और वह इसी प्रकार सताता रहता है। अभी तक वह एक ही कमरे में सताता था, अब वह सब कमरों में घूमता है जिससे उसकी दुर्गन्ध सब कमरों में फैल जाती है।

"ग्राम में इस भूत के सम्बन्ध में यह कहानी कही जाती है कि इस मकान में पहले एक बड़ा मोटा आदमी रहता था। जब वह मर

गया तो उसकी लाश निकालने को मकान तुड़वाना पड़ा। इसमें दो-एक दिन की देर हो गई और जब उसकी लाश निकाली गई तो वह सड़ गई थी। किन्तु इतने वर्षों के बाद भी अभी तक वहाँ दुर्गन्ध क्यों आती है, यह रहस्य समझ में नहीं आता।"

प्रायः सभी देशों में इस प्रकार की अनेक विचित्र घटनाएँ होती रही हैं। जिस पर ऐसी घटना होती है, उसे जैसी परेशानी होती है, उसका कुछ दिग्दर्शन हम पिछली घटनाओं में बता चुके हैं। अब एक और घटना हम "The Annals of Psychical Science" से उद्धृत करते हैं। मिस्टर हेरेवार्ड केरिङ्गटन ने "भूतों से कैसे पीछा छूटे" शीर्षक एक लेख लिखा है। उसमें वे लिखते हैं—मैं स्टाकटन नामक नगर में भाषण करने गया था कि एक महिला मेरे पास आई और बोली—"मैं एक आवाज़ से बड़ी परेशान हूँ। यह आवाज़ निरन्तर रूप से मुझे सुनाई देती है। कभी कभी यह आवाज़ ऐसी मालूम होती है जैसे मेरे स्वर्गीय पति की हो। उन्हें स्वर्गस्थ हुए कितने ही वर्ष व्यतीत हो गये। कभी-कभी यह आवाज़ बड़े प्रेमपूर्वक भाषण करती है तो कभी बड़ी कठोरतापूर्वक। मालूम होता है कि वह मेरे सभी कामों में हस्तक्षेप करती है और अपना अधिकार जताती है। कभी-कभी यह आवाज़ हमारे पूर्व परलोकगत सम्बन्धियों की बात करती है, जिससे मुझे यह जान पड़ता है कि ये मेरे पतिदेव हैं; किन्तु फिर यही आवाज़ कुछ ऐसा बोलती है, जिससे मुझे यह विश्वास नहीं होता कि यह मेरे पति की आवाज़ है। कितने ही दिनों से यह विचित्र आवाज़ सुनाई पड़ती है और अब इसके कारण नींद लेना भी कठिन हो गया है। रात्रि में सोते समय ही यह आवाज़ अधिक होती है इत्यादि"। मैंने देखा कि यह मामला झूठा नहीं है। उक्त महिला परलोक-विद्या के विषय से बिल्कुल अपरिचित थी। मैंने देखा कि उसके पास एक आत्मा मँडरा रही है। उसका क़द नाटा, बाल काले और कपाल छोटा था। उसकी भवें भी काली थीं। यह आत्मा कभी तो

इस महिला को अधिक उदार होने के लिए झिड़कती और दूसरे ही दिन उसे कंजूसी के लिए बुरा-भला कहने लगती थी। थोड़े दिन के बाद इस महिला को ऐसा मालूम होने लगा कि कोई उसके चिकोटी भर रहा है। कितनी ही बार चिकोटियों के चिह्न भी उसके शरीर पर दृष्टिगोचर होते थे। मैं यह कहना भूल गया कि उपर्युक्त आत्मा का वर्णन उसके पति के वर्णन से नहीं मिलता था। उसके पति बड़े सज्जन थे और अपनी पत्नी के प्रति बड़े दयालु थे। यह आत्मा कोई दुरात्मा थी जो उसका पति बनने का ढोंग कर रही थी। यह कोई नीच कोटि की आत्मा थी जो शरारत करने पर तुली हुई थी। पहले हमने चाहा कि इसे समझा-बुझाकर प्रार्थना और मिन्नत करके कहें कि आप इस स्त्री को छोड़ दें, किन्तु हमारी प्रार्थना और समझाने-बुझाने का इस आत्मा पर कोई प्रभाव नहीं हुआ। अन्त में हमने अपनी ऊँची आत्माओं से प्रार्थना की। उन्होंने उसे निकाल बाहर किया। मैंने स्वयं देखा कि एक दिन मेरी कुछ परिचित आत्माएँ आईं और उस दुरात्मा को पकड़कर ले गईं। इसके बाद उस स्त्री को कभी वह आवाज़ सुनाई नहीं दी।"

इस घटना से पाठक यह समझ लेंगे कि दुरात्माओं को दूर करने का एक साधन यह भी है कि पहले उनसे प्रार्थना की जाय तथा उन्हें समझाया जाय और जब वह ऐसे किसी भी उपाय से नहीं माने तो ऊँची आत्माओं का आह्वान कर उसे निकलवा दिया जाय। इन ऊँची आत्माओं से पूर्व का सम्बन्ध होना चाहिए। तभी ये प्रयोग सफल हो सकेंगे।

भूतों के उत्पात का वर्णन कितनी ही पुस्तकों में विस्तृत रूप से लिखा गया है। हम पाठकों को न वर्णनों में से एक-दो घटनाएँ और बताना चाहते हैं।

बोलिविया में भूतों का घर

सन् १६०६ के अक्टूबर मास के "The Reune Spirite" मासिक पत्र में डान पाब्लो का एक पत्र प्रकाशित हुआ था। उन्होंने

बोलिविया के एक प्रसिद्ध नगर रिउ इन्डाबरी के एक मकान की घटना का उल्लेख बड़े ही रोचक ढङ्ग से किया है। यह मकान इण्डाबरी के एक कोने में है। कुछ दिनों से इस मकान में विचित्र प्रकार की आवाज़ आती थी। धीरे धीरे यह आवाज़ इतनी बढ़ी कि मकान में रहना कठिन हो गया। मकान के सब किरायेदार भाग गये। केवल चार विद्यार्थी उसमें रह गये। ये लोग भी उस आवाज़ से त्रस्त थे, किन्तु फिर भी उन्हें इस प्रकार की विचित्र आवाज़ सुनकर ख़ूब हँसी आती थी। एक दिन की बात है कि वे लोग अँधेरे में बैठे हुए सिगरेट पी रहे थे कि किसी अदृश्य शक्ति ने उनको ज़मीन से ऊपर उठा लिया। फिर भी ये लोग उस मकान में डटे रहे। दूसरे दिन जब वे सो रहे थे, तो अचानक उनके सामने एक छोटा सन्दूक़ गिरा, फिर टेबिल गिरी, फिर एक पत्थर गिरा। यह देखकर वे लोग घबराये और पुकारने लगे, "हमें बचाओ।" इन घटनाओं को सुनकर दूर-दूर के लोग आने लगे और मकान की जाँच करने लगे। एक दिन सिनेमा के एक ऐक्टर ने यह मकान किराये पर लिया और अपने पास दो पिस्तौलें भरकर रख लीं। यह अपनी पिस्तौल लिये हो रहा कि किसी ने इसके बाल पकड़कर एक कोने की ओर खींचा। इसने शपथ खाई कि अब मैं इस मकान में कभी न आऊँगा। इसी भाँति एक डाक्टर साहब आये। उन्होंने भी इस मकान को पहले अच्छी तरह से देख लिया और अपना सन्तोष कर लिया कि इसमें कोई व्यक्ति छिपा हुआ नहीं है। इसके बाद वे उस मकान में रहे। उन पर पत्थरों की ऐसी बौछार हुई कि वे वहाँ से बेतहाशा भागे। इसके बाद उस आत्मा से खटकों द्वारा बातचीत की गई तो मालूम हुआ कि वह निकोलस वेपोची नामक एक व्यक्ति है, जो यह कहता है कि मैं सदा से इस मकान में रहता हूँ। इस मकान में ख़ज़ाना गड़ा है। आदि...

ऐसी ही एक दूसरी घटना निउविले की Journal del 'Ain' में प्रकाशित हुई है। यह घटना किसी बड़े मकान की नहीं, किन्तु एक

खेती करनेवाले किसान के खेत की है। बहुत से लोग इसे देखने को उत्सुक हो गये। आसपास के किसान तो वहाँ एकत्र हुए ही थे, किन्तु एक अँगरेज़ डाक्टर भी वहाँ आ गये थे। इनमें कुछ ऐसे भी लोग थे जो परलोक-विद्या या आत्माओं का उपहास किया करते थे। हम लोग यह घटना देखने मकान में गये। जिनके यहाँ ये घटनाएँ होती थीं, उनका नाम एम० कोइएटेट था। इनकी स्त्री भी इन घटनाओं से बड़ी परेशान थीं। हमने उनसे पूछा कि आपके यहाँ क्या होता है तो उन्होंने बताया "दो महीने की बात है, कि हमारे मवेशियों में एक विचित्र प्रकार का उत्पात होने लगा। हमारे बैल बछड़ों की तरह उछलने लगे और बाड़ों में से निकलकर जङ्गलों में भागने लगे। २५, २६, २७ वीं जून की घटना है कि हमारे पशुओं को किसी अज्ञात शक्ति ने खोल दिया। मैंने (एम० कोइएटेट ने) उन्हें फिर बाँधा, किन्तु मेरे देखते ही देखते रस्सी की गाँठ खुलकर नीचे गिर गई। हमारे पड़ोस में एक वृद्ध कृषक रहते थे। उन्होंने जब यह घटना सुनी तो हँस पड़े और बोले—'मुझे बाँधने दो, फिर देखूँगा कि गाँठ कैसे खुलती है।' हमने कहा—"अच्छा आप बाँधिए।' वे महाशय अपने घर गये और एक अच्छी बटी हुई रस्सी लेकर आये और एक बैल को कितनी ही गाँठें देकर बाँधा। उसे बाँधकर वे एक गाय को बाँधने लगे और बैल से कहने लगे—'बचा अब गाँठ छुड़ा लो तो मैं जानूँ कि तुम बड़े होशियार हो!' इतने ही में वे देखते हैं कि रस्सी खुलकर नीचे गिर गई। अब तो उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। इस पर भी वे निराश न हुए। उन्होंने फिर बैल को बाँधा, किन्तु बैल फिर खुल गया। अभी तक तो यह घटना मवेशियों के बाड़े में होती थी, ३०वी तारीख़ से एम० कोइएटेट के मकान में भी इस भूत का उत्पात होना आरम्भ हो गया। उनके घर के काँच के बर्तन ऊपर से धड़ाधड़ गिरने लगे। कोइएटेट की स्त्री बड़ी मितव्ययी थी। उसे अपनी यह हानि देखकर बड़ा दुःख होता था, किन्तु करती क्या। एक देगची का ढक्कन उड़कर छत से जा लगा।

ये घटनाएँ नित्य होने लगीं। इन घटनाओं का समाचार पाकर कुछ लोग एकत्र हो उस पर विचार करने लगे। इतने ही में एक देगची, जिसमें कोई रसेदार साग बन रहा था, धम से गिरी और सारा साग बिखर गया। थोड़ी देर बाद मिस्टर कोइएटेट एक टेबिल पर बैठ गये। उनके बैठते ही शीशे के दो गिलास उनके सामने आकर गिरे। इसके बाद किसी और वस्तु के गिरने की आवाज़ आई। यह एक बड़ा दर्पण था जो धम से गिरकर चूर चूर हो गया। एक लोहे के बर्तन को ऐसा घुमाकर फेंका कि एक आदमी के सिर में लगा।

तीसरी जुलाई को और भी अद्भुत घटनाएँ होने लगीं। मवेशियों के बाड़े में कुछ लकड़ी और लोहे के टुकड़े नाचने लगे। एक हल, जो ज़ीने के नीचे रक्खा था, एम० डेरोची के सामने आकर पड़ गया। हल को फिर उसी स्थान में रख दिया, किन्तु वह फिर डेरोची के पास आ गया। यह देखकर डेरोची वहाँ से भागे। चौथी जुलाई को एक घड़ी तोड़ दी गई। इसी समय ग्राम के असिस्टेंट स्कूल-मास्टर आ गये। ये महाशय घड़ी में चाबी लगाकर देखने लगे कि घड़ी में कोई ख़राबी तो नहीं आई। इतने ही में देखते हैं कि एक झाड़ू और टोकरी उनकी ओर बढ़ती चली आ रही है। मास्टर वहाँ से चले गये। इसके बाद दोपहर को स्कूल से फिर आये। उस समय भूत खेत में उत्पात मचा रहा था। मास्टर ने देखा कि खेत हल, फावड़ा, घास रखने का काँटा यह सब नाच रहे हैं। एक रेल का डिब्बा और एक गाड़ी भी अपने स्थान से उठकार दूसरे स्थान पर रख दी गई। सन्ध्या को कितने ही आदमी यह देखने को आये, किन्तु उस समय कुछ नहीं हुआ। धीरे-धीरे इस उत्पात का समाचार म्युनिसिपल अधिकारियों को मिला। वहाँ के मेयर ने अपना एक आदमी भेजा कि देखो वहाँ क्या होता है। आदमी ने आकर कहा—"साहब, बड़ी विचित्र बात है। आलमारी में रक्खे हुए लकड़ी के दो जूते घड़ी की ओर बढ़ रहे थे।" मेयर आत्माओं पर विश्वास नहीं करते थे। यह सुनकर वे बोले—"हम तो

समझते थे कि तुम कुछ समझदार होगे, किन्तु तुम सबसे अधिक मूर्ख मालूम पड़े।"

आदमी ने उत्तर दिया—"तो हाथ कंगन को आरसी क्या है—आप स्वयं वहाँ जाकर देख लें।"

× × × ×

मालूम होता है कि इस दुष्टात्मा का सताने का कोई हेतु है। मिस्टर कोइएटेट का एक सबसे छोटा पुत्र है। उस पर भी इसने कोई जादू कर रक्खा है। यह बालक बड़ी समझदारी की बातें करता है। एक दिन की घटना है। एक होटल के मालिक से यह बालक बात कर रहा था कि अचानक चिल्लाकर बोला कि मुझे वह कुत्ता काट रहा है। यह कहकर उसने टाँग दिखाई। उसका पायजामा फटा हुआ था। लड़का बोला कि मैंने कुत्ते को पकड़ लिया है। मालूम होता था कि उसने कुत्ते-रूपी भूत का गला पकड़ लिया था। लड़के का कथन है कि जब मैं खेत में जाता हूँ तो मुझे ऐसा जान पड़ता है कि मेरे सिर पर कोई पत्थरों का मेंह बरसा रहा है। एक मज़दूर ने भी कहा कि मुझे भी पत्थरों का मेंह बरसता हुआ दिखा। मकान की खिड़की के कुछ शीशे भी टूट गये हैं। यह लड़का जब भोजन करने बैठता तब उसके बर्त्तन नाचने लगते थे। पत्र के लेखक मिस्टर जेकेस ब्रो लिखते हैं कि हमने ये सब घटनाएँ सुनीं; किन्तु अपनी आँखों से कुछ नहीं देखा। जब हम उनके घर से बाहर निकलने लगे तो हमारे सिर के पास से कोई चीज़ सनसनाती हुई निकल गई। मैंने पीछे फिरकर देखा तो वह एक देगची का ढक्कन था। वह धम से गिरा। मेरे साथ वह लड़का भी आ रहा था। मैंने उससे पूछा, क्या देगची का ढक्कन तुमने गिराया है? लड़के ने उत्तर दिया कि नहीं महाशय। जब हम खेत में गये तो क्या देखते हैं कि एक गाड़ी बिना घोड़े के तबेले से बाहर आ गई और हमारी ओर आने लगी। यह देखकर हम वहाँ से बड़ी तेज़ी से भागे।

फ़ीरोज़पुर की घटना

उपर्युक्त वर्णन हमने विदेशों का दिया है। समाचारपत्रों के पाठकों ने समय-समय पर अपने देश की भी ऐसी अनेक घटनाएँ पढ़ी होंगी। हम कलकत्ते के अँगरेज़ी पत्र 'एडवान्स' के २१वीं जुलाई सन् १६३६ के अङ्क से एक रोचक घटना उद्धृत करते हैं—

आजकल पञ्जाब के फ़ीरोज़पुर नगर में एक ब्राह्मण-परिवार बड़े सङ्कट में पड़ा है। उनका एक लड़का कुएँ पर पानी भरने गया था। अचानक लड़के के हाथ से डोरी छूट गई और पानी की बाल्टी कुएँ में गिर गई। उसके सामने ही एक मकान था। वहाँ एक युवती बैठी हुई थी। उसने कहा—"यहाँ आओ और बाल्टी निकालने के लिए काँटा ले जाओ।" लड़का उस मकान में चला गया। वहाँ देखता है कि मकान ख़ूब सजा हुआ है, कुर्सियाँ पड़ी हैं। युवती ने लड़के से कहा—"बैठो। कुछ फल खाओ। चाय पिओ।" लड़का बैठ गया और फल खाने लगा। युवती ने लड़के से प्रस्ताव किया कि तुम मुझसे विवाह कर लो। लड़के ने प्रस्ताव को प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कर लिया। युवती ने कहा कि मैं तुम्हें छः मास का समय देती हूँ। इतने समय में तुम अपने माता पिता को विवाह के लिए राज़ी कर लो।

यह युवती बङ्गालिन थी। उसने लड़के को जाते समय सावधान किया कि यदि तुमने विवाह नहीं किया तो परिणाम अच्छा न होगा। लड़के ने घर आकर यह सब हाल अपने माता-पिता को बताया। माता-पिता ने कहा कि जिस घर में तुम गये थे, वह तो भूतों का घर है। उस घर में बहुत पहले एक बङ्गालिन युवती मर गई थी। इसके बाद लड़के के माता-पिता कुछ आदमियों को साथ लेकर उस घर में गये। घर सूना पड़ा था। छः महीने के बाद उस लड़के को वह बङ्गालिन युवती एक दिन फिर दिखाई दी। उसने कहा—"देखो छः महीने व्यतीत हो गये। तुमने अपने वचन का अभी तक पालन नहीं किया। याद रक्खो, मैं तुम्हें मार डालूँगी।" लड़के ने आकर यह घटना भी अपने माता-

पिता को बताई। इसके बाद वह बेसुध हो गया और तब से विच्छिप्त होकर बङ्गालिन लड़की से विवाह की बातें करता है। इसका उपचार करने के लिए नगर तथा दूर-दूर स्थानों के आदमी आये, किन्तु अभी तक किसी को कोई सफलता नहीं मिली। एक बात इस कहानी में मज़े की यह है कि उस बङ्गालिन युवती ने इस लड़के को यह बात पहले ही बता दी थी कि तुम परीक्षा में अमुक पर्चे में फ़ेल हो जाओगे और तुम्हारी परीक्षा की फ़ी (शुल्क) मैं दे दूँगी। जब लड़के ने परीक्षा की फ़ी युनिवर्सिटी को भेजी तो वहाँ से उत्तर मिला कि तुम्हारी फ़ी यहाँ जमा हो चुकी है।

इस प्रकार की अनेक घटनाएँ समाचारपत्रों में प्रकाशित होती रहती हैं। गत १६वीं जून सन् १६४१ को अलवर के राजगढ़ से हमारे पास निम्नलिखित पत्र आया था—

"श्रद्धेय ऋषिजी,

आपके १०-६-४१ के कार्ड के उत्तर में मैं ता० १७-६-४१ को पत्र भेज चुका हूँ; किन्तु एक आवश्यक विषय के लिए आज फिर लिख रहा हूँ। कृपया इस पर अच्छी तरह विचारकर उत्तर दें।"

'राजगढ़ के पास ही एक मचाड़ी नामक ग्राम है। वहाँ एक सद्-गृहस्थ के पीछे कोई प्रेत हाथ धोकर पड़ा हुआ है। उस प्रेत ने उस घर के बच्चे-बूढ़े सबका खाना-पीना, सोना, उठना-बैठना सब हराम कर रक्खा है। भोजन की थालियों में विष्ठा ला रखना, पत्थरों की बौछार करना आदि तो मामूली घटनाएँ हैं। इन सबसे तो उस परिवार की आफ़त है ही, किन्तु हाल में एक घटना ऐसी हुई है, जिसे देख-सुनकर प्रत्येक प्राणी रो उठता है और प्रेतात्मा के प्रति बड़ा रोष आता है। हाल ही में उस परिवार की एक स्त्री का देहान्त हुआ है। यहाँ की रस्म के मुताबिक़ उस स्त्री को मरे जब १८ दिन हो गये तो कुछ ब्राह्मणियों को भोजन कराने के लिए भोज्य-सामग्री तैयार हो रही थी। जिस समय भोज्य-सामग्री तैयार हो रही थी, उसी समय उस प्रेतात्मा ने उस मरी हुई

स्त्री के ४-५ वर्ष के बालक को जलती हुई भट्ठी में डाल दिया। भगवान् की कृपा से हलवाई सावधान हो गया। उसने बच्चे को धधकती हुई भट्ठी से निकाल लिया; वरना वह उसी में राख हो जाता। अब आप ही सोचिए कि इस अत्याचार का क्या ठिकाना है। यदि यह परिवार मकान बदलता है, तो वह प्रेतात्मा भी छाया की तरह उनके साथ साथ चला जाता है और उन्हें वहाँ भी सताता है........।

क्या उत्पातों का इलाज है ?

ऐसी घटनाओं के और भी अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं, किन्तु प्रश्न यह होता है कि ऐसी घटनाएँ क्यों होती हैं और क्या इनका कोई इलाज है ? इस सम्बन्ध में प्रसिद्ध परलोक-विद्या-विशारद एलन कार्डेक अपनी पुस्तक "The Mediam's Book" में लिखते हैं—ऊँचे दर्जे की आत्माएँ ऐसे सतानेवाले काम नहीं करतीं। केवल कुछ गम्भीर आत्माएँ अपना मनोरञ्जन करने के लिए इस प्रकार के काम करती हैं। ऐसे उत्पात मचानेवाली अनेक आत्माओं को बुलाकर हमने उनसे बात-चीत की और पूछा कि आप ऐसा उत्पात क्यों मचाती हैं ? इसके उत्तर में हमसे यही कहा गया कि इसमें उन्हें आनन्द आता है, मनोरञ्जन होता है आदि। अधिकांश सतानेवाली आत्माएँ यह सब काण्ड केवल अपने मनोरञ्जन के लिए करती हैं। जब कोई आदमी उनके डराने से डर जाता है तो वे ख़ूब हँसती हैं। कुछ ऐसी भी आत्माएँ हैं जिन्हें दूसरों को कष्ट देने में आनन्द आता है और वे जिनके पीछे पड़ जाती हैं उन्हें ख़ूब सताती हैं। जहाँ जहाँ वह जाता है, वहाँ वहाँ ये भी उसके पीछे जाती हैं। कुछ ऐसी आत्माएँ हैं जो इस प्रकार प्रकट होकर कोई उत्तम कार्य किया चाहती हैं। कुछ आत्माएँ अपना बदला लेने को आती हैं। कुछ ऐसी आत्माएँ हैं जो अपने लिए कुछ चाहती हैं। अधिकांश आत्माएँ हमसे यही चाहती हैं कि हम भगवान् से उनके लिए प्रार्थना करें। कुछ आत्माओं ने यह भी कहा है कि हमने अपने जीवन-

काल में अमुक अमुक प्रतिज्ञा की थी, किन्तु हम उसे पूरी नहीं कर सके, इसलिए चाहते हैं कि हमारे नाम से अमुक कार्य कर दिया जाय। कुछ अपने दुष्कर्मों के लिए पश्चात्ताप करती हैं।

भयभीत होने की आवश्यकता नहीं

"भूत-प्रेत के इस प्रकार के उत्पातों से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है। ऐसी आत्माओं से हमें कष्ट हो सकता है, किन्तु सङ्कट नहीं। जिन लोगों को ऐसी आत्माओं से कष्ट भोगने पड़ते हैं, वे चाहते हैं कि किसी प्रकार हमारा इससे पीछा छूट जाय। दुःख की बात यह है कि अपना पीछा छुड़ाने के लिए कभी-कभी ऐसे लोग अनुचित उपायों का भी अवलम्बन करते हैं। यदि कोई आत्मा किसी को सताकर अपना मनोरञ्जन करती हो तो उसके छेड़ने से आदमी जितना चिढ़ेगा उतना ही वह अधिक सतायेगी। जिस भाँति जब कोई आदमी किसी बात से चिढ़ता हो तो बालक उसके सामने वही बात अधिक करते हैं और जितना अधिक वह चिढ़ता है, उतना ही अधिक बालकों का विनोद होता है इसी भाँति जो लोग भूतों के उत्पात से चिढ़ते हैं या विगड़ते हैं या गाली-गलौज देते हैं तो भूत वही बातें अधिक करता है। इसलिए इन बातों पर चिढ़ना नहीं चाहिए, वरन् उनकी उपेक्षा करनी चाहिए। यदि आप उनकी उपेक्षा करते रहेंगे तो भूत का उत्पात स्वतः बन्द हो जायगा। किन्तु कुछ ऐसी भी आत्माएँ हैं जो हमसे कुछ कहना चाहती हैं। क्योंकि हम उनकी बात नहीं सुनते. सलिए वे उत्पात कर हमारा ध्यान आकृष्ट करती हैं। उनके ऐसे उत्पातों या खटकों को सुनकर भी यदि हम उनकी बात न सुनें और न समझें तो यह हमारे शिष्टाचार और नैतिक जीवन के विपरीत होगा। दुखी आत्माओं की बात हमें सुननी ही चाहिए। उनसे मालूम करना चाहिए कि यह उत्पात क्यों करती हैं। जब वे अपना कुछ दुःख प्रकट करें तो उसे दूर करने का यत्न करना चाहिए। यदि हम अधिक कुछ न कर सकें तो उनके कष्ट के निवारणार्थ भगवान् से

प्रार्थना ही करें। ऐसी प्रार्थनाओं का बड़ा अच्छा प्रभाव होते देखा गया है। माध्यम के द्वारा यह सब पूछा जा सकता है। जब ऐसी सतानेवाली आत्माएँ अपना बड़ा नाम बतायें या अपना भयानकपन प्रकट करें तो उसकी अवगणना करनी चाहिए।"

एलन कार्डेक आगे लिखते हैं—हमारे विचार से ये घटनाएँ केवल यह प्रकट करने को होती हैं कि आत्माओं का मानव-जाति से घनिष्ठ सम्बन्ध है। ऐसी घटनाओं से अविश्वासी लोगों की भी आँखें खुल जाती हैं। इन घटनाओं के विषय में हमें सच्ची और बनावटी घटनाओं का प्रभेद करना होगा। कुछ घटनाएँ यदि भूतों द्वारा होती हैं, तो कुछ ऐसी भी होती हैं, जिनका भूतों से कोई सम्बन्ध नहीं है। बनावटी घटनाओं को छोड़कर जब सत्य घटनाओं को हम अनुभव करने लगें तो हमें उन पर विचार करना चाहिए। उदाहरण के लिए किसी ऐसे स्थान में जहाँ कोई प्राणी न हो, यदि हमारे गाल पर थप्पड़ लगे या घूँसा लगे तो समझना चाहिए कि यह किसी आत्मा का संकेत है।

इस सम्बन्ध की कहानियाँ बड़ी अतिशयोक्ति से कही जाती हैं। इसलिए सब कहानियों को ज्यों का त्यों नहीं मान लेना चाहिए। सब घटनाएँ भूतों द्वारा नहीं होतीं। ऐसा समझना अन्ध-विश्वास होगा।

घटना कैसे होती है

यह प्रश्न बार बार पूछा गया है कि ऐसे उत्पातों को करने के लिए आत्मा को माध्यम की शक्ति कहाँ से मिलती है। इसका उत्तर आत्माओं ने यह दिया है कि जहाँ ऐसी घटना होती है, वहाँ अवश्य कोई ऐसा व्यक्ति होता है जिसकी शक्ति से वे यह सब कर सकती हैं। यह उत्पात किसी शून्य स्थान में नहीं होता—होता भी है तो बहुत कम मात्रा में। ऐसा भी होता है कि माध्यम को इसका स्वयं ज्ञान नहीं होता कि भूत उसकी शक्ति का उपयोग कर यह उत्पात कर रहा है।

ऐसी घटनाएँ प्राय: नीचे दर्जे की आत्माएँ करती हैं, किन्तु इन पर भी ऊँची आत्माओं की निगरानी रहती है। ये नीचे दर्जे की आत्माएँ भी एक सीमा तक ही उत्पात मचा सकती हैं—उससे अधिक वे भी नहीं कर सकतीं। पेरिस में सन् १८६० में एक बार प्रयोग में एक आत्मा से निम्नलिखित प्रश्नोत्तर हुए थे—

(१) नोयर में जो घटनाएँ हुई हैं क्या वे सत्य थीं ? हम उन्हें सम्भव समझते हैं।

उत्तर में आत्मा ने कहा—"हाँ, वह सत्य थी। एक आत्मा वहाँ के निवासियों की माध्यम शक्ति से यह सब उत्पात करती है।"

(२) प्रश्न—क्या कोई ऐसा आदमी मकान में है, जिसकी शक्ति से वह आत्मा यह उत्पात करती है ?

उत्तर—जब ऐसा उत्पात किसी व्यक्ति के आने से हो तो समझना चाहिए कि उसी आदमी में माध्यम-शक्ति है, उसी की शक्ति से वह आत्मा उत्पात मचाती है या उसे कष्ट देती है। ऐसे व्यक्ति को कष्ट देने का अभिप्राय यह होता है कि वह वहाँ से चला जाय।

(३) प्रश्न—हम यह पूछते हैं कि जब ऐसे उत्पात होते हैं तब क्या उसी मकान के लोगों में से ही कोई ऐसा व्यक्ति है, जिसकी माध्यम-शक्ति का उपयोग आत्मा करती है ?

उत्तर—बिना माध्यम-शक्ति के ये सब उत्पात नहीं होते। एक आत्मा (भूत) एक मकान में रहती है। जब तक उस मकान में कोई नहीं आता तब तक वह निष्क्रिय रहती है, किन्तु ज्योंही कोई ऐसा व्यक्ति आ जाता है कि जिसकी शक्ति का वह उपयोग कर सके, त्योंही वह जहाँ तक सम्भव होता है उसकी शक्ति का उपयोग करती है।

प्रश्न—क्या ऐसी घटनाओं के समय उस माध्यम की उपस्थिति अनिवार्य्य है ?

उत्तर—मैंने कहा कि विना माध्यम की उपस्थिति के ऐसी घटनाएँ नहीं हो सकतीं, किन्तु मैंने यह बात व्यापक रूप से नहीं कही। कहीं-कहीं ऐसी भी घटनाएँ हुई हैं, जहाँ माध्यम नहीं था।

प्रश्न—क्या ऐसी आत्माओं का आह्वान हो सकता है? क्या उनसे प्रश्न पूछे जा सकते हैं?

उत्तर—आह्वान किया जा सकता है। किन्तु ऐसी आत्माएँ नीचे दर्जे की होती हैं, इसलिए वे बहुत कम बताती हैं।

जो आत्मा पेरिस में उत्पात मचाती थी उसे बुलाकर पूछा गया तो निम्नलिखित प्रश्नोत्तर हुए—

आत्मा ने आते ही कहा—"मुझे क्यों बुलाया? क्या आप पर कुछ पत्थर फेंकूँ? यदि पत्थर फेंकूँ तो आप सब, जो बड़े दृढ़ जान पड़ते हैं, भागते दिखेंगे।"

हमने कहा कि आप यदि हम पर पत्थर भी फेंकेंगी तो भी हम भयभीत होकर नहीं भागेंगे; हम आपसे केवल इतना ही पूछना चाहते हैं कि क्या पत्थर फेंकना आपकी शक्ति में है?

उत्तर—"आपके पास आपकी रक्षक आत्माएँ हैं, इसी लिए सम्भवतः मैं पत्थर न फेंक सकूँ।"

प्रश्न—जिस मकान के लोगों को आप सताती हैं, क्या उसी मकान में कोई ऐसा व्यक्ति रहता है जिसकी शक्ति से आप यह उत्पात मचाती हैं?

उत्तर—अवश्य मेरे पास एक बड़ा साधन है। यही कारण है कि मुझे ऐसा उत्पात करने से कोई रोक नहीं सकता। ऐसा उत्पात करने में मुझे आनन्द आता है।

प्रश्न—आपका साधन कौन है?

उत्तर—एक नौकरनी।

प्रश्न—क्या उसे इसकी ख़बर नहीं है?

उत्तर—नहीं। वही सबसे अधिक भयभीत होती है।

प्रश्न—आप यह सब उत्पात क्या किसी दुर्भाव से करती हैं ?

उत्तर—मेरा उससे कोई दुर्भाव नहीं है, किन्तु आप लोग हमारी इस बात का भी लाभ उठा लेना चाहते हैं।

प्रश्न—इससे आपका मतलब ?

उत्तर—मेरा मतलब यही कि मैं जो काम अपने मनोरञ्जन के लिए करती हूँ, उसी बात को आप परलोक-विद्या-विशारद अध्ययन कर उससे आत्माओं का अस्तित्व सिद्ध करेंगे।

प्रश्न—आपने कहा कि आपका कोई दुर्भाव नहीं है, किन्तु उस दिन आपने उस मकान की सब खिड़कियाँ तोड़ डाली थीं। क्या यह हानि नहीं है ?

उत्तर—बहुत थोड़ी हानि है।

प्रश्न—मकान में फेंकने के लिए आपके पास पत्थर आदि कहाँ से आ जाते हैं ?

उत्तर—वे साधारण हैं। उन्हें मैं सड़क से या बाग़ से उठा लेती हूँ।

प्रश्न—क्या आप कुछ बना भी लेती हैं ?

उत्तर—मैं कुछ नहीं बना सकती।

प्रश्न—मान लें आपको पत्थर न मिलते तो क्या आप बना लेतीं ?

उत्तर—इसमें कठिनाई होती है। यदि पत्थर न हुआ तो रेत या अन्य वस्तुओं का ढेला बनाकर फेंकती हूँ।

प्रश्न—अब आप यह बताइए कि पत्थर फेंकती कैसे हैं ?

उत्तर—यह समझाना कठिन है। बात यों होती है कि मैं उस नौकरनी की विद्युत् शक्ति लेकर ढेले या पत्थर एकत्र कर लेती हूँ और उसे उसी शक्ति से फेंकती हूँ।

प्रश्न—कृपा कर क्या हमें अपना परिचय देंगी ? आपको परलोकगत हुए कितना समय हुआ ?

उत्तर—बहुत समय हो गया—कोई ५० वर्ष हो गये।

प्रश्न—जब आप जीवित थीं तो क्या करती थीं ?

उत्तर—कचरा उठाती थी। लोग मुझे चिढ़ाते थे। मैं शराब पीने की बड़ी शौक़ीन थी। इसलिए अब मैं इन्हें इस घर से निकालना चाहती हूँ।

प्रश्न—आपने ये प्रश्नोत्तर अपनी इच्छा से दिये हैं या किसी के आदेश से ?

उत्तर—एक आत्मा के आदेश से ?

प्रश्न—किस आत्मा के ?

उत्तर—आपके राजा लुई के आदेश से।

वह प्रश्न इसी लिए किया गया था कि यह साधारण व्यक्ति की आत्मा ऐसे उत्तर कैसे दे रही है; इसलिए यह मालूम हुआ कि किसी दूसरी आत्मा के संकेत से यह हो रहा है।

आत्माओं द्वारा फल-फूल लाना

कहीं कहीं ऐसी भी घटनाएँ सुनी जाती हैं कि आत्माएँ फलफूल भी ले आती हैं। ऐसी घटनाएँ बाज़ीगर और जादूगर भी करके दिखाते हैं, किन्तु ऐसी घटनाएँ भी हैं जिनमें आत्माएँ फल-फूल और अन्य वस्तुएँ लाती हैं। इस सम्बन्ध में परलोक-विद्या-विशारद एलेन कार्डेक अपनी "The Medium's Book" में लिखते हैं—जब कोई आत्मा ऐसी कोई वस्तु लाती है तो उससे आत्मा का सद्भाव प्रकट होता है। वह कैसे नम्र भाव से उसे भेंट करती है। आत्माएँ यह वस्तुएँ स्वेच्छापूर्वक लाती हैं। आत्माएँ अपनी भेंट पुष्प, फल, मिठाई या रत्न से करती हैं। परन्तु यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि साधारण जादूगर भी ये सब बातें कर दिखाते हैं। इसलिए ख़ूब सावधान रहने की आवश्यकता है। (१) जिस माध्यम के द्वारा आत्माएँ ऐसी वस्तुएँ दें, वह माध्यम निःस्पृह होना चाहिए। (२) यह देखना चाहिए कि कोई चीज़ छिपाकर तो नहीं रक्खी है। माध्यम के पास तो कोई वस्तु नहीं है और (३) प्रयोग करनेवाले को परलोक-विद्या का पूरा-पूरा ज्ञान होना चाहिए। आत्माएँ अदृश्य होकर भी साकार वस्तुओं को कैसे ले आती

हैं, यह बात निम्नलिखित एक आत्मा के संदेश से स्पष्ट हो जायगी—ऐसे प्रयोगों के लिए यह आवश्यक है कि आपके साथ बहुत संवेदनाशील माध्यम होना चाहिए। उसमें दूसरे की भावना समझने की बहुत अधिक शक्ति होनी चाहिए। ऐसे माध्यमों के शरीर से एक ऐसा विद्युत-द्रव्य निकलता है जिससे वस्तु साकार हो जाती है। जो माध्यम बारीक से बारीक और धीमे से धीमे भाव को भी ग्रहण कर सकता हो वह ऐसे प्रयोगों के लिए उपयुक्त है। यदि एक माध्यम के स्थान में ३-४ या अधिक माध्यम समान शक्ति के हों तो परिणाम अधिक सुलभता से प्राप्त होंगे। ऐसे प्रयोग जब बन्द कमरे में किये जायँ तो एक से अधिक माध्यम न होना चाहिए। अविश्वासी लोगों की उपस्थिति से प्रयोग सफल नहीं होते। इन प्रयोगों के लिए माध्यम में ध्यान करने की शक्ति अधिक मात्रा में होनी चाहिए और साथ ही उसके शरीर से वह विद्युत् द्रव्य प्रचुर मात्रा में निकलना चाहिए, जिससे ये वस्तुएँ साकार हो सकती हैं। यह विद्युत्-द्रव्य केवल उन्हीं माध्यमों के शरीर से निकल सकता है, जिनकी विद्युत्-माध्यम-मशीन सर्वश्रेष्ठ है। वास्तव में इस प्रकार के चमत्कार बहुत अल्प मात्रा में देखे गये हैं। बन्द कमरे में आत्माओं द्वारा लाई हुई वस्तुएँ बहुत कम देखी गई हैं। इसका मुख्य कारण जहाँ ऐसे ऊँचे दर्जे के माध्यमों का अभाव है, वहाँ ऐसी आत्माएँ भी बहुत कम होती हैं, जो इस प्रकार के प्रयोग कर सकें। ऐसे प्रयोगों के लिए माध्यम और आत्मा के बीच प्रेम होना चाहिए। दोनों एक दूसरे के भाव को ख़ूब समझ सकते हों, तभी माध्यम के शरीर से वह विद्युत्-द्रव्य निकलकर फैल सकेगा। यह क्रिया ठीक उसी रूप से होती है, जिस भाँति कोयले में विद्युत्-किरण या लहर काम करती है। आप पूछ सकते हैं कि इस संयोग की आवश्यकता क्या है? इसका कारण यही है कि इस चमत्कार को बताने के लिए माध्यम की विद्युत्-शक्ति को बढ़ाना होगा, और जब वह शक्ति बढ़ जायगी तो उससे वह विद्युत् द्रव्य अधिक मात्रा में उत्पन्न हो सकेगा और तब आत्मा उस विद्युत्-द्रव्य का पूर्ण रूप से उपयोग कर वह चमत्कार दिखा सकेगी।

आप इस चमत्कार की कठिनाइयों को समझ सके हैं। इसी लिए मैंने कहा है कि यह चमत्कार बहुत कम देखा जाता है।

एलन कार्डेक आगे लिखते हैं कि एक बार हमारे सामने ऐसा प्रयोग किया गया तो हमने निम्नलिखित प्रश्न किये,—

प्रश्न—क्या आप कृपा कर हमें यह बतायेंगे कि जब आप ये वस्तुएँ हमारे पास लाते हैं तो माध्यम सोता क्यों रहता है ?

उत्तर—यह माध्यम का अपना स्वभाव है। दूसरे ऐसे माध्यम हो सकते हैं जिनकी शक्ति से ऐसी ही चीज़ मैं ला सकता हूँ, जो जागते हों।

प्रश्न—आपको ये वस्तुएँ लाने में देर क्यों लगी और आप माध्यम से यह क्यों पूछते हैं कि जो कहो वह लाऊँ ?

उत्तर—जिस विद्युत्-द्रव्य से मैं ये वस्तुएँ ला सकता हूँ, उसे बनने में देर लगती है। माध्यम की इच्छा इसलिए पूछता हूँ कि दूसरे लोगों का भी मनोरञ्जन हो।

प्रश्न—क्या ये वस्तुएँ किसी विशेष प्रकार के माध्यम के द्वारा ही प्राप्त हो सकती या अन्य माध्यम के साथ भी अधिक सरलता से और बिना विलम्ब के हो सकती हैं ?

उत्तर—यह माध्यम की शक्ति पर अवलम्बित है और जब तक आत्मा और माध्यम में पारस्परिक गहरा सम्बन्ध न हो तब तक ऐसे प्रयोग सफल नहीं हो सकते।

प्रश्न—आपको फूल कहाँ से मिलते हैं और यह मिठाई आप कहाँ से लाये ?

उत्तर—फूल मैंने बाग़ से ले लिये हैं। जो मुझे पसन्द आये उन्हें तोड़ लिया।

प्रश्न—और यह मिठाई क्या किसी हलवाई के यहाँ से उठा लाये हैं ?

उत्तर—मेरी जहाँ से इच्छा होती है वहाँ से ले आता हूँ, किन्तु दूकानदार को पता नहीं लगता। मैं उसकी दूकान से मिठाई उठाता हूँ तो दूसरी मिठाई रख देता हूँ।

प्रश्न—यह अँगूठी तो क़ीमती है। यह आप कहाँ से लाये? जिसकी लाये होंगे, वह तो हाय करके रह गया होगा।

उत्तर—मैं ऐसे स्थान से लाया हूँ, जहाँ किसी की कोई हानि नहीं होती।

प्रश्न—क्या आप दूसरे लोक से भी फूल ला सकते हैं?

उत्तर—नहीं, मैं नहीं ला सकता।

प्रश्न—क्या आप किसी दूसरे देश के फूल ला सकते हैं?

उत्तर—यदि वह देश पृथ्वी पर है तो मैं ला सकता हूँ।

प्रश्न—जो वस्तुएँ आप लाये हैं क्या उन्हें वापस कर सकते हैं?

उत्तर—उतनी ही सरलता से जितनी सरलता से मैं लाया हूँ।

प्रश्न—क्या ऐसी वस्तु लाने में आपको कोई कष्ट होता है या आपको थकान होती है?

उत्तर—जब हमें आज्ञा होती है तब इस प्रकार की वस्तु लाने में हमें कोई कष्ट नहीं होता; किन्तु जब हम बिना आज्ञा के ऐसा कोई प्रयत्न करते हैं तो हमें बड़ा कष्ट होता है।

प्रश्न—आपको क्या-क्या कठिनाइयाँ उपस्थित होती हैं?

उत्तर—परिस्थिति हमारे विपरीत होती है और हमारे कार्य में बाधा आती है।

प्रश्न—आप यह फूल कैसे लाते हैं—क्या हाथ में पकड़कर लाते हैं?

उत्तर—नहीं, हम उन पर अपना आवरण डाल लेते हैं।

प्रश्न—क्या आप उसी सुविधा से कोई वज़नदार चीज़ ला सकते हैं? उदाहरण के लिए मन भर की या दो मन की चीज़ ला सकते हैं?

उत्तर—वज़न का प्रश्न हमारे लिए कुछ नहीं है। हम फूल इसलिए लाते हैं कि हमें उनसे प्रेम है।

प्रश्न—क्या आत्माएँ स्वयं ये वस्तुएँ बना लेती हैं?

उत्तर—मेरे सम्बन्ध में यह बात नहीं है। केवल ऊँची आत्माएँ ही ऐसा कर सकती हैं।

प्रश्न—कमरा बन्द था, आप यह साकार वस्तु ले कैसे आये ?

उत्तर—मैं अपने आवरण में छिपाकर ले आया हूँ।

यह प्रश्न ज़रा पेचीदा है। बात यों है कि आत्माएँ किसी वस्तु को पहले निराकार कर लेती हैं, फिर उसे साकार करती हैं। जिस भाँति वह स्वयं विद्युत्-द्रव्य से निराकार होकर भी साकार हो जाती है उसी भाँति वे उसी विद्युत्-द्रव्य से वस्तु को निराकार कर लेती हैं और निराकार से साकार भी कर लेती हैं। अभी इस विषय में अधिक प्रकाश नहीं डाला गया है।

पुस्तक समाप्त करने के पूर्व हम अपने पाठकों से यह कहना आवश्यक समझते हैं कि युरोप के विद्वान् इस विद्या की खोज में अपने जीवन का बहुमूल्य समय दे रहे हैं। हमारे देश में इस विद्या को विधिवत् अध्ययन करनेवाले सर्वप्रथम बहुत कम हैं और जो हैं, भी वे अपना अनुराग बहुत समय तक स्थिर नहीं रखते। कोई भी विज्ञान एक या दो बार के प्रयोगों से सिद्ध नहीं होता। इसके लिए बड़े धैर्य की आवश्यकता है। जिन लोगों ने ५०-५० वर्ष या इससे भी अधिक समय तक इस विज्ञान का निरन्तर अध्ययन और प्रयोग किया है उनके सामने हमारे दो-चार प्रयोगों के ज्ञान की क्या क़ीमत हो सकती है ! हम उनसे आगे कैसे बढ़ सकते हैं ! जिस तपस्वी, ने ५० वर्ष तक तपस्या की हो, उसके सामने एक साधारण व्यक्ति की क्या क़ीमत हो सकती है जो दो-चार दिन या वर्ष-छः महीने तपस्या कर चुका हो ! हम चाहते हैं कि हमारे देश में भी उसी लगन से परलोक-विज्ञान का अनुसन्धान हो, जिस भाँति युरोप और इतर देशों में हो रहा है। हमारे यहाँ भी १०-२० परलोक विद्या के ऐसे विशारद हों जो परलोक के सम्बन्ध में उसी भाँति अधिकारपूर्वक बोल सकें—लिख सकें, जिस भाँति एलन कार्डेक या सर ओलीवर लाज या सर कोनन डाइल थे। यह अधिकार सरलता से प्राप्त नहीं हो सकता। इसके लिए वर्षों प्रयोग करने होंगे—सैकड़ों पुस्तकें पढ़नी होंगी, तब केवल ऐसे लोग अधिकार प्राप्त कर सकेंगे जो उच्च कोटि के विद्वान् हैं और जो अपने भावों को ओजस्वी भाषा में प्रकट

कर सकते हों। साधारण व्यक्ति यदि उद्योग करें भी तो उन्हें यह ऊँचा पद प्राप्त नहीं हो सकता। इसलिए हम एक बार फिर अपने देश के विज्ञानविशारदों से अपील करते हैं और सच्चे हृदय से यह अभिलाषा करते हैं कि वे इस क्षेत्र में आकर इसके चमत्कार देखें और संसार को दिखावें। यदि हमारी पुस्तक पढ़ने के बाद दो-चार या दस-पन्द्रह व्यक्तियों को भी इसकी लगन लग जायेगी तो हम अपने परिश्रम को सफल समझेंगे।
